अक्टूबर 2019 | अंक 19

उपलब्धि

"हिंदी केवल भाषा का ही प्रचार नहीं करती, वरन संस्कृति, सभ्यता और भारतीयता की अग्रदूत है।"

हिंदी विभाग, सिंधिया स्कूल, दुर्ग, ग्वालियर 474008 (मध्यप्रदेश)

हिन्दी-विभाग

बाएँ से:- श्री गणपत स्वरूप पाठक, श्री जगदीश जोशी, श्रीमती अहिल्या शिंदे, श्री धीरेन्द्र शर्मा (डीन ऑफ एक्टीविटीज), डॉ. माधव देव सारस्वत (प्राचार्य), सुश्री स्मिता चतुर्वेदी (वी.पी.पी.सी.), श्री मनोज कुमार मिश्रा (विभागाध्यक्ष), श्रीमती रक्षा सीरिया, श्री सत्यकाम तोमर

हिन्दी-विभाग

बैठे हुए (बाएँ से) - अदिति जोशी, जगदीश जोशी, श्री धीरेन्द्र शर्मा (डीन ऑफ कोकरिकुलर एक्टीविटीज), डॉ. माधव देव सारस्वत (प्राचार्य), सुश्री स्मिता चतुर्वेदी (वी.पी.पी.सी.), ऋत्विक कत्याल, अर्थव कर्वा

खड़े हुए (बाएं से) - गौरव मेहरा, नमन मित्तल, प्रशांत अग्रवाल, हर्ष बंसल, ध्रुव झिरीवाल, आयूष गोयल

शुभकामना-संदेश

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि हिन्दी विभाग की वार्षिक पत्रिका 'उपलब्धि' का 19वाँ अंक ऐसे अवसर पर प्रकाशित होने जा रहा है जहाँ एक ओर विद्यालय अपना 122वाँ गौरवमयी स्थापना दिवस मना रहा है तो वहीं दूसरी ओर देश के प्रतिष्ठित आवासीय विद्यालयों की पंक्ति में पहले पायदान पर खड़ा है। केवल किताबी ज्ञान देना हमारा उद्देश्य नहीं, हमारा उद्देश्य है छात्रों को उन साधनों से युक्त करना जिनसे विद्यार्थी जिज्ञासु बने। हम उनमें दृढ़ता के साथ उड़ान भरने के लिए मजबूत पंख प्रदान करते है, ताकि वे 'स्वमेव समर्पित सेवा' के संदेश को पूरी दुनिया में प्रसारित कर सकें।

'उपलब्धि' पत्रिका को अपनी रचनाओं से पुष्पित-पल्लवित कर विद्यार्थियों ने यह सिद्ध किया है कि हिंदी का प्रयोग निरंतर बढ़ रहा है। मुझे गुरुदेव की वे पंक्तियाँ याद हैं जिनमें उन्होंने कहा था, ''हम चाहते हैं कि सारी प्रांतीय बोलियाँ जिनमें सुंदर साहित्य की सृष्टि हुई है, अपने-अपने घर में रानी बनकर रहें और आधुनिक भाषाओं के हार की मध्यमणि हिंदी 'भारत-भारती' होकर विराजती रहे।'' इस सूक्ति को चरितार्थ करती हुई हिंदी के इन बढ़ते कदमों की आहट हमें इन युवा रचनाकारों की लेखनी में स्पष्ट दिखाई देती है। मेरा दृढ़ विश्वास है कि मौलिक अभिव्यक्ति के लिए पूरी स्वतंत्रता होनी चाहिए तभी वे अपने मन की बात प्रकट कर सकेंगे।

'उपलब्धि' पत्रिका की यह अपनी विशेषता है कि इसमें छात्रों को मौलिक रचनाएँ लिखने हेतु प्रेरित किया जाता है जिससे उनकी रचनात्मक प्रतिभा उभर कर सामने आ सके। मेरा सहज विश्वास है कि इस पत्रिका के माध्यम से भविष्य में कुछ अच्छे पत्रकार, उपन्यासकार, लेखक व कवि के रूप में राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर उभर कर अपने विद्यालय का नाम रोशन करेंगे।

पत्रिका को अपने शब्द रंगों से आलोकित करने के लिए सभी रचनाकारों और सहयोगी अध्यापकों को बधाई देते हुए इसके सफल प्रकाशन हेतु शुभकामना प्रेषित करता हूँ।

शुभकामनाओं सहित

डॉ. माधव देव सारस्वत

प्राचार्य

द सिंधिया स्कूल, दुर्ग, ग्वालियर

शुभकामना-संदेश

मुझे यह जानकर अत्यधिक प्रसन्नता हो रही है कि हिंदी विभाग की वार्षिक पत्रिका 'उपलब्धि' अपने प्रकाशन के 19वें वर्ष का सफर सफलतापूर्वक तय करने जा रही है। इसके लिए संपादक-मंडल को मेरी ओर से बधाई।

सह सर्वविदित है कि प्रत्येक विद्यार्थी के अन्दर अपार प्रतिभाएँ छिपी रहती हैं और आज आवश्यकता है उसे निखारने के लिए एक सशक्त माध्यम की। हमारा विद्यालय एक ऐसा विद्यालय है जो शिक्षा के साथ-साथ खेल-कूद, पाठ्य-सहगामी गतिविधियों, राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर समाज सेवा के कार्य करते हुए निरंतर उच्चतम मानक स्थापित कर रहा है। हम न केवल देश को आदर्श नागरिक प्रदान कर रहे हैं बल्कि विभिन्न क्षेत्रों में राष्ट्र सेवा हेतु श्रेष्ठ प्रतिभाएँ भी समर्पित कर रहें है। मेरा यह विश्वास है कि जीवन के सभी पक्षों के उद्देश्य प्राप्ति हेतु विद्यार्थियों में न केवल ज्ञान बल्कि अच्छे संस्कारों का होना भी अनिवार्य है। संस्कारों के साथ-साथ प्रत्येक विद्यार्थी को अपने विचार प्रकट करने के लिए पूरी स्वतंत्रता होनी चाहिए तभी वे अपनी लेखन क्षमता को विकसित कर पाएँगे।

'उपलब्धि' पत्रिका के माध्यम से हमारे छात्रों की सांस्कृतिक अस्मिता, रचनात्मक एवं सृजनात्मक कौशलों की अभिव्यक्ति और उनकी उपलब्धियों को प्रदर्शित करने का अवसर प्रदान किया गया है। हमारा लक्ष्य है कि मानवीय अनुभूतियों को जागृत करें, रचनात्मक क्षमता को विकसित करें।

मैं उपलब्धि के सफल प्रकाशन की कामना करता हूँ।

शुभकामनाओं सहित

धीरेन्द्र शर्मा
(डीन ऑफ कोकरिकुलर एक्टीविटीज)
द सिंधिया स्कूल, दुर्ग, ग्वालियर

शुभकामना-संदेश

यह जानकर अपार हर्ष हुआ कि प्रत्येक वर्ष की भाँति इस वर्ष भी हिन्दी विभाग की वार्षिक पत्रिका 'उपलब्धि' विद्यालय के स्थापना-दिवस के अवसर पर प्रकाशित होने जा रही है, इसके लिए संपादक-मंडल को हार्दिक बधाई!! मेरा दृढ़ विश्वास है कि यह पत्रिका न केवल हिन्दी के उच्च मानदंडों को नए आयाम देगी बल्कि नैतिक मूल्यों के पतन के इस दौर में विद्यार्थियों को भी दिशा देने में सक्षम सिद्ध होगी।

किसी भी राष्ट्र के भाग्य का निर्धारण उस राष्ट्र में दी जाने वाली शिक्षा की गुणवत्ता पर निर्भर है। आज के तेजी से बदलते परिवेश में हमें शैक्षणिक उत्कृष्टता सुनिश्चित करने की ज़रूरत है।

बच्चों की प्रतिभा के निखार हेतु व उसकी रचनात्मक क्षमता में वृद्धि करने के लिए सतत प्रयत्नशील रहने की आवश्यकता है ताकि वह ज्ञान प्राप्त करने के साथ सहज आनंद की अनुभूति प्राप्त कर सकें। बदलते परिवेश में नवीन कौशल एवं क्षमताओं की अभिवृद्धि हेतु छात्रों को जीवन भर अध्ययनशील रहने की आवश्यकता है। उन्हें अच्छा संप्रेषक, अच्छा लेखक होना भी ज़रूरी है जिससे कि वे अपने आस-पास के लोगों के साथ सौहार्दपूर्ण संबंध स्थापित कर सकें और आलोचनात्मक एवं रचनात्मक दृष्टि से सोच सकें।

'उपलब्धि' के माध्यम से हमारे छात्रों की रचनात्मक एवं सृजनात्मक कौशलों की अभिव्यक्ति और उनकी उपलब्धियों को प्रदर्शित करने का अवसर प्रदान किया गया है।

विद्यालय के उभरते रचनाकारों की रचनाओं के साथ-साथ पूर्व छात्रों की रचनाओं से परिचय करवाने एवं उनसे जुड़ी जानकारी देने में 'टीम उपलब्धि' का प्रयास सराहनीय है। 'उपलब्धि' नि:संदेह दिन प्रतिदिन ऊँचाईयों के नए आयाम स्थापित करेगी ऐसा मेरा विश्वास है।

शुभकामनाओं सहित....

सुश्री स्मिता चतुर्वेदी
उप-प्राचार्या (पैस्टोरल केयर)
द सिंधिया स्कूल, दुर्ग, ग्वालियर

संपादक की कलम से...

हिंदी-विभाग की वार्षिक पत्रिका 'उपलब्धि' का यह अंक आप सभी के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अपार हर्ष का अनुभव हो रहा है। विद्यार्थियों की दिन-प्रतिदिन इस पत्रिका के प्रति बढ़ती रुचि और विभिन्न माध्यमों से छात्रों एवं पूर्व छात्रों का बढ़ता हुआ योगदान यह दर्शाता है कि इस पत्रिका ने विद्यार्थियों के बीच में अपना लोकप्रिय स्थान बना लिया है।

हम सभी जानते है कि शिक्षा किसी भी विकसित समाज का सबसे महत्वपूर्ण घटक है। यह एक राष्ट्र के विकास और समृद्धि के लिए सबसे महत्वपूर्ण तत्व है। ज्ञान से बढ़कर कोई धन नहीं है, अज्ञानता से बढ़कर कोई गरीबी नहीं है एवं संस्कृति से बढ़कर कोई विरासत नहीं है। आप किसी को सिखा नहीं सकते जब तक कि वह सीखना नहीं चाहता है। इतिहास साक्षी है कि कोई भी व्यक्ति आज तक इस बात के लिए सम्मानित नहीं किया गया है कि उसने क्या प्राप्त किया बल्कि इसके लिए सम्मानित किया गया है कि उसने समाज को क्या दिया है।

आज समाज और देश के सामने सबसे बड़ा प्रश्न है, शिक्षा किसलिए दी जाए ? विभिन्न मनोवैज्ञानिकों एवं शिक्षा-विशारदों ने शिक्षा के विभिन्न उद्देश्य बतलाए हैं। किसी विद्वान का मत है कि ''विद्या के लिए विद्या है'', तो दूसरे विद्वान का कथन है कि आजीविका या व्यवस्था के लिए तैयार करना ही शिक्षा का उद्देश्य है। कई विद्वानों का मत है कि मनुष्य का शारीरिक, मानसिक, नैतिक तथा अन्य सभी पहलुओं से विकास करना ही शिक्षा का उद्देश्य है। कुछ लोग सच्चरित-निर्माण को शिक्षा का उद्देश्य मानते हैं। यह सभी उद्देश्य मिलते-जुलते हैं। वैदिक ऋषियों के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य है मानव का सर्वांगीण विकास अर्थात् मानव जीवन का जो उद्देश्य है, उस उद्देश्य तक पहुँचना ही शिक्षा का उद्देश्य होना चाहिए।

'उपलब्धि' का उद्देश्य छात्रों की रचनात्मक प्रतिभा का विकास एवं उनके अंदर छुपी हुई प्रतिभाओं को विकसित करना है। अभिव्यक्ति के माध्यम से छात्रों में एक नया जोश पैदा कर उनके अंदर छुपे हुए कलाकार को बाहर निकालना है। इस पत्रिका के माध्यम से उन्हें अपनी प्रतिभा को प्रदर्शित करने का मौका दिया गया है।

'उपलब्धि' की सफलता का श्रेय विद्यालय के प्राचार्य डॉ. माधव देव सारस्वत को जाता है जिनका मार्गदर्शन हमेशा ही हमारे लिए वन्दनीय रहा है।

मैं कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ अपने 'डीन ऑफ़ को-करिकुलर एक्टीविटीज' श्री धीरेन्द्र शर्मा जी का, विभागाध्यक्ष श्री मनोज कुमार मिश्रा का, वरिष्ठ हिंदी अध्यापिका श्रीमती अहिल्या शिंदे, श्रीमती रक्षा सीरिया का, श्री सत्यकाम तोमर का, श्री गणपत स्वरूप पाठक के साथ-साथ विद्यालय के सभी शिक्षकों का, जिन्होंने छात्रों में हिंदी के प्रति रुचि बनाए रखने के साथ प्रस्तुत अंक के सफल प्रकाशन में अपना सहयोग प्रदान किया।

गैलैक्सी प्रिन्टर्स के तकनीकी सहयोग के लिए संपादक-मंडल आभार प्रकट करता है।

जगदीश जोशी
हिंदी विभाग

संरक्षक
डॉ. माधव देव सारस्वत
(प्राचार्य)

विभागाध्यक्ष
श्री मनोज कुमार मिश्रा

संपादक
श्री जगदीश जोशी

संपादक-मंडल
ऋत्विक कत्याल (मुख्य संपादक),
अर्थव करवा, प्रशांत अग्रवाल (सह संपादक)

सदस्य
आरूष अतुल प्रभु, शुभ गर्ग, गर्वित ठाकुर, अदिति जोशी,
ध्रुव झीरिवाल, गौरव मेहरा, प्रणव वाधवा, नमन मित्तल

संवाददाता
हर्ष बंसल, आयूष गोयल

तकनीकी सहयोग
गैलैक्सी प्रिन्टर्स

अनुक्रम

1. मातृभूमि के नाम एक पत्र
2. दूसरे की सेवा से बढ़कर कोई धर्म नहीं.....
3. पेड़ लगाओ-जीवन बचाओ
4. जल संरक्षण
5. पानी की बचत: आज की ज़रुरत
6. लद्दाख अंतर्राष्ट्रीय सर्विस प्रोजेक्ट.... एक यादगार सफ़र
7. मेरा पहला रेल सफर
8. यात्रा-वृतांत
9. मेरी रानीखेत की यात्रा....
10. झीलों की नगरी एक यादगार सफर
11. जब मैं मेले में खो गया....
12. मोहक कर देने वाला सौन्दर्य.... लेह-लद्दाख
13. राजनीति का समाज से कोई सरोकार नहीं ?
14. संगीत सम्राट तानसेन
15. हमें बीमार कर रही है 'पबजी' की लत
16. हम सांस्कृतिक विभाजन की ओर बढ़ रहे हैं ?
17. 'कैसे करेंगे' नाटक का मंचन
18. राष्ट्रीय खेल दिवस: शिक्षकों और छात्रों के मध्य खेला गया मैत्री मैच
19. महाराजा माधवराव सिंधिया स्मृति अंतर्विद्यालयीन वाद-विवाद प्रतियोगिता
20. अंतर्सदनीय हिंदी वाक्-पटुता प्रतियोगिता (वरिष्ठ वर्ग) 2019-20
21. अंतर्सदनीय हिंदी वाद-विवाद प्रतियोगिता (वरिष्ठ वर्ग) 2019-20
22. अंतर्सदनीय हिंदी वाक्-पटुता प्रतियोगिता (कनिष्ठ वर्ग) 2018-19
23. अंतर्सदनीय हिंदी वाद-विवाद प्रतियोगिता (मध्य वर्ग) 2019-20
24. अंतर्सदनीय हिंदी वाक्-पटुता प्रतियोगिता (कनिष्ठ वर्ग) 2019-20
25. सुलेख-प्रतियोगिता
26. आत्म-चिंतन का स्थल है हमारा अस्ताचल......
27. सांस्कृतिक संध्या.....
28. राजनीति आज सामाजिक सरोकार से दूर होती जा रही हैं ?
29. मेरे विद्यालय में शिक्षक-दिवस
30. बच्चों का डाँटना कितना ज़रूरी.....
31. भारत के प्रगति की ओर बढ़ते कदम
32. वो स्कूल के दिन आज भी याद है मुझे
33. क्या हम अपने कर्म अनुसार फल भोगते हैं ?
34. एक मुलाकात दर्शील सफारी के साथ....
35. मेरा पहला नुक्कड़ नाटक
36. बाल गोविंद भगत का नाट्य रूपांतरण
37. स्क्वाश मेरा जूनून....
38. सिंहासन का खेल: ज़िन्दगी का सबक
39. देश की नई प्रमुख समस्या
40. कृत्रिम बुद्धिमता: कितना लाभ कितनी हानि
41. मेरे विचार में गाँधी
42. विद्यालय के छात्रों का गाँव-भ्रमण
43. किमर्थं संस्कृतम्......
44. जीना इसी का नाम है
45. सीढ़िया...
46. चुनाव
47. मुझे मेरे बचपन में रहने दो....
48. हमारा सिंधिया विद्यालय है
49. हाथी राजा
50. राजनीति के अंगूर
51. सेंट जोन्स अखिल भारतीय अंतर्विद्यालयीय द्विभाषीय वाद-विवाद प्रतियोगिता
52. ताराचंद निबंध प्रतियोगिता
53. वसुधैव कुटुंबकम्
54. वार्षिक हिंदी नाटक - 'तुगलक' का मंचन
55. मैत्री मैच में फिर छात्र रहे विजयी.....
56. विद्यालय में स्वतंत्रता-दिवस का आयोजन

मातृभूमि के नाम एक पत्र

प्रिय मातृभूमि,

क्या लिखूँ ? किसे लिखूँ ? सब तो ऑनलाइन है। सबसे स्काइप पर आमने-सामने बात हो रही है फिर पत्रावली जिज्ञासा और उत्सुकता तथा खुशी कैसे पाई जा सकती है। उधेड़-बुन मैं बैठी थी कि याद आया ''जननी, जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरियसी'' क्यों न आज अपनी माँ-सी अर्थात माँ जैसी (मातृभूमि) के साथ अपनी भावनाओं को बाँटा जाए और इस पत्र को धरोहर के रूप में रखा जाए। वैसे तो पत्रों का ज़माना समाप्त हो गया किन्तु भला हो डाक विभाग तथा स्कूलों का जिन्होंने पत्र-वितरण तथा पत्र-लेखन की कला को आज भी जिंदा रखा है। क्या लिखूँ? यही सोचकर लेखनी उठाई और अपनी माँ-सी को पत्र लिखने लगी। मेरे पास शब्द नहीं है आपके लिए किन्तु मैं जानती हूँ, माँ और मातृभूमि अपने बच्चों को कितना प्यार करती है तथा उनकी गलतियों को क्षमा करती है। अपनी बच्ची समझकर कृपया मेरी भी गलतियों को अनदेखा कर दो। बचपन में मातृभूमि को माँ का दर्जा दिए जाने को समझ न सकी किन्तु आज जब तुम्हारी गोद में पलकर बड़ी हुई, घुटनों के बल चलकर, चलना सीखा, आपका दिया अन्न खाया, आपका दिया पानी पिया, तो समझते देर न लगी कि माँ और मातृभूमि क्यों एक बराबर है। आज यह समझ में आया कि मेरी मातृभूमि इतनी महान है कि स्वर्ग और मोक्ष को प्राप्त देवता भी मानव के रूप में मेरी मातृभूमि पर जन्म लेना चाहते हैं।

जिसकी गोद में अपना घर बसाते हैं, जिसके सहारे हम अपनी जिंदगी खुशी से जीते हैं उस माँ (मातृभूमि) जैसा और कोई नहीं। माँ, तुम मेरा और मेरी ज़िंदगी का एक अभिन्न अंग हो। तुम शहीदों के खून-पसीने, मिट्टी धरा की और माँ-सी ममता का एक सिमटा हुआ रूप हो। माँ का प्यार, दुलार व वात्सल्य अतुलनीय है। जिस प्रकार माता बच्चों को जन्म देती है तथा उनका लालन-पालन करती है, अनेक कष्टों को सहते हुए भी बालक की खुशी के लिए अपने सुखों का त्याग करने में भी नहीं चूकती उसी प्रकार मेरी मातृभूमि अनेक प्राकृतिक आपदाओं को झेलती है चाहे वह हिमालय के रूप में हो या पश्चिमी घाटों के रूप में।

''जो भरा नहीं है भावों से, बहती जिसमें रसधार नहीं।
वह हृदय नहीं वह पत्थर है, जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं।''

अत: किसी कवि ने सच ही कहा है कि वे लोग जिन्हें अपने देश तथा अपनी मातृभूमि से प्यार नहीं है उनमें सच्ची मानवीय संवेदनाएँ नहीं हो सकती। माँ, तुम्हारा गुणगान तीनों लोकों में होता आ रहा है। तुम प्रत्येक रूप में पूजनीय हो।

पुत्र भले एक बार माँ को भुला दे, उससे संबंध तोड़ दें लेकिन माँ कभी भी अपने पुत्र को नहीं भूल सकती। ठीक इसी प्रकार माँ सी मातृभूमि का अनाज खाकर हमें शक्ति मिलती है। जन्मभूमि की संस्कृति और परंपरा ही हमारे चरित्र का निर्माण करती है।

तुम्हारे लिए हुए हर युद्ध ने तुम्हें काफी पीड़ा दी होगी। मैं जानती हूँ कि एक माँ को अपने ही बच्चों की मौत आँखों के सामने देखने पर कितना कष्ट होता होगा। वह भी तब, जब उसे पता है कि वह लाचार है, कुछ नहीं कर सकती। पर माँ, लोग एक बच्चे को खोने पर अपने आप को संभाल नहीं पाते हैं लेकिन मुझे जानना है कि तुम इतनी सहन करने की शक्ति कहाँ से लाती है। कभी-कभी तो मुझे लगता है कि तुम नदियों के रूप में अपना कष्ट प्रकट करती हो किन्तु उसमें भी तुम हमारा भला कर जाती हो। हमारे देश में ऐसे अनेक सपूतों के नाम इतिहास के पन्नों में अंकित है जिन्होंने तुम्हारी आन, बान और शान के लिए अपनी जान हँसते-हँसते कुर्बान कर दी। आज भी उन कथाओं को सुनकर युवाओं में देशप्रेम की भावना जागृत हो जाती है। जन्मभूमि के प्रेम का ही तो परिणाम था कि महाराणा प्रताप ने अकबर से युद्ध में हारने के बावजूद उसकी अधीनता स्वीकार नहीं की और वन में रहने को तैयार हो गए। दूसरी ओर माँ, हमें यह भी बताया गया है कि बच्चों को एक पल में सीधा कर देती है उसी प्रकार तुम्हारी एक सजा हमें हमारे कर्तव्य की याद दिला देगी।

''सोने की चिड़िया'' कहे जाने वाले देश को आज तुम्हारी सख्त ज़रुरत है। मैं जानती हूँ कि तुम आस-पास हो लेकिन कृपया सामने आकर हमें अपना रूप तो दिखा दो। जननी तथा जन्मभूमि दोनों ही वंदनीय है। दोनों ही अपने -अपने रूपों में पुत्र पर ममता तथा सब कुछ न्यौछावर कर देती हैं। हम कहीं न कहीं तुम्हारी रक्षा और सम्मान करने में चूक गए है। इतनी सुंदर गोद सजाने के बावजूद कई लोग आज भी बाहर की दुनिया में अपना घर बसाना पसंद करते हैं। लालच तो जैसे 'होलसेल' में खरीदा हो,

पैसों के लालच ने देश में उथल-पुथल मचा रखी है। माँ! अमीरी की परिभाषा अब सिर्फ पैसों तक सीमित हो गई है, मैंने कभी किसी को यह बोलते हुए नहीं सुना कि वह संस्कृति सभ्यता आदि से अमीर बना है। माँ! तुमने हमें फूलों की तरह पाला है इसलिए सब हमें अच्छे लगते हैं और अपने लोगों के प्रति प्रेम उमड़कर आता है।

यह दुनिया तुम्हारी बताई गई दुनिया से काफी अलग है। मैं यह नहीं कह रही हूँ कि यहाँ चीजों की कमी है लेकिन माँ, तुम्हारे बिना आज भी अकेलापन महसूस होता है, पूरा सा नहीं लगता, कमी काफी खलती है। इस पत्र को लिखने का मक़सद तब तक पूरा नहीं होगा, जब तक आप हमें अपने दर्शन नहीं करवाओगी। कृपया आकर अपने जादू से इस दुनिया का देखने का नज़रिया बदल दो। कई कवियों तथा लेखकों ने तुम्हारे बारे में कई बातें कहीं हैं, मुझे उन बातों का असली मतलब आज समझ में आया है।

देश में कई ऐसे लोग भी हुए हैं जिन्होंने तुम्हारे साथ गद्दारी की और अपनी ही मातृभूमि को कलंकित किया। मुझे ऐसे लोगों के बारे में बात करने पर शर्म आती है।

माँ, हम आज़ाद तो ज़रूर हो गए, लेकिन आज भी कहीं न कहीं भुखमरी, दंगे, बेराजगारी आदि गंभीर समस्याओं से जूझ रहे हैं। मैं सोचती हूँ कि जब हम सब एक माँ के बच्चे हैं तो हम अपने आप को दूसरे से ज्यादा श्रेष्ठ क्यों सिद्ध करने पर तुले हुए हैं? एक तरफ हम भाईचारे की बात करते हैं और वहीं दूसरी तरफ उन्हीं भाईयों की जान ली जा रही है। आज भी भगवान का नाम लिए कोई कार्य नहीं होता। यहाँ तक कि किसी की जान भी भगवान के नाम पर ली जाती है। माँ, पाकिस्तान आज भी हमसे नाराज है। 1947 में हुए बँटवारे में ज़मीन बँटी, लोग बँटे, धर्म बँटे, संस्कृति बँटी, लेकिन माँ, तुम्हारे प्यार को कोई न बाँट पाया। मेरे लिए पाकिस्तान-भारत एक सम्मान है क्योंकि तुम्हारा वास दोनों ही ज़मीनों पर है। काश! मैं सब को यह बात समझा सकती और तुम्हारी खुशी के लिए कुछ कर सकती। समस्याएँ कई हैं लेकिन सुझाव एक है- लोगों की एकजुटता। महिलाओं को सम्मान तो मिला है लेकिन आज भी कई लोगों के दिमाग में कुरीतियों की धारा बह रही है। कब हम सब इस मोह और माया के जाल से बाहर निकल, सबको एक नज़रिए से देखना सीखेंगे, माँ, अपनी प्यारी लोरी से तुम सबको जगा दो, सबकी आँखें खोल दो।

माँ, तुम्हारा प्यार बिलकुल उस माँ समान है जो 'एक्सीडेंट' में मरने के बाद भी अपने बच्ची की सलामती देखने यमराज से चंद मिनट माँगकर आती है। पेड़-पौधे, नदियाँ, पहाड़, वन और न जाने क्या-क्या तुम्हारी दी गई सुविधाएँ हैं। जिन्हें माँ, कुछ लोग नष्ट करते जा रहे हैं। मैं शिकायत नहीं कर रही हूँ लेकिन तुम्हें इतना बताना चाहती हूँ कि अगर ऐसा ही चलता रहा तो तुम्हें धरती पर उतरना ही पड़ेगा और हम सब को सही राह दिखानी ही होगी।

क्या कभी हम तुम्हारे इन ऋणों से मुक्त हो पाएँगे? नहीं, मुझे ऐसा नहीं लगता। हम सब मिलकर भी यह एहसान कभी नहीं चुका पाएँगे। यहाँ तक कि जब अपनी माँ भी किसी बच्चे को त्याग देती है तो माँ आप अपनी गोद में हमेशा-हमेशा के लिए अपने बच्चे को सुला लेती हैं। हमारी आने वाली पीढ़ियों को तुम्हारी महानता के किस्से सुनाना मेरा पहला कर्तव्य होगा।

इसलिए माँ तुझे सलाम!!

तुम्हारी बेटी,

अदिति जोशी
कक्षा-10 डी (जयाजी सदन)

दूसरे की सेवा से बढ़कर कोई धर्म नहीं...

सिंधिया स्कूल के छात्र सदैव ही उपरोक्त धारणा के पक्षधर रहे हैं और समाज सेवा को उन्होंने हमेशा सर्वोपरि माना। इसी धारणा को आगे बढ़ाने के लिए दिनांक 31 मार्च 2019 को देश के कई प्रतिष्ठित विद्यालयों के 43 विद्यार्थियों और 6 शिक्षकों का एक दल दून स्कूल द्वारा संचालित 'राउंड स्क्वायर सर्विस प्रोजेक्ट' के अंतर्गत जनपद पौड़ी गढ़वाल के डूंगरी गाँव पहुँचा। हमारे विद्यालय से 6 छात्रों ने इस समाज सेवा के पुण्य-कार्य में भाग लिया।

पहाड़ में पलायन की समस्या को हमने सुना तो था लेकिन इस बार भली-भाँति परिचित हुए। गाँव के लोगों से मिलकर इस बात को भी हमने बखूबी जाना कि उत्तराखंड का नारा बुलंद करने वाले लोगों को विकास के नाम पर पलायन मिला। पहाड़ की इसी पीड़ा को सुनकर मेरी आँखें भर आईं। हमने प्रत्येक घर में जाकर वहाँ के लोगों की समस्याएँ सुनीं। पहाड़ की महिलाओं की समस्याएँ भी पहाड़ जैसी ही थीं।

खेती-किसानी तक सारा संघर्ष महिलाओं के बूते ही आगे

बढ़ा है। अपनी जान की परवाह न करती हुई, जंगल के पेड़ बचाने के लिए पेड़ों से लिपटने वाली महिलाएँ, आखिर क्यों अपने पेड़, जंगल, खेत, घर, गाँव और पहाड़ छोड़कर मैदानों की ओर कूच कर रही हैं? यह प्रश्न जानना मेरे लिए अति आवश्यक था। उनका कहना था कि-

'सूरज निकलने से पहले ही उठना, घर के काम-काज निपटा कर खेतों का काम, पशुओं की देखभाल, खेतों से फुर्सत मिले तो जंगल की ओर जाना और पीठ पर लकड़ियों का गठ्ठर लादकर लाना, चूल्हे पर रोटी पकाना, बच्चों का काम करना....। सुबह कब हुई और शाम कहाँ गई, ये पूछने की फुर्सत तो दूर की बात है, कब तीस की उम्र में थे, कब चालीस की उम्र को पार कर लिया, इसका भी पता नहीं चलता।'' यह उत्तर था गाँव की एक महिला का।

मैंने एक और महिला से पलायन का कारण जानना चाहा - ''यह पूछने पर कि ऐसा क्या किया जाए जिससे महिलाएँ पलायन न करें। निर्मला कहती हैं कि यदि गाँव में महिलाओं के लिए भी रोजगार हो, जिनसे महिलाओं को जोड़ा जा सके, जिससे उनकी आमदनी हो सके तो फिर वे गाँव नहीं छोड़ेंगी।

हमारे दल के सभी छात्र उस वक्त सोचने पर मजबूर हो गए जब एक 90 वर्षीय महिला की पीड़ा को सुना- जिसे दो वक्त की रोटी भी नसीब नहीं हो रही थी और वह बार-बार भगवान से मृत्यु की बात कर रही थी। हम सभी छात्रों ने अन्य विद्यालय से आए छात्रों से मंत्रणा कर कुछ सहायता करने की सोची और 20000 रूपये एकत्रित कर गाँव के एक ज़िम्मेदार व्यक्ति को दिए और कहा कि कृपया आप राशन की व्यवस्था कर इस महिला की मदद करें। लोगों से मिलने के बाद मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि जनता का दर्द यह है कि पहाड़ पर न तो रोजगार है और न ही उपजाऊ ज़मीन, जनप्रतिनिधि और सरकारें हैं कि एक-दूसरे को कोसने से फुर्सत नहीं। पहाड़ पर पहाड़ जैसा जीवन जीने को मजबूर लोगों की समस्याएँ समझने के प्रयास के दावे करते-करते सरकारें आती हैं, जाती हैं लेकिन लोगों के सामने रह जाता है वही विकट पहाड़। हमारे सर्वेक्षण में पलायन की मुख्य समस्या यह उभरकर आई कि रोजगार के साधनों का अभाव युवाओं के पलायन का मुख्य कारण है। रोजगार के नाम पर पहाड़ों पर कुछ भी नहीं है जिसके कारण युवा रोजी-रोटी की तलाश में बड़े शहरों का रुख करने को विवश हो रहे हैं।

अपने पाँच दिवसीय कार्यक्रम के अंतर्गत सबसे पहले हम सभी विद्यार्थियों ने पूर्व निर्मित सामुदायिक भवन की चारदीवारी तैयार की और शौचालयों का जीर्णोद्वार किया। तत्पश्चात सभी छात्र-छात्राओं ने गाँव के पंचायत-घर और सार्वजनिक पानी की टंकी की रंगाई-पुताई का कार्य कर श्रम और परोपकार की भावना का परिचय दिया। 'स्वच्छ भारत अभियान' का समर्थन करते हुए विद्यार्थियों के दल ने आस-पास के इलाकों में सफाई अभियान चलाकर गाँव वासियों को पर्यावरण बचाने के प्रति सचेत किया, जिसकी सभी लोगों ने भूरि-भूरि प्रशंसा की। स्वरोजगार के लिए प्रेरित करने के लिए विद्यार्थियों ने क्षेत्रवासियों को 'एल.ई.डी.' बल्ब बनाने का प्रशिक्षण दिया। इस कार्यक्रम के तहत छात्र-छात्राओं ने एक दिन में 500 बल्ब बनाकर जहाँ एक ओर लोगों के जीवन में प्रकाश लाने की कोशिश की वहीं दूसरी ओर उन्हें आजीविका के क्षेत्र में भी एक आशा की नई किरण दिखाई जिससे वे स्वयं बल्ब बनाकर इसे रोज़गार के रूप में अपना सकें।

सिंधिया स्कूल में इस प्रकार की गतिविधियों का उद्देश्य युवा पीढ़ी में त्याग, दया और श्रम की भावना विकसित करना है। इस कार्यक्रम में भाग लेने वाले विद्यालयों में द दून स्कूल देहरादून, द सिंधिया स्कूल ग्वालियर, डेली कॉलेज इंदौर, हैदराबाद पब्लिक स्कूल हैदराबाद, विद्या देवी जिंदल स्कूल हिसार, मॉर्डन स्कूल दिल्ली आदि प्रमुख थे।

सोमेश कुमार
कक्षा-12 (महादजी सदन)

पेड़ लगाओ - जीवन बचाओ

इसी धारणा को साकार करने हेतु हमारे विद्यालय में भी वृक्षारोपण पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। इस वर्ष प्राचार्य महोदय, शिक्षकों तथा पूर्व छात्रों के द्वारा हजारों की संख्या में विद्यालय परिसर में पेड़ लगाए गए। स्कूल में बार-बार वृक्षारोपण, पानी बचाओ, पॉलिथीन का प्रयोग नहीं करने आदि पर बहुत ध्यान दिया जा रहा है। वृक्षारोपण कार्य पूरे जोश के साथ किया जा रहा है। आखिर इस सब की क्या आवश्यकता है? यही प्रश्न बार-बार मेरे मन में भी उठता रहता है। मैंने अपने माता-पिता से, दोस्तों से और विभिन्न माध्यमों से जब इसका कारण ढूँढा तो इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि -

सारी दुनिया में आजकल **'ग्लोबल वार्मिंग'** का खतरा लगातार बढ़ता जा रहा है। धरती से पेड़ों की संख्या कम होती जा रही है और कंक्रीट के जंगल बढ़ते जा रहे हैं। हमारे शहर में देखते-देखते जंगल आधे हो गए हैं और वहाँ शॉपिंग मॉल, बड़ी-बड़ी इमारतें खड़ी हो गई हैं। मेरी दादीजी को इस बात से बहुत चिंता होती है और वह अक्सर घर में इस पर चर्चा करती रहती हैं। वह हमें यह भी बताती हैं कि वैज्ञानिक भी 'ग्लोबल वार्मिंग' को लेकर लगातार चेतावनी देते आ रहे हैं, लेकिन हम इतने लापरवाह हो गए हैं कि हमें अपने जीवन का **'ब्लैक होल'** भी नहीं दिखाई पड़ रहा। दादीजी ने आगे कहा है कि 'ग्लोबल वार्मिंग' के खतरे को अधिक से अधिक पेड़ लगाकर काफी हद तक कम किया जा सकता है। आज ज़रूरत इस बात की है कि हम एक ज़िम्मेदार नागरिक की भूमिका अदा करते हुए न केवल खुद खूब वृक्ष लगाएँ, बल्कि अपने आस-पास के लोगों को भी पेड़ लगाने को जागरूक करें।

अब मुझे भी पेड़ों की महत्ता समझ में आ गई है और जो लोग अपने लाभ के लिए पेड़ काट रहें हैं उन्हें पेड़ काटने पर कड़ी सजा मिलनी चाहिए।

कहने को तो हमारे देश में कई कानून हैं वन विभाग ने पेड़ों को बचाने के लिए कई नियम बनाए हैं। मैंने तो यह भी पढ़ा है कि कानून के अंतर्गत आप अपने खेत में कोई भी पेड़ बिना वन-विभाग की अनुमति के नहीं काट सकते फिर चाहे वह हमारी व्यक्तिगत ज़मीन पर ही क्यों न हो। सरकारी नियम तो यह भी कहता है कि यदि कोई व्यक्ति वन-विभाग की सहमति से कोई पेड़ काटता भी है तो उसको एक की जगह दो पेड़ लगाने होंगे अन्यथा इन पेड़ों की कीमत वन-विभाग में जमा करानी होगी। बिना अनुमति के या फिर अवैध रूप से पेड़ काटने वाले के खिलाफ जुर्माना, यहाँ तक कि जेल तक का प्रावधान है।

बचपन से ग्लोबल वार्मिंग का नाम सुनता आया हूँ आखिर यह क्या है? और अब यही समझा हूँ कि -

जिन पेड़ों को हम लगातार काट कर कंक्रीट का जंगल खड़ा कर रहे हैं उसके कारण वातावरण में ऑक्सीजन की मात्रा लगातार कम होती जा रही है। हमारी गाड़ियों के धुएँ के कारण धरती आग का गोला बनती जा रही है। ऑक्सीजन की कमी से वातावरण में हुए भारी फेरबदल से ओज़ोन परत में छेद हो गया है जिससे सूरज की पराबैंगनी किरणें सीधे पृथ्वी तक पहुँच रही हैं और गर्मी हर साल लगातार बढ़ती जा रही है। मुझे तो 'ग्लोबल वार्मिंग' को लेकर परिणाम दिखाई भी देने लगे हैं। यदि समय रहते हम सब सावधान नहीं हुए तो वह समय दूर नहीं जब पृथ्वी एक आग का गोला बनकर रह जाएगी और यहाँ जीवन की संभावनाएँ दूर-दूर तक खत्म हो जाएँगी। हमारे बच्चे हमें कभी माफ़ नहीं करेंगे।

मेरा सुझाव है कि अधिक से अधिक पेड़ लगाएँ -

अपनी मातृभूमि को सुरक्षित रखने और ग्लोबल वार्मिंग से बचने का एक मात्र उपाय यही है कि बिना समय गँवाए अधिक से अधिक संख्या में हम सब मिलकर खूब पेड़ लगाएँ। हालाँकि हम अभी जो पहल करेंगे उसका फल हमें काफ़ी देर से मिलेगा, लेकिन मिलेगा ज़रूर। असल में वृक्ष अपने पत्ते और छाल पर हवा में मौजूद प्रदूषक गैसों को अवशोषित कर लेते हैं। यहाँ तक कि पराबैंगनी किरणों को भी ये अवशोषित कर धरती पर पड़ने से रोकते हैं। आज ज़रूरत इस बात की है कि निकट भविष्य के खतरे को भाँपते हुए हम आगे आएँ, वृक्ष लगाएँ और दूसरों को भी पौधारोपण के लिए जागरुक करें। अपने विद्यालय में भी वृक्षारोपण पर खूब ध्यान दिया जा रहा है हमारे प्रधानाचार्य और शिक्षक भी इस काम को आगे बढ़ा रहे हैं।

पहले संकल्प ले और फिर आगे बढ़ें -

मेरा मानना है कि अच्छे काम की शुरुआत पहले खुद से होती है इसलिए सबसे अच्छा यह होगा कि पहले हम वृक्षारोपण को लेकर संकल्प लें और फिर तय करें कि हमें एक साल में कितने पौधे लगाने हैं। यही नहीं इसके साथ अपने स्कूल को भी संकल्प दिलवाएँ कि हर नया बच्चा प्रवेश के बाद एक पौधा अवश्य लगाए और पुराने छात्र वृक्षारोपण में सहयोग करें। पौधारोपण को लेकर इस तरह से हम अपने मोहल्ले, गाँव व कॉलोनी में एक मिसाल बन सकते हैं और औरों के लिए प्रेरणा भी।

पौधा लगाने से ज्यादा देखभाल ज़रूरी -

मैंने देखा है कि विभिन्न तरह के अभियान या फिर किसी के कहने में आकर हम पौधारोपण तो कर देते हैं, लेकिन कुछ दिन बाद हमें याद भी नहीं रहता कि हमने कभी कोई पौधा भी लगाया था। पौधारोपण का मतलब केवल पौधा लगाने भर से ही पूरा नहीं हो जाता।

पौधारोपण का मतलब है कि आप बच्चे की ही तरह पौधे को पूरे मन व संकल्प के साथ गोद लें। जिस तरह से हम अपने भाई-बहन के खाने-पीने और तमाम छोटी ज़रूरतों का ख्याल रखते हैं। उसी तरह पौधे को सींचने से लेकर उसको बड़ा करने तक की ज़िम्मेदारी भी हमें उठानी होगी तब जाकर असल रूप में पौधारोपण का उद्देश्य पूरा होगा।

एक पेड़ काटने से लगभग ४५ लाख का नुकसान -

हाल ही में मैंने एक समाचार पत्र में पढ़ा था कि एक पेड़ को काटने से सीधा 45 लाख रुपए का नुकसान है। दरअसल, एक पेड़ अपने पचास साल के जीवन में 45 लाख रुपए का लाभ पहुँचाता है। इमारतों के लिए लकड़ी से लेकर फल, फूल, ऑक्सीजन तक हर कदम पर हमें पेड़ों का फ़ायदा मिलता है। पेड़ ही हैं जो वातावरण में संतुलन बनाए रखने का काम करते हैं। सबसे बड़ी बात तो यह है कि मनुष्य के जीवन के सबसे ज़रुरी ऑक्सीजन भी हमें पेड़ों के कारण ही मिलती है। मैं तो अपने इस लेख के माध्यम से सभी छात्रों से, पढ़ने वालों से यही विनती करूँगा कि अभी भी समय है कि हम अपनी इस धरती को बचाने का संकल्प लें नहीं तो हमारी आने वाली पीढ़ी हमें कभी माफ़ नहीं करेगी।

जल संरक्षण

जल ब्राह्माण्ड के पंच तत्वों में से एक तथा ज़िंदगी जीने का एक प्रमुख सहारा है। जल को हम काफी नामों से जानते हैं जैसे पानी, नीर। यह जानकर आप काफी आश्चर्यचकित होंगे कि पृथ्वी पर करीब 70-80% पानी है परंतु साफ पानी 3 से 4% ही है। इतनी कम पानी की मात्रा के लिए पानी बचाना आवश्यक है। यह बहुत दुखः की बात है कि आज हम सभी पानी की मात्रा को न देखते हुए बस उसके उपयोग पर ज्यादा ध्यान दे रहे हैं। पानी के बढ़ते हुए दुरुपयोग ने ही आज हमें ऐसे विषय पर विचार-विमर्श करने को मजबूर कर दिया है जिसका महत्व 50-60 वर्षों पहले ही समझ लेना चाहिए था। जल संरक्षण का सदुपयोग भावी पीढ़ी के लिए मील का पत्थर साबित होगा। जल संरक्षण की महत्ता हमें इस बात का आश्वासन देती है कि लोग पानी को लेकर सचमुच में जागरूक हैं परंतु उनके द्वारा उठाए गए कदम इस मत के साथ नहीं बल्कि विपरीत नजर आते हैं। समय के साथ-साथ लोगों के कदम इसकी महत्ता को समझते हुए मत के काफी नजदीक आ चुके हैं जो एक नए भारत का निर्माण कर रहे हैं। भावी पीढ़ी की आवश्यकताओं को देखते हुए जल का उपयोग किया जाना चाहिए। भारत सरकार ने राष्ट्रीय, राज्य तथा ग्रामीण स्तर पर जल संरक्षण की कई योजनाएँ चला रखी हैं इसका परिणाम यह हुआ कि लोगों ने जल संरक्षण के महत्व को समझ लिया और पानी की बर्बादी काफी हद तक कम कर दी । विद्वानों ने ठीक ही कहा है कि - 'जल ही जीवन है'।

क्योंकि इसके बिना मनुष्य के साथ-साथ पृथ्वी पर जन्मी हर जीव-जंतु का जीना असंभव है। जल-संरक्षण के अंतर्गत अनेक तकनीकें अपनाई जा रही हैं- जैसे छत्र वर्षा जल-संरक्षण, टिप-टिप संरक्षण आदि। तमिलनाडु भारत का एक ऐसा प्रदेश है जिसने छत्र वर्षा जल-संरक्षण को अनिवार्यता प्रदान करने का नया कीर्तिमान रचा है। पहाड़ी इलाकों में जल-संरक्षण की विधियाँ काफी सहज है। वहाँ 'गुल्स' और 'कूल्स' जैसी महत्वपूर्ण विधियाँ नजर आती हैं। भारत सरकार ने जल संरक्षण योजनाएँ लागू करने के साथ-साथ कुछ भी महत्वपूर्ण योजनाएँ लागू की हैं- जैसे राष्ट्रीय जल योजना 2010, जल-क्रांति अभियान, जिसने लोगों में काफी हद तक जागरूकता पैदा की है। इन सभी के साथ-साथ राजस्थान जैसे गर्म प्रदेश में जहाँ पानी

की ज़्यादातर कमी रहती है वहाँ के लोग भी ज़मीन के अंदर टैंक में पानी संरक्षण कर बेहतर काम करते नजर आ रहे हैं।

जल की कमी ने ही जल संरक्षण को जन्म दिया है क्योंकि लोगों पर जब तक आफत नहीं आती तब तक आराम करना पसंद करते हैं। बढ़ती हुई जल की समस्या किसी भी देश की प्रगति में बाधाएँ उत्पन्न कर सकती हैं। लोगों का यह मानना है कि जल एक पुनर्योजित स्रोत है, यह सही है लेकिन उसका सही रूप से इस्तेमाल न किया जाना एक बहुत बड़ी भूल है। जल की कमी ने राजस्थान को आज 'एक सूखा पड़ने वाला प्रदेश' का नाम दे दिया। लोग इस परेशानी से जूझते हुए अपनी जान भी खो रहे हैं। जल-संरक्षण इन सभी असुविधाओं का हल है तथा लंबे दौर के लिए किसी भी देश का प्रगतिशील हथियार है। जल-संरक्षण योजनाओं का निष्ठा से पालन करना हमें प्रगति की राह पर गति प्रदान करता है।

वैज्ञानिकों तथा विद्वानों द्वारा यह कहा जाना कि इस पृथ्वी पर यदि अब कोई विश्व युद्ध होगा तो वह पानी की समस्या को लेकर ही होगा। यदि हम भारतवासी अभी से अपने आप को जल संरक्षण की विधियों का पालन कर तैयार करें तो आने वाला यह काल्पनिक विश्वयुद्ध भारत की नीव को डगमगा भी नहीं सकता। भारत के द्वारा तैयार की गई तकनीक समुद्र के खारे पानी को साफ पीने योग्य जल में परिवर्तित करती है जो कि लंबे दौर के लिए काफी सहायक तथा महत्वपूर्ण है।

आओ, वर्षा की बूँद-बूँद को संजोएँ,
जल संरक्षण की हर विधि को पिरोएँ ।।
वक्त खत्म होने से पहले इस समस्या का उपसंहार करें,
आओ, अभी मिलकर एक नए भारत का निर्माण करें ।।

अभिषेक माहौर
कक्षा-12 (माधव सदन)

पानी की बचत: आज की ज़रुरत

जल ही जीवन है। ये सब हम बचपन से सुनते आ रहे हैं, कहते आ रहे हैं लेकिन मानता कौन है? पानी की एक-एक बूँद को बचाना आज की ज़रुरत है। अगर हमने आज पानी की बचत नहीं की तो इसकी एक-एक बूँद के लिए हमारी आने वाली पीढ़ी को तरसना पड़ेगा। पानी का जलस्तर निरंतर घट रहा है जहाँ करीब 20 वर्ष पहले 40 फुट की गहराई से आने वाला पानी अब 90 से 100 फुट नीचे जा चुका है।

हमें पानी की बर्बादी पर रोक लगानी होगी। कहते हैं जल है तो कल है, परंतु जल ही हमारे लिए आज की जरूरत है और इसके लिए सबसे पहले इसकी बर्बादी पर रोक लगानी होगी। हमारे देश में कहीं-कहीं खुले नल, कहीं बिना कारण सफाई के लिए पानी का अधिक इस्तेमाल सार्वजनिक स्थान पर अगर कहीं कोई नल चल रहा हो तो कोई उसे बंद करने की जिम्मेदारी नहीं समझता। यदि हर व्यक्ति अपनी जिम्मेदारी समझने लगे, जैसे- बिना कारण नल चला कर रखना, कपड़े धोने, नहाने में पानी का कम इस्तेमाल करें, तो पानी की बचत काफी हद तक कर सकते हैं। जहाँ हम अपनी जरूरत के लिए कई गुना पानी बर्बाद कर देते हैं, वहीं आसमान पर तपती गर्मी में उड़ते पक्षी प्यास के कारण अपना दम तोड़ देते हैं।

पानी जीवन का आधार है अगर हमें इसे बचाना है तो इसका संरक्षण करना पड़ेगा। पानी की उपलब्धता घट रही है और महामारी बढ़ रही है इसलिए जल के इस संकट का समाधान आज की ज़रूरत है और इसकी बचत करना प्रत्येक मनुष्य का दायित्व बनता है। यही हमारी राष्ट्रीय ज़िम्मेदारी बनती है और हम अंतर्राष्ट्रीय समुदाय से भी ऐसे ही जिम्मेदारी की अपेक्षा करते हैं। पानी के स्रोत सीमित हैं, ऐसे में पानी के स्रोतों को सुरक्षित रख कर पानी में संकट से मुकाबला हम कर सकते हैं। इसके लिए हमें अपनी भोगवादी प्रवृतियों पर अंकुश लगाना पड़ेगा और पानी के उपयोग के लिए मितव्ययी बनना पड़ेगा। पानी की इस कुप्रबंधन को दूर करके हमें इस समस्या से निपटना होगा।

हम कहते हैं कि कृषि नहीं होगी तो हम खाएँगे क्या? परंतु इसमें भी पानी के इस्तेमाल का थोड़ा ध्यान रखेंगे तो पानी की बचत कर सकते हैं।

(1) प्रत्येक फसल के हिसाब से पानी निधारित करना चाहिए और उसी के अनुसार सिंचाई की योजना बनाई जानी चाहिए। सिंचाई कार्यों के लिए, 'स्प्रिन्कलर' और 'ड्रिप' सिंचाई जैसे पानी की कम खपत वाले प्रौद्योगिकियों को प्रोत्साहित करना चाहिए।

(2) विभिन्न फसलों के लिए पानी की कम खपत वाले तथा अधिक पैदावार वाली बीजों के लिए अनुसंधान को बढ़ावा दिया जाना चाहिए।

(3) जहाँ तक संभव हो ऐसे खाद्य उत्पादों का प्रयोग करना चाहिए जिसमें कम पानी लगता है। खाद्य पदार्थों की अनावश्यक बर्बादी में कमी लाना भी आवश्यक है। देश में उत्पादित होने वाले 30% खाना नहीं खाया जाता है और यह बेकार हो जाता है इसलिए इसके उत्पादन में हुआ पानी का प्रयोग व्यर्थ ही चला जाता है इसलिए इन खाद्य पदार्थों में हुए पानी की बर्बादी को रोककर आज इसकी ज़रूरत को पूरा किया जा सकता है।

हमें पानी की बचत क्यों करनी चाहिए ?

पानी की बचत हमें क्यों करनी चाहिए ? इसके लिए छात्रों को जल के महत्व को समझना होगा। सबसे पहले तो मनुष्य अपने जीवन में दूसरी चीज़ों के बिना रह सकता है परंतु ऑक्सीजन, पानी और खाना इसके बिना वह नहीं जी सकता। इन तीन मूल्यवान चीज़ों में पानी का महत्व सबसे अधिक है। हमारी पृथ्वी पर 71% पानी है। यह हम सब जानते हैं। परंतु 2% पानी ही हमारे पीने लायक है। यह भी अनुमान लगाया जा रहा है कि 2025 तक पानी की कमी से 3 अरब लोग पीड़ित रहेंगे। इसलिए अगर हम पानी की बचत करें तो कल और आज इस समस्या का समाधान हो सकता है। इसके लिए पानी को हमें आज से ही सुरक्षित करना होगा और इसकी बर्बादी को रोकना होगा।

पानी का स्वच्छ होना भी पानी की आज की ज़रूरत है-

(1) कई लाख लोग प्रतिवर्ष जल प्रदूषित होने के कारण बीमारियों से मर रहे हैं। इस पानी को दूषित होने से रोकना होगा, ताकि वह पानी आज की ज़रूरत में काम आए।

(2) अखबार के एक पेज को बनाने में 13 लीटर पानी बर्बाद होता है तो सोचिए पूरे विश्व में कितना पानी बर्बाद होता है।

(3) हमारे देश में हर 15 सेकंड में एक बच्चा पानी से उत्पन्न रोग से मर रहा है। तो सोचिए इस दूषित जल की वजह से कितना नुकसान होता है। यदि जल को दूषित होने से रोकें तो कितनी तरह की बीमारियों और पानी की बचत हो सकती है।

पानी की बचत आज की ज़रूरत-

(1) सबसे पहले तो हमें कसम खानी होगी कि पानी की बचत करेंगे और इसकी बर्बादी को रोकेंगे।

(2) अगर पूरी पृथ्वी में सभी लोग थोड़ा-थोड़ा पानी बचाएँगे तो काफी पानी बच सकता है।

(3) बारिश के पानी का संरक्षण करके उसका प्रयोग दूसरे दैनिक कार्य में कर सकते हैं, जैसे कपड़े धोने, बगीचे में पानी देना, नहाने में भी इस्तेमाल कर सकते हैं।

(4) अगर हम नहाते समय शावर की जगह नहाने के लिए बाल्टी का उपयोग करें तो हम 100 से 200 लीटर पानी प्रतिदिन बचा सकते हैं।

(5) नल का इस्तेमाल करके उसे अच्छे से बंद करें। पानी गिरते रहने से काफी पानी बर्बाद हो जाता है।

(6) ज़्यादातर पेड़-पौधे बारिश के महीने में लगाएँ, ताकि पौधों को प्राकृतिक रूप से पानी मिल सके।

(7) सामाजिक कर्तव्य भी हमें समझना चाहिए ताकि पानी की बर्बादी को रोक सके। जहाँ भी हमें नल खुला दिखे, चाहे वो रेलवे स्टेशन, बस-स्टॉप या कोई भी सार्वजनिक स्थल हो चलते हुए नल और व्यर्थ में हो रहे पानी के नुकसान को बचाएँ क्योंकि अगर हमने इस समस्या का समाधान करना आज की ज़रूरत नहीं समझी तो कल हमें इसका भारी नुकसान भुगतना पड़ेगा।

अंत में मैं यही कहना चाहूँगा कि पानी हमारे और दूसरे अन्य प्राणियों के लिए पृथ्वी पर जीवन प्रदान करता है। जल भगवान द्वारा दिया गया हम मानव को और अन्य प्राणियों के लिए एक उपहार है। इसके बिना पृथ्वी के अलावा किसी भी ग्रह में जीवन की कल्पना भी नहीं कर सकते हैं इसलिए इसकी बचत आज की ज़रुरत है। जल है तो जीवन है, कल है और आज है। हमारे विद्यालय में भी पानी बचाने के लिए निरंतर प्रयास किए जा रहे हैं और हमें भी समय-समय पर पानी के महत्व के बारे में बताया जाता है।

लद्दाख अंतर्राष्ट्रीय सर्विस प्रोजेक्ट... एक यादगार सफर

टीम सिंधिया

अपने 'लद्दाख अंतर्राष्ट्रीय सर्विस प्रोजेक्ट' के दौरान 16 दिन यहाँ पर समाज सेवा करने के पश्चात मेरी समझ में आ गया कि क्यों हमारे विद्यालय ने इस पवित्र भूमि को इस पुण्य कार्य के लिए चुना होगा। भारत में अगर सबसे अधिक पूजा-पाठ तथा भगवान को माना जाता है तो वह लद्दाख में माना जाता है। लद्दाख, जिसे 'चन्द्रभूमि' का नाम भी दिया जाता है, सचमुच चन्द्रभूमि ही है। यहाँ पर धर्म को अधिक महत्व दिया जाता है।

नंगे पहाड़ों से घिरी लद्दाख की धरती, जहाँ पर पेड़ नाममात्र के हैं तथा बारिश अक्सर चिढ़ाकर भाग जाती है। लामाओं की धरती के नाम से भी जानी जाती है। यहाँ पर धर्म को बहुत ही महत्व दिया जाता है। प्रत्येक गली-मोहल्ले में आपको स्तूप (छोटे मंदिर) तथा 'प्रेयर व्हील' (प्रार्थना चक्र) भी नजर आएँगे जिन्हें घूमाने से सभी पाप धुल जाते हैं तथा भगवान का नाम कई बार जपा जाता है, ऐसा लेहवासियों ने हमें बताया। इसके साथ ही मेरी जिज्ञासा और बढ़ती गयी।

स्तूप के साथ-साथ प्रार्थना चक्र, जिसे लद्दाखी भाषा में 'माने तंजर' कहा जाता है, लद्दाख में बड़ी संख्या में पाए जाते हैं। 5 से 6 फुट ऊँचे इन तांबे से बने चक्रों पर 'ऊँ मने पदमने हों' के मंत्र खुदे होते हैं। ये चक्र धुरियों पर घूमते हैं और एक बार घुमाने से वह कई चक्कर खाता है तो एक बार ही नहीं, बल्कि कई बार उपरोक्त मंत्र ऊपर लगी घंटी से टकराते हैं जिनके बारे में बौद्धों का कहना है कि इतनी बार वे अपने आप भगवान का नाम जपते हैं। आस्तिक होने के नाते मैंनें भी 'माने तंजर' को खूब घुमाया।

इसको घुमाने के लिए कोई समय निर्धारित नहीं होता है। जब भी इच्छा हो या फिर समय मिलने पर आदमी इसे घुमा सकता है। अक्सर देखा गया है कि हर आने वाला व्यक्ति इसे घुमाता है और दिन में कई बार इसे घुमाया जाता है, क्योंकि हर गली-मोहल्ले, चौक बाजार आदि में ये मिल जाते हैं। इनके बारे में प्रचलित है कि उन्हें घुमाने से आदमी के सारे पाप धुल जाते हैं।

लद्दाखवासी नर्म दिल तथा परोपकारी भी होते हैं। मेहमान को भगवान का रूप समझकर उसकी पूजा की जाती है। हमारे 16 दिन के प्रवास के दौरान हमें वहाँ की संस्कृति से परिचित होने का अवसर मिला और अब मेरी समझ में आया कि इसीलिए तो उनकी धरती को 'चाँद की धरती' कहा जाता है क्योंकि जहाँ लोगों के दिल चाँद की तरह साफ हैं।

कार्य की प्रगति - पहला दिन

कार्य की प्रगति - दूसरा दिन

सामाजिक कार्यः

'जहाँ चाह, वहाँ राह' की कहावत को साकार करते हुए हमने लेह के एक सुदूर गाँव 'तिगसे' में एक प्राथमिक विद्यालय का निर्माण किया और अब हर वर्ष जुलाई के महीने में 2-3 कमरों का निर्माण करते हैं, जिसमें ग्रामवासियों के बच्चों के लिए शिक्षा उपलब्ध कराई जा सके। इसी पावन कार्य को आगे बढ़ाने के लिए दिनाँक 24 जुलाई 2019 को देश के कई प्रतिष्ठित विद्यालयों के 20 विद्यार्थियों और 4 शिक्षकों का एक दल सिंधिया स्कूल के वरिष्ठ अध्यापक श्री विशेष सहाय के नेतृत्व में 'राउंड स्क्वायर इंटरनेशनल सर्विस प्रोजेक्ट' के अंतर्गत तिगसे गाँव पहुँचा। अपने सोलह दिवसीय कार्यक्रम के अंतर्गत सबसे पहले विद्यार्थियों ने पूर्व निर्मित विद्यालय के लिए 3 नए कमरों का निर्माण कर एकता और परोपकार की भावना की मिसाल प्रस्तुत की। इस कार्य की सभी लोगों ने भूरि-भूरि प्रशंसा की और भविष्य में भी इसी प्रकार के सहयोग की अपील की। दिनाँक 5 जुलाई को दल अपने पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के तहत विश्व प्रसिद्ध झील 'त्सो मोरीरी' के लिए निकल पड़ा। यह झील चारों ओर पर्वतों से घिरी हुई है। ये खूबसूरत पहाड़ अपने अंदर बहुत ही सुंदर दृश्यों को समेटे हुए है। यह खारे पानी की झील है क्योंकि इस झील से पानी का निकास नहीं हो सकता है। पहाड़ों पर बर्फ़ पिघलने की वजह से यह जल इकट्ठा होता है। इस झील को देखने के पश्चात् अगले दिन हमारा दल पर्वतीय अभियान के लिए निकल गया। लगभग 6 घंटे की यात्रा तय करने के पश्चात् हम लोग अपने पहले कैंप 'रुम्बक' में पहुँचे। रात्रि विश्राम के बाद अगले दिन दल 4900 मीटर ऊँची पर्वत चोटी 'स्टोक्ला पास' के लिए निकल गया। 'स्टोक्ला पास' की सफलता के बाद अगले दिन सुबह एक और दूसरी पर्वत चोटी 'गंधाल पास' (5000 मीटर) को पार कर लगभग 24 किलोमीटर की दूरी तय कर अस्कू गाँव पहुँचा। रात्रि विश्राम के पश्चात अगले दिन हम लोग लेह अपने होटल पहुँचे जहाँ से हमें लेह से विदाई लेनी थी।

दल के मुखिया श्री विशेष सहाय ने बताया कि विद्यालयों में इस प्रकार की गतिविधियों का उद्देश्य युवा पीढ़ी में त्याग, दया और श्रम की भावना विकसित करना है। इस कार्यक्रम में भाग लेने वाले विद्यालयों में, द सिंधिया स्कूल ग्वालियर, मेयो कॉलेज बॉयज अजमेर, मेयो कॉलेज गर्ल्स अजमेर, सिंधिया कन्या विद्यालय ग्वालियर, विद्या देवी जिंदल स्कूल हिसार, धीरुभाई अम्बानी मुंबई, विवेक हाई स्कूल चंडीगढ़ आदि प्रमुख थे।

संचित सर्राफ

कक्षा 11 (जयप्पा सदन)

मेरा रेल का पहला सफ़र

मैंने पहली रेल यात्रा बचपन में की थी तब मैं कक्षा 6 में पढ़ता था। मुझे सही से तो याद नहीं लेकिन उस समय फरवरी का महीना था और सर्दी बहुत पड़ रही थी। मेरे स्कूल की 10 दिनों की छुट्टियाँ पड़ी थी इसलिए पिताजी ने मुझे बिना कुछ बताए वैष्णो देवी जाने की योजना बना ली थी।

जब मैं दोस्तों के साथ खेल कर शाम को घर लौट कर आया तो माँ ने बताया कि कल हम माँ वैष्णो देवी के दर्शन करने जा रहे हैं। यह सुनकर मैं बहुत खुश हो गया क्योंकि हम काफी समय बाद कहीं पर घूमने जा रहे थे। मैं उस समय इतना खुश था कि खुशी के मारे मैं इधर- उधर कूद रहा था। थोड़ी देर बाद मन शांत हुआ तो मैंने माँ से पूछा कि हम वैष्णो देवी कैसे जाएँगे? मम्मी ने कहा कि हम वैष्णो देवी 'रेल' से जाएँगे। यह सुनकर तो मैं और खुश हो गया क्योंकि मैंने पहले कभी रेल से सफर नहीं किया था। बस किताबों और टी.वी. पर ही रेल को चलते देखा था।

माँ ने शाम को ही सारे सामान की पैकिंग कर ली थी। ट्रेन सुबह के 3:00 बजे की थी। माँ ने कहा तुम जाकर सो जाओ लेकिन मुझे नींद कहाँ आने वाली थी। मैं पूरी रात भर यही सोच रहा था कि रेल का सफर कैसा होगा?

जैसे-तैसे रात के 2:00 बजे और माँ ने मुझे उठाया और कहा कि तैयार हो जाओ रेलवे स्टेशन जाना है।

मैं हाथ मुँह धोकर तैयार हो गया और पिताजी ने घर के बाहर टैक्सी बुला ली। घर के बाहर निकले तो देखा कि सर्दी बहुत थी और कोहरा छाया हुआ था। हम टैक्सी में बैठकर करीब 2:30 बजे दिल्ली स्टेशन पहुँचे। पिताजी ने पहले ही ट्रेन की टिकट बुक करा ली थी।

हमारा ट्रेन का सफर बहुत लंबा होने वाला था क्योंकि हमें जयपुर से वैष्णो देवी जाना था। स्टेशन पहुँचने के बाद हम प्लेटफॉर्म पर बैठे हुए थे। वहाँ पर मैंने देखा कि एक ट्रेन आ रही थी तो एक ट्रेन जा रही थी। वहाँ पर लोगों की बहुत ज्यादा भीड़ थी। रेल की सीटी इतनी जोरदार थी कि उसको कई किलोमीटर दूर तक सुना जा सकता था।

कुछ समय बाद हमारी ट्रेन स्टेशन पर आ चुकी थी। पिताजी ने कुली से हमारा सामान ट्रेन के डिब्बे में रखवा दिया। फिर हम सभी ट्रेन के एक वातानुकूलित डिब्बे में जाकर बैठ गए वहाँ पर मैंने देखा कि बैठने के लिए बड़ी-बड़ी आरामदायक सीटें थी और ट्रेन का डिब्बा एक कमरे की तरह बड़ा था।

ट्रेन में सभी प्रकार की सुविधाएँ थी, गर्मियों के लिए ए.सी. और पंखे की सुविधा थी, तो सर्दियों के लिए हीटर की भी सुविधा थी। रेल के डिब्बे रोशनी की सुविधा के लिए कई लाइटें लगाई हुई थीं। मुझे ऐसा लगा था कि मानो मैं किसी कमरे में बैठा हूँ। मैंने पहले कभी ट्रेन से यात्रा नहीं की थी इसलिए यह मुझे बहुत ही अलग लग रहा था क्योंकि इतनी आरामदायक और खुली सीटें मुझे कभी देखने को नहीं मिली थी।

कुछ देर तक हम ट्रेन में बैठे रहे। मैं ट्रेन की खिड़की से बाहर झाँक रहा था मैंने देखा कि एक आदमी काला कोट पहने ट्रेन को हरी झंडी दिखा रहा है।

अब मैंने कौतूहलवश पिताजी से पूछा कि वह ट्रेन को हरी झंडी क्यों दिखा रहे हैं? तो पिताजी ने कहा कि यह ट्रेन के चालक को ट्रेन चलाने का संकेत है। उसी समय ट्रेन धीरे-धीरे चलने लगी और ट्रेन कोहरे को चीरते हुए आगे बढ़ने लगी। कुछ समय तक तो शहर की चकाचौंध देखने को मिलती रही लेकिन कुछ समय बाद केवल अंधेरा छा गया क्योंकि कोहरा बहुत ज्यादा था इसलिए बाहर कुछ भी नहीं दिखाई दे रहा था।

हम सब बात करने लगे, वहाँ पर कुछ अन्य यात्री भी थे, जो हमसे बातें कर रहे थे, कुछ यात्री मेरी पढ़ाई के बारे में बातें कर रहे थे तो कुछ कह रहे थे कि कहाँ घूमने जा रहे हो? थोड़ी देर तक इधर-उधर की बातें चलती रही फिर सभी को नींद आने लगी तो सभी अपनी-अपनी सीटों पर जाकर सो गए।

मैंने भी कंबल ओढ़ी और सो गया। लगभग 3 से 4 घंटे के बाद मुझे तरह-तरह की आवाजें सुनाई दे रही थी। मैंने कंबल से सिर बाहर निकाला तो देखा कि ट्रेन एक स्टेशन पर रूकी हुई है, वह स्टेशन दिल्ली का था। ट्रेन में चाय बेचने वाला जोर-जोर से चाय-चाय चिल्ला रहा था। बाहर लोग इधर-उधर चीखते-चिल्लाते दौड़ रहे थे कुछ लोग ट्रेन में चढ़ रहे थे तो कुछ उतर रहे थे।

पिताजी ने चाय वाले से हमारे लिए चाय ली और खाने के लिए कुछ बिस्कुट। सर्दियों का समय था इसलिए सभी गर्म-गर्म चाय का लुफ्त उठा रहे थे। स्टेशन पर एक व्यक्ति अखबार और कुछ पत्रिकाएँ बेच रहा था पिताजी ने एक अखबार और एक पत्रिका खरीद ली।

हम सभी अखबार पढ़ते हुए चाय का आनंद ले रहे थे, तभी ट्रेन अपने गंतव्य की ओर चल पड़ी। बाहर कोहरा छाया हुआ था इसलिए कुछ दिखाई नहीं दे रहा था। कुछ समय बाद हमारे डिब्बे में एक व्यक्ति आया, जिसने काली टोपी और काला कोट पहना हुआ था वह सभी की टिकट जांच कर रहा था, वह ट्रेन का 'टीटी' था।

पिताजी ने उन्हें टिकट दिखाया और टिकट देखकर धन्यवाद कहते हुए वे आगे बढ़ गए। रेल तेजी से चल रही थी और अब धीरे-धीरे कोहरा भी कम होने लगा था। मुझे ट्रेन की खिड़की से सूरज दिखाई दे रहा था। यह बहुत ही सुहावना पल था। ट्रेन के बाहर के नज़ारे तो देखने लायक थे क्योंकि बाहर खेत-खलिहान, बाग-बगीचे और छोटे-छोटे गाँव दिखाई दे रहे थे। यह दृश्य बहुत ही मनमोहक था।

कुछ देर के बाद यमुना नदी का पुल आया और ट्रेन पुल के ऊपर से जा रही थी। यह पल मेरे लिए बहुत ही खुशी वाला था क्योंकि मैंने पहली बार इतना बड़ा पुल देखा था और इतनी बड़ी नदी। पुल के ऊपर से बहती हुई नदी को देखना मुझे बहुत अच्छा लग रहा था। दोपहर का समय था ट्रेन एक बड़े स्टेशन पर रुकी और हमें पता

चला कि ट्रेन यहाँ पर 1 घंटे के लिए रुकेगी ताकि सभी लोग भोजन कर सकें। हम भी भोजन करने के लिए प्लेटफॉर्म पर आ गए वहाँ पर चाय, चाट, भोजन आदि की स्टाल लगी हुई थी।

हम सभी हाथ-मुँह धो कर खाना खाने बैठ गए। यहाँ का खाना बहुत स्वादिष्ट था। हम सभी ने पेट भर खाना खाया और फिर प्लेटफार्म पर इधर-उधर घूमने लगे। एक कोने में मैंने देखा कि कुछ बच्चे भीख मांग रहे थे और भूख के मारे उनका बुरा हाल था। मैंने पिताजी को कहकर उन्हें भोजन करवाया और वे धन्यवाद कहते हुए हमारी नज़रों से ओझल हो गए।

कुछ समय बाद ट्रेन की सीटी बजने लगी और ट्रेन चलने को तैयार थी। हम भी ट्रेन के डिब्बे में बैठ गए। एक के बाद एक नया शहर और नए गाँव आ रहे थे गाँव के लोग अपना हाथ हिलाकर हमें बाय-बाय कह रहे थे। मैंने भी हाथ हिलाकर उन्हें संकेत दे दिया।

शाम हो रही थी और ट्रेन पहाड़ी क्षेत्र में प्रवेश करने लगी थी। सूरज पहाड़ों की ओट में डूब रहा था। चारों तरफ लालिमा छाई हुई थी और यह बहुत ही सुहावना एवं मनोरम दृश्य था। ऊँचे-ऊँचे पहाड़ और उन पर पेड़-पौधों की हरी चादर बिछी देखकर मुझे बहुत ही अच्छा लग रहा था।

रेल जब पहाड़ों में घूम रही थी तो उसका इंजन और आगे के डिब्बे दिखाई दे रहे थे ऐसा लग रहा था कि ट्रेन का इंजन वापस घूमकर हमारी तरफ ही आ रहा है, यह देखना बहुत ही रोमांचक था। कुछ समय बाद ट्रेन कटरा स्टेशन पर पहुँच गई थी।

हम सभी ट्रेन से उतर गए और एक टैक्सी में बैठकर वैष्णो देवी के मंदिर की ओर चल पड़े। टैक्सी ने हमें पहाड़ों के नीचे ही छोड़ दिया। माँ वैष्णों देवी का मंदिर पहाड़ पर बहुत ऊँचाई पर स्थित है इसलिए पिताजी ने वहाँ पर जाने के लिए कुछ खच्चर वालों को हमें ऊपर ले जाने के लिए कहा। उन्होंने हमें खच्चर पर बिठाया और पहाड़ों पर चढ़ाई करने लगे। जैसे-जैसे ऊपर जा रहे थे, मैंने नीचे की ओर देखा तो बहुत गहरी खाई बनी हुई थी। यह देखकर एक बार तो मैं सहम गया लेकिन खच्चर वाले भैया ने मुझे संभाल लिया। पहाड़ों के ऊपर से नज़ारा कुछ और ही था वहाँ पर प्रकृति बहुत ही सुंदर लग रही थी। पहाड़ों के ऊपर से पूरा कटरा शहर दिखाई दे रहा था वहाँ पर रंग बिरंगी चमकती लाइटें मन को भा रही थी। लगभग 3 घंटे की चढ़ाई के बाद हम माँ वैष्णो देवी के मंदिर में पहुँच गए और वहाँ पर हमने माँ वैष्णो देवी के दर्शन किए। मैंने पहली बार माँ वैष्णो का मंदिर देखा था यह मुझे बहुत ही अच्छा लगा। वहाँ पर चारों ओर रंग-बिरंगी लाइट लगी हुई थी और मंदिर रंग-बिरंगे फूलों से सजा हुआ था। भोजन के लिए माँ वैष्णो देवी समिति की ओर से भंडारा लगा हुआ था हमने भंडारे में भोजन किया। फिर थोड़ी देर पहाड़ों पर इधर-उधर भ्रमण किया।

थोड़ी देर बार हम वापस नीचे आ गए और अपने घर जाने को तैयार हो गए, तो ऐसी थी मेरी पहली रेल यात्रा। यह मेरे जीवन का सबसे यादगार पल था जिसे मैं आज तक भुला नहीं पाया।

शौर्य मंधान
कक्षा-10 (जीवाजी सदन)

यात्रा-वृतांत

सैर कर दुनिया की गाफिल, ज़िंदगानी फिर कहाँ,
ज़िन्दगी गर कुछ रही तो, नौजवानी फिर कहाँ।

इसी मकसद के साथ कक्षा 10 के छात्रों का एक दल उत्तराखंड की सुन्दर वादी उरोली के लिए रवाना हुआ। यहाँ से हमारी पहली मंज़िल दिल्ली थी। वहाँ हमने ससंद भवन की सैर की, लोदी बाग में समाज सेवा की और दिल्ली की स्वच्छता की ओर एक कदम और बढ़ाया। हमने आस-पास का कूड़ा-कचरा उठाया और उस जगह की मन लगाकर साफ-सफाई की, कितना अच्छा लगता है जब हम समाज को कुछ लौटाते हैं।

वहीं भोजन करने के बाद हम मैट्रो की सैर करने स्टेशन पहुँच गए। सैर के बाद हमने वहाँ पर मौजूद महिलाओं का साक्षात्कार लिया और इस नतीजे पर पहुँचे कि वहाँ की महिलाएँ मैट्रो में सुरक्षित महसूस करती हैं। उसी शाम हमें पुराने किले में भारत के इतिहास से संबंधित एक कार्यक्रम दिखाया गया। आखिरकार हम लोग रात के भोजन के बाद उरोली की सुंदर वादियों के लिए निकल पड़े। रास्ता काफी लंबा था और पूरी रात हमने बस में काटी। अगले दिन हम दोपहर में उरोली की सुन्दर वादियों के बीच पहुँच चुके थे। उस जगह की सुन्दरता को शब्दों में बयां करना असंभव है।

हम सब को हमारे प्रशिक्षकों से परिचित करवाया गया। वहाँ सब बहुत अच्छे और मिलनसार थे। हमें कई समूहों में बाँट दिया गया था और अगले दिन नाश्ते के बाद सब अपनी मंजिल की ओर निकल पड़े। सबके रास्ते कठिन थे क्योंकि हमें अपना रास्ता स्वयं ढूँढ़ना था, अपना खाना स्वयं बनाना था और अपना टेंट स्वयं लगाना था। विपरीत परिस्थितियों में एकजुट होकर किस प्रकार अपनी मंजिल तक पहुँचा जाए, वह हमने इस यात्रा से बखूबी सीखा। बर्फ से ढकी सफ़ेद चोटियाँ नंदा देवी, त्रिशूल पर्वत चोटियाँ इस प्रकार दिखाई दे रही थी मानो प्रकृति ने सफ़ेद चादर ओढ़ रखी हो। 2 दिन की कड़ी मेहनत के बाद हम लोग उरोली पहुँचे। अपने मिशन में कामयाब होने के बाद हम सब लोग गर्व का अनुभव महसूस कर रहे थे। मेरे लिए यह यात्रा बहुत ही सुखद और रोमांचकारी थी। इस यात्रा से मैंने बहुत कुछ सीखा और मुझे प्रकृति का एक अलग ही रूप देखने को मिला।

अदिति जोशी
कक्षा-11 (जयाजी सदन)

मेरी रानीखेत की यात्रा...

बदल जाओ वक्त के साथ, या फिर वक्त बदलना सीखो।
मज़बूरियों को मत कोसो, हर हाल में चलना सीखो।।

हमारे जीवन में कुछ अनुभव ऐसे होते हैं जो बहुत समय तक हमारे मन से नहीं उतरते। ऐसे अनुभव अत्यंत रोमांचक होते हैं।

हमारे विद्यालय द्वारा आयोजित (23-29 अक्टूबर 2018) रानीखेत की 6 दिन की एक छोटी-सी यात्रा मैं भूल नहीं पाता। इस यात्रा के सभी खट्टे-मीठे अनुभव मुझे याद हैं। यात्रा तो इससे पहले भी मैंने कई बार की लेकिन यह मेरी अपने माता-पिता से अलग पहली यात्रा थी। यात्रा से एक रात पहले मैं उत्साहवश सो भी नहीं पाया। यात्रा के दिन हम सुबह 5.00 बजे उठे और ठीक 6 बजे विद्यालय के मुख्य द्वार से बसों में बैठकर रेलवे स्टेशन के लिए निकल पड़े। 8:30 मिनट पर हमारी ट्रेन आई और हम अपने गंतव्य के लिए सवार हो गए। लगभग 5 घंटे की इस दिल्ली तक की रेल यात्रा में हमने गाते-बजाते खूब मजे किए। दिन में 1:30 मिनट पर हम दिल्ली पहुँच गए, जहाँ पहले से ही बसें हमारी प्रतीक्षा कर रही थीं। हमने रानीखेत के लिए प्रस्थान किया। थकावट के कारण पता ही नहीं चला कि कब नींद आ गई। जब रात को रास्ते में मेरी नींद टूटी उस समय पहाड़ी मार्ग पर सफ़र कर रहे थे और बस बहुत धीरे-धीरे चल रही थी।

अभी तक मैंने केवल मैदानी यात्रा ही पूर्ण की थी और मुझे पहाड़ों की यात्रा का बिलकुल भी अनुभव नहीं था। मेरे मित्र ने कहा कि अब बस चढ़ाई पर चल रही है इसलिए धीरे चल रही है। मुझे अब थकान प्रतीत हो रही थी, अत: मैंने बस स्टॉप पर ही चाय ली। यहाँ पर दिल्ली की अपेक्षा मौसम में अधिक ठंड थी। प्रात: 4:00 बजे के लगभग हमारी बस फिर चढ़ाई पर चढ़ रही थी। यह पूरी तरह स्पष्ट दिखाई दे रहा था कि जंगलों को काटकर यहाँ मार्ग बनाए गए हैं। बर्फीली हवाओं से मुझे कँपकँपी महसूस होने लगी। मैं मम्मी-पापा को मन ही मन धन्यवाद देने लगा कि उन्होंने मुझे गरम कपड़े रखने की सख्त हिदायत दी थी। मैंने बैग से अपनी गरम जैकेट निकालकर पहन ली, इसमें थोड़ी गरमाहट का अनुभव हुआ। मैंने उन ठंडी हवाओं में विशेष ताजगी का अनुभव किया। हमारी बस घुमावदार रास्तों से ऊपर की ओर बढ़ती चली जा रही थी।

मैंने अनुभव किया कि वास्तव में इन दुर्गम व जोखिम भरे रास्तों पर एक कुशल व अनुभवी चालक ही बस को चला सकता है। यहाँ पर जरा भी असावधानी सीधे मौत की ओर धकेल सकती है। थकान व कठिनाइयों के बावजूद मुझे मेरी यह पहली पर्वतीय यात्रा सुखद लग रही थी। शहर की भीड़-भाड़ से दूर प्रकृति का वास्तविक आनंद मुझे पुलकित कर रहा था। प्रकृति के इतने करीब होने का सुखद एहसास मुझे पहली बार हुआ। दूर-दूर तक हरियाली ही हरियाली नज़र आ रही थी। बस से नीचे की

ओर फैली घाटियों को देख मन सिहर उठा था। पानी का कल-कल करता स्वर आदि मनोहारी दृश्य मेरे दिलो-दिमाग पर पूरी तरह अपना प्रभाव छोड़ रहे थे। मैंने बैग से अपना कैमरा निकालकर अनेक रमणीय चित्र कैद कर लिए।

लगभग 12 घंटे की यात्रा करने के बाद हम सुबह 4 बजे रानीखेत पहुँचे और सबसे पहले जाकर अपने-अपने कमरों की चाबी ली। थोड़ा आराम करने के बाद हम लोग नहाए और 7 बजे नाश्ता करने के लिए निकल गए। नाश्ता करते समय हमने वहाँ के अध्यापकों से परिचय किया और इसके बाद आराम करने चले गए। दिन में 2 बजे दोपहर के भोजन के समय हमें कई सारी आवश्यक बातें बताई तथा टेंट लगाने के बारे में विस्तार से बताया। अगले दिन यानि 25 अक्टूबर की सुबह हम 6 किलोमीटर के ट्रैक के लिए सभी बच्चे उत्साह से भरे हुए थे। शिवालिक की पहाड़ियों को देखकर मेरा मन गद्‌गद् हो गया।

अगले दिन यानि 26 तारीख को हमने कई साहसिक गतिविधियों में भाग लिया। जिससे जिप लाईनिंग, वर्मा ब्रीज, कमांडो नेट आदि प्रमुख थे। शाम को हम लोग रानीखेत में घूमे, जहाँ 'गोल्फ कोर्स' और 'ऐपल गार्डन' देखे। 27 तारीख की सुबह हम जिम कॉर्बेट के लिए निकले और वहाँ दोपहर का खाना खाने के बाद तुरंत सफारी के लिए निकल गए। वहाँ हमने कई जानवर देखे और उस रात वहीं होटल में रुक गए। 28 तारीख की सुबह 4:00 बजे हम पहाड़ों की रानी से यह कहकर विदाई ली कि भविष्य में फिर एक बार ज़रूर आएँगे। दिन में 1:30 बजे दिल्ली पहुँचने के बाद ग्वालियर के लिए ट्रेन पकड़ी और रात लगभग 8 बजे अपने विद्यालय पहुँच गए। यह थी मेरी रानीखेत यात्रा जिसे मैं कभी नहीं भूल पाऊँगा।

देवर्ष लोकवानी
कक्षा-9 (दौलत सदन)

झीलों की नगरी एक यादगार सफर

यात्रा का अपना एक अलग ही आनंद होता है। हर यात्रा अपने में कई यादें समेटे होती है पर कुछ बहुत ही यादगार होती हैं। गर्मी की छुट्टियों में अधिकतर लोग पहाड़ों की ओर घूमने जाते हैं और इस मौसम में पर्वतों की यात्रा अत्यधिक सुखद होती है। मुझे भी अपने छुट्टियों का फायदा उठाने का मौका मिल गया।

मेरी पहली पर्वतीय यात्रा इस वर्ष गर्मी की छुट्टियों में हुई

जब पिताजी के पुराने मित्र ने नैनीताल में अपने आवास पर एक समारोह रखा और पिताजी को आमंत्रित करने के साथ-साथ ज़रूर आने का आग्रह भी किया और यह भी कहा कि बच्चों को अवश्य साथ लाना। यह सुनकर मुझे बहुत खुशी हुई।

मेरे पापा ने इस आग्रह का सम्मान करते हुए समारोह में जाने के लिए और साथ-साथ नैनीताल घूमने के लिए पाँच दिन की योजना बनायी। हमने 20 मई को नैनीताल के लिए रेल पकड़ी और अगले दिन सुबह 10 बजे वहाँ पहुँच गए। स्टेशन में पिताजी के मित्र हमें अपनी कार से लेने आए हुए थे।

हम उनके साथ उनके घर गए। उन्होंने पिताजी की योजना की तारीफ करते हुए उन्हें आने के लिए धन्यवाद कहा और हमें नैनीताल घुमाने की जिम्मेदारी अपने ड्राइवर को सौंप दी। क्योंकि समारोह तीन दिन बाद था तो हम नैनीताल घूमने निकल गए। नैनीताल के रास्ते बहुत टेड़े-मेढ़े थे और रास्ते के दोनों ओर घाटियों का सुन्दर दृश्य था। कहीं ये घाटियाँ अत्यंत सुन्दर थी तो कहीं इनकी गहराई डरा देने वाली थी। मुझे इन रास्तों को देखकर बहुत डर लग रहा था लेकिन मैंने फिर भी हिम्मत की और यह ठान लिया कि मैं इस यात्रा का पूरा आनंद लूँगा। पर्वतों पर पेड़ों की सुंदरता देखते ही बनती थी। गर्मी के मौसम में भी शीतल हवाएँ मन को अत्यंत सुख दे रही थी। नगर की सड़कें स्वच्छ थी और घर साफ सुथरे थे।

नैनीताल का नाम एक ताल के कारण पड़ा जो वहाँ पर है जिसका नाम भी नैनीताल है। इसी ताल के एक किनारे पर नयना देवी का मंदिर है। मंदिर के निकट अत्यंत खूबसूरत पर्वत हैं जो सबका मन मोह लेते हैं। उसके अलावा भी नैनीताल में कई स्थल हैं जो बेहद मनमोहक हैं। तीन दिन हम काफी घूमे। उसके बाद पिताजी के मित्र

के यहाँ समारोह में सम्मिलित होकर हमने अगले दिन घर के लिए रेल पकड़ी।

नैनीताल की यह यात्रा मेरे लिए बहुत सुखद और यादगार रही। वहाँ की प्राकृतिक सुंदरता ने मन मोह लिया और वहाँ के दृश्यों को मैनें कैमरे में कैद कर लिया। अवसर मिलने पर मैं एक बार फिर ऐसी सुखद यात्रा पर वहाँ अवश्य जाना चाहूँगा। मेरा अपने सभी दोस्तों से यह आग्रह है कि वे एक बार नैनीताल घूमने ज़रूर जाएँ।

आयुष्मान
कक्षा-9

जब मैं मेले में खो गया....

यह बात गर्मियों के मौसम की है, जब मैं अपने पुराने विद्यालय में पढ़ता था। हम लोग अपनी कक्षा में पढ़ रहे थे, कि तभी प्रधानाध्यापक जी का भेजा हुआ चपरासी छुट्टी की सूचना लेकर आया। छुट्टी का नाम सुनते ही मेरा मन प्रसन्नता से खिल उठा। कक्षा अध्यापक जी ने सूचना पढ़कर सुनाई कि कल शनिवार को कुम्भ मेले के कारण छुट्टी रहेगी। मेले का नाम सुनते ही हर्ष का ठिकाना न रहा। माता-पिता के साथ दूसरे दिन मेले में जाने का कार्यक्रम बनाया।

दूसरे दिन प्रातः काल हम परिवार के साथ मेला देखने को रवाना हुए। घर से मेले का स्थान लगभग 5-6 किलोमीटर दूर था। मेले के कारण भीड़ बहुत अधिक थी इसलिए हम लोगों ने पैदल यात्रा करना तय किया। मार्ग का दृश्य बड़ा ही मनोहारी था। कुछ लोग पैदल, तो कुछ मोटर साइकिलों पर सवार थे। कोई रिक्शे से तो कोई तांगे से यात्रा कर रहा था। कहने का मतलब यह है कि मार्ग में बड़ी भीड़ थी।

वहाँ पहुँचकर हम सबने पहले गंगा के पवित्र जल में स्नान किया। इसके बाद हम लोग मंदिर में दर्शन करने गये। दर्शन करने के बाद हमने एक पूड़ी वाले की दुकान पर जाकर भूख शांत की। फिर हम लोगों ने घूमना प्रारंभ किया। मेले में दुकानें सजी हुई थी। कहीं-कहीं दुकानों में रेडियो और 'टेपरिकॉर्डर' अपनी मधुर ध्वनि से दर्शकों के मन मोह रहे थे। कुछ दूर आगे चलकर एक बाजीगर का जमघट दिखाई दिया। हम लोग कुछ देर के लिए तमाशा देखने के लिए रूक गए। मेरा ध्यान कई आकर्षक चीजों की ओर जा रहा था। सबसे पहले मेरा ध्यान एक बांसुरी बजाने वाले की ओर गया और उसकी बांसुरियों को देखकर मेरा मन ललचा गया। मैंने अपने माता-पिता से यह बांसुरी खरीदने के लिए आग्रह किया जिसे उन्होंने अस्वीकार कर दिया।

फिर मैंने एक हलवाई की दुकान पर कुछ खाने की जिद्द की लेकिन इस बार भी मेरी बात को यह कहकर अनसुना कर दिया कि मेले में बिकने वाली खुली वस्तुओं को नहीं खाना चाहिए। अब तो मैं अपने बात पर अड़ गया और जिद पकड़ ली कि जब तक यह नहीं दिलवाओगे तब तक आगे नहीं बढ़ूँगा। और इसी जिद्द के कारण मैं इधर-उधर भागा और अपने माता-पिता से बिछड़ गया। भीड़ इतनी अधिक थी कि देखते ही देखते मैं गुम हो गया और जोर-जोर से चिल्लाने लगा, लेकिन भीड़ में मेरी कोई सुनने वाला नहीं था। मैंने एक ही जिद्द पकड़ रखी थी कि मुझे मिठाई चाहिए। तभी एक भला आदमी आया और पूछा कि आपको क्या चाहिए?

अब तक मेरी समझ में आ चुका था कि मैं अपने माता-पिता से बिलकुल बिछड़ गया हूँ। मैंनें उस सज्जन आदमी से कहा कि मुझे कुछ नहीं चाहिए बस मेरे मम्मी-पापा चाहिए। वह मुझे एक ऐसी जगह पर ले गया जहाँ पर खोये बच्चों के लिए एक पंडाल बनाया गया था। वहाँ पर जाकर खोया-पाया की सूचना माइक पर प्रसारित की गई और कुछ समय बाद मेरे मम्मी-पापा मुझे आकर ले गए। फिर थोड़ी देर इधर-उधर घूमने के बाद हमने एक स्थान पर विश्राम किया। शाम हो गई थी। हमने राममंदिर में जाकर दर्शन कर लौटने का विचार किया। थकने के कारण हम सब तांगे द्वारा घर आ गए। इस प्रकार हमारी मेले की यात्रा सफल हुई। यह यात्रा मुझे ज़िन्दगी भर याद रहेगी।

भव्य धमीजा
कक्षा-9 (महादजी सदन)

मोहक कर देने वाला सौन्दर्य...
लेह-लद्दाख

लेह-लद्दाख मैंने अभी तक तस्वीरों या फिल्मों में ही देखा था, लेकिन लैंडिंग से पहले जब खिड़की से बाहर देखा तो अद्भुत नजारा था। अपनी आँखों पर यकीन नहीं हो रहा था कि इतनी खूबसूरती इसी धरती पर है। इतनी सुन्दर कलाकार सिर्फ प्रकृति ही हो सकती है। असल में, लेह की अद्भुत खूबसूरती इतनी आसानी से आप तक नहीं आती है। वहाँ की हवा में ऑक्सीजन कम है, जिससे हमें शरीर में 'ऑक्सीजन' की मात्रा बनाए रखने के लिए ज्यादा साँसें लेनी पड़ती हैं। वैसे कई लोग पहले दिन के लिए कई दवाइयाँ लेने की सलाह देते हैं। खासकर डाइमॉक्स (DIAMOX) टैबलेट का नाम आप बार-बार सुनेंगे। सुरक्षा नियमों के तहत होटल पहुँचते ही सब अपने कमरों में आराम करने चले गए। निर्देश है कि वहाँ ऑक्सीजन लेवल काफी कम रहता है, सो हमारे शरीर को वहाँ के वातावरण में 'एड्जस्ट' करने हेतु 24 से 36 घंटे देने होते हैं अन्यथा आप सिरदर्द, चक्कर, उल्टी व साँस की तकलीफ से आपना पूरा टूर चौपट कर सकते हैं वातावरण में ढ़लने के लिए हमें दो दिन लेह में ही रुकना पड़ा। इसी दौरान जापानी मोंक द्वारा विश्व शांति हेतु बनाया गया शांति स्तूप देखा जो सचमुच ही शांति का प्रतीक था। बिलकुल बुद्ध की शांत आँखों-सा।

चारों ओर रेतीले भूरे पठार व वैसे ही भूरे पहाड़ नजर आए जैसे इन्हें फिल्मों में देखा था। हवा में अच्छी-खासी ठंडक घुली हुई थी। पहले दो दिन होटल में रुकने के पश्चात ऐसा लग रहा था कि यहीं से वापस जाना पड़ेगा। लेकिन अगले दिन मौसम विभाग की भारी वर्षा की भविष्यवाणी को नकारता हुआ आसमान साफ, नीला व सूर्यदेव अपनी तीखी रश्मियों के साथ हमारा स्वागत कर रहे थे। अगले दिन हम 'तिगसे' गाँव पहुँचे जहाँ हमने समाज सेवा की।

दूसरे दिन सुबह 5:30 बजे उठे, खिड़की से पर्दा हटाया, तो आँखे चौंधिया गई। सूर्य की पहली किरण भूरे पहाड़ों के शिखर पर जमी बर्फ पर पड़ रही थी। ऐसा लग रहा था मानो किसी सुनहरी काया पर मलमल का आँचल डाल दिया हो। 15 मिनट तक गर्म चाय लिए वो नजारा देखते रहे। इसके बाद तिगसे गाँव की प्रसिद्ध मोनेस्ट्री देखने चले गए।

चार दिन थिगसे में समाज सेवा करने के बाद अगले दिन हम त्सो मोरीरी झील के लिए रवाना हुए, जो लेह से करीब 240 किमी दूर है। जाने के 5 से 6 घंटे लगते हैं। बस...यहीं से 'लेह' ने हमें बताना शुरू कर दिया कि मैं ऐसा नीरस नहीं, जैसे हवाई अड्डे पर दिखता हूँ। करीब 12 घंटे की यात्रा करने के पश्चात हम रात को लगभग 8 बजे वापस थिगसे गाँव पहुँचे और रात्रि विश्राम किया। अब हमारा अगला लक्ष्य था स्टोक्ला पास....सुबह लगभग 8 बजे हम अपने शिविर से गंतव्य के लिए निकल पड़े। वर्षा काफी तेज थी और हम सब दुविधा में थे क्या करें? क्या न करें? लेकिन एक सच्चे सिंधियन का कर्तव्य निभाते हुए निकल पड़े, अपने मिशन की ओर.....

लगभग 5-6 घंटे की खड़ी चढ़ाई को पार करते हुए 'स्टोक्ला पास' पहुँचे और अपने अध्यापकों और गाइड के तमाम निर्देशों का पालन अच्छे बच्चों की तरह करते हुए हम 'स्टोक्ला पास' पर नहीं रुके और पूरी घाटी की

सुंदरता आँखों के साथ-साथ कैमरे में कैद करते रहे। कभी भूरी-सूखी बंजर पहाड़ी श्रृंखलाएँ थी, जहाँ ऑक्सीजन की कमी से हरियाली नहीं थी, लेकिन फिर भी विपरीत परिस्थितियों में जिजीविषा का बेहतरीन उदाहरण वहाँ कई जगह झाड़ियों में भरपूर मात्रा में खिले वे गुलाबी फूल थे, जो हमें काफी कुछ सिखा जाते हैं। अगला लक्ष्य था गंधाला पास जो सभी के लिए चुनौती भरा था। पूर्व निर्देशों का पालन करते हुए सभी छात्र, छात्राएँ गंधावा पास होते हुए स्कुए गाँव पहुँचे और एक रात यहाँ रुकने के बाद लेह आए और फिर अपनी मंजिल के लिए रवाना हो गए, यह यात्रा मुझे जीवन भर याद रहेगी......

गौरव अग्रवाल

कक्षा-11 (रानोजी सदन)

राजनीति का समाज से कोई सरोकार नहीं?

तुलसीदास जी ने रामचरितमानस में बहुत ही सुंदर लिखा है- 'परहित सरिस धर्म नहिं भाई' यानि परहित के समान दूसरा कोई धर्म नहीं।

कैसे भूल जाएँ श्री अटल बिहारी वाजपेई जी को, कैसे भूल जाए उनके त्याग ईमानदारी और सेवा को। क्या डॉ. कलाम सामाजिक सरोकार से दूर थे? क्या डॉ. राजेंद्र प्रसाद जो राष्ट्रपति भवन में अपने बर्तन स्वयं धोते थे सामाजिक सरोकार से दूर थे? हमारे लोकप्रिय श्री मनोहर पारिकर की ईमानदारी के किस्से तो आप सभी ने सुने ही होंगे, उनकी राजनीति समाज के लिए नहीं थी?

एक समय था जब स्वयं भगवान राम अपनी प्रजा का हाल अपने गुप्तचरों के द्वारा जानने का प्रयास करते थे। हम उन्हीं पूर्वजों की संतान हैं, जिन्होंने चाणक्य जैसे राजनेता को राजनीति में लाकर उदाहरण प्रस्तुत किया है। विश्व विजयी सिंकदर भी उनसे मिलने उनकी कुटिया पहुँचा था।

कैसे भूल जाएँ उस माँ को, जिसका बेटा देश का प्रधानमंत्री है और माँ दो कमरे के मकान में रहती है। क्या हमारे प्रधानमंत्री सामाजिक सरोकार से दूर हैं? मैं पूछना चाहती हूँ कि जो व्यक्ति 20 घंटे काम करता है उसके आगे नाथ न पीछे पगहा, किसलिए राजनीति में आया है? केवल और केवल जन सेवा के लिए। क्योंकि नर सेवा नारायण सेवा।

यदि राजनीति सामाजिक सरोकार से दूर होती तो कुलभूषण जाधव को बचाने के लिए सारे राजनीतिज्ञ एक न होते। यदि राजनीति सामाजिक सरोकार से दूर होती तो शायद अभिनंदन आज वापस जिंदा न आते।

मैं मानती हूँ कि ऐसी राजनीतिज्ञों की संख्या कम है लेकिन पाँचों उंगलियाँ बराबर नहीं होती। मैं मानती हूँ कि कुछ भ्रष्ट विधायकों के कारण निराशा का माहौल है किंतु दूसरी तरफ हमें योगी जी, उमा भारती जैसे राजनीतिज्ञों के त्याग को भी नहीं भूलना चाहिए।

राजनीति अगर सामाजिक सरोकार से दूर होती तो आसाराम, रामरहीम, रामपाल जैसे बाबा जेल में न होते। राजनीति यदि सामाजिक सरोकार से दूर होती तो तमंचे पर डिस्को करने वाले पार्टी से बाहर न होता।

कैसे भूल सकते हैं उस घटना को जब हमारे नेता अनुसूचित जनजातियों के घर खाना खाकर विश्राम करते हैं। राजनीति यदि सामाजिक सरोकार से दूर होती तो शायद सुषमा स्वराज विदेशों में फँसे भारतीयों की वतन वापसी न करवाती। राजनीति जन भावना से दूर होती तो जयललिता और वाय.एस. रेड्डी की मृत्यु पर कई लोग आत्महत्या न करते।

यदि राजनीति नेताओं का कोई वास्ता न होता तो लेह, लद्दाख में जवानों के बीच होली, दिवाली मनाने न जाते। यदि उनका समाज से सरोकार नहीं होता तो जनता घंटों धूप में खड़ी होकर अपना नेता न चुनती। इसलिए मेरा सुझाव है कि मेरे विपक्षी मित्रों सभी वस्तुओं को एक ही भाव न बेचें।

अदिति जोशी

कक्षा 11 (जयाजी सदन)

राजनीति आज सामाजिक सरोकार से दूर होती जा रही हैं

आज की राजनीति 'जय श्री राम' बोलने, न बोलने की राजनीति है, आज की राजनीति 'वंदे मातरम्' कहने, न कहने की राजनीति है, आज की राजनीति एक-दूसरे पर इल्ज़ाम करने की राजनीति है, लोगों को भ्रमित कर लूटने की चालाकनीति है यह राजनीति।

राजनीति और वो भी समाज के हित में आज एक व्यंगात्मक कथन बनकर रह गया है। यह कथन सिर्फ पुरानी किताबों के दबे पन्नों में अच्छे नजर आते हैं परंतु आज के संदर्भ में तो बिल्कुल नहीं। ऐसा मैं सिर्फ अपने मत का पलड़ा भारी करने के लिए नहीं कह रहे हैं बल्कि इसलिए समर्थन कर रहा हूँ क्योंकि यही समाज की सच्चाई व देश की आवाज़ है, जो अपने तर्को के माध्यम से आज आप सभी तक पहुँचा कर रहूँगा।

आजकल के राजनीतिज्ञों का मूल उद्देश्य तो सिर्फ मत एकत्रित कर सत्ता में अपनी सरकार बनाना रह गया हैं। समाज के हित में काम करने कि बात तो वे बस चुनावी माहौल में कहते हैं। राजनीति अगर हमारे समाज से इतनी ही जुड़ी होती तो आज देश से गरीबी की समस्या जड़ से खत्म हो जाती, बेरोजगारी काफी कम हो जाती, गरीबी रेखा जैसा तथ्य आज समाज में होता ही नहीं। मुझे यह बात समझ नहीं आती कि जो लोग गरीबों के हित में उनके हक के लिए लड़ते हैं, वे लड़ते-लड़ते अमीर कैसे हो जाते हैं तथा गरीब बेचारे वहीं अपनी पुरानी दशा में जीवन यापन करते हैं।

इंदिरा गाँधी सन् 1971 के चुनाव में मशहूर नारा दिया था- 'गरीबी हटाओ' सन् 1971 से लेकर आज 2019 तक कुल 48 साल लग गए लेकिन गरीबी तो भारत से हटी ही नहीं। और इसलिए मैं इस मत का पुरजोर समर्थन करता हूँ कि राजनीति आज सामाजिक सरोकार से दूर होती जा रही हैं।

अपने वक्तव्य के दूसरे तर्क पर बढ़ते हुए कहना चाहूँगा कि वर्तमान में पदस्थ सरकार द्वारा किसी जगह का नाम बदलने के राजनैतिक मुद्दे में समाज का हित कहाँ छुपा है?

इलाहाबाद को प्रयागराज़, मुगलसराय को दीनदयाल नगर, इन सबसे लोगों का क्या फायदा हुआ? आज की राजनीति सिर्फ और सिर्फ इल्जामात पर बसी हुई है फिर चाहे वो 'मोदी जी की साक्षरता पर' या राहुल जी की नागरिकता पर' ही क्यों न संदेह व्यक्त करती नजर आ रही हो।

इसी बात पर कुछ पंक्तियाँ प्रस्तुत करना चाहूँगा।-

'नीली स्याही भी कभी हरा, कभी भगवा रंग बदलती हैं,
राजनीति के बाजार में, हर मजहब की कलम बिकती हैं।'

ये कहाँ के समाज के हित की राजनीति है जहाँ पार्टी दल सत्ता में आने के बाद लोगों से करे गए वादे भूलकर 2014 में पार्टी के लिए 5 पार्टी मुख्यालय केन्द्र बनाती हैं, अपने प्रचार-प्रसार में चुनावी माहौल में 500-600 करोड़ यू ही बहा देती हैं और फिर वही पार्टी योजनाओं के माध्यम से गरीबों और बेरोजगारों को हर महीने 1500 रु. देने की बात करती हैं यह राजनीति! सत्ता में सरकार जमाने की अँधी भूख ने कर्नाटका में Lingayat (लिंगायत) को एक नया धर्म बनाकर समाज को और विभाजित कर लोगों के हित में काम करने का उद्देश्य! यह है राजनीति ?

अपने तीसरे व अंतिम तर्क पर प्रकाश डालते हुए कहना चाहूँगा कि राजनीति में बढ़ते 'धनबल' के सामने जनसेवा बौना नजर आती हैं क्योंकि हाल ही की अंतर्राष्ट्रीय संस्था 'ग्लोबल इंटीग्रिटी' द्वारा जारी रिपोर्ट ने भारत की राजनीति में 'धनबल' को रोकने में अपने-आप को फिसड्डी जताया। भारतीय राजनीति एवं सामाजिक राजनीति का धीरे-धीरे टूटता यह संबंध राजनीति को समाज से दूर ले जाने के साथ-साथ सामाजिक राजनीति का जिम्मा एन.जी.ओ. को सौंपकर आज के राजनीतिज्ञ अपनी नैतिक जिम्मेदारी से

मुक्त होकर राजनीति का रुख ही मोड़ने पर तुले हुए हैं। आज की राजनीति का आधार 'आया राम गया राम' तथा छल ही के हुए चुनावों से सिर्फ 'गड़े मुर्दे उखाड़ने तक' ही सीमित रह चुका है क्योंकि जहाँ सरकारें गरीबों के हित में काम करते-करते बदल जाती हैं वहाँ अमीरों की संख्या में परस्पर बढ़ते हुए अंक इसी बात को एक जोरदार तमाचा देती हैं।

अंत में, चंद पंक्तियाँ अर्ज़ करना चाहूँगा-

'राजनीति तो अब एक धंधा हो गया हैं, आँख वाला भी आज अंधा हो गया हैं:-

हाथ-कमल-झाड़ू बस निशान ही तो अलग हैं,
नेताओं की कहाँ कोई पहचान अलग हैं ।
गरीबों को मुद्दा बनाकर अमीर बन गए लोग,
नेता है अगर डॉक्टर तो जात-पात हैं रोग ।
आदत डाल ली हमने इन मुद्दों के संग जीने की,
मोल नहीं है इस देश में खून और पसीने की ।

भारतीय राजनीति पर संपति व प्रतिष्ठा का प्रभाव, हम सभी के लिए सबसे बड़ी समस्या बन गया है। राजनीति एक ऐसे व्यवसाय में बदल गई है, जिसमें बहुत अधिक पैसा है जिसे कानूनी ढ़ंग से बहुत कम परन्तु निजी स्वार्थो के लिए गैर कानूनी ढ़ंग से बहुत अधिक कमाया जा रहा है। यह एक सार्वभौमिक घटना है जो बड़ी समस्या है। हमारी वर्तमान लोकसभा में लगभग 47% सांसद ऐसे हैं जिन पर किसी न किसी रूप में कोई न कोई आपराधिक मुकदमा दर्ज है। पिछली कई लोकसभा में भी कमोबेश यही स्थिति रही। ये स्थिति बहुत भयावह हो चली है यह प्रतिशत बताती है कि हमारे देश में राजनीति का अपराधीकरण किस गहराई तक हो चुका है। हमें हमारे देश में ऐसे ही कुछ और सख्त कानूनों की आवश्यकता है जो देश में आपराधिक प्रवृत्ति के लोगों के प्रवेश पर अंकुश लगाए। जब तक राजनीति से अवैध धन कमाया जाता रहेगा, तब तक इसे दोष मुक्त या निष्पक्ष नहीं बनाया जा सकता है। अगर भारतीय लोकतंत्र की राजनीति को निष्पक्ष रूप से समृद्ध बनाना है तो राष्ट्र के लिए एक साथ आगे बढ़ने का प्रयास करें और समझें कि इसे करना है?

अभिषेक माहौर
कक्षा-12 बी (माधव सदन)

संगीत सम्राट तानसेन

क्या मानव-कंठ से निसृत संगीत की स्वर लहरी के प्रभाव से आकाश त्वरित ही मेघाच्छन्न हो सकता है और वर्षा हो सकती है अथवा सहस्त्रों दीपक अनायास ही स्वयमेव प्रज्वलित हो सकते है। या फिर आक्रमण करने की उद्यत भयंकर हिंसक पशु किसी वीतराग संन्यासी की भाँति शांत और आत्म-निमग्न-सा स्तब्ध खड़ा रह सकता है? सामान्यतः इस प्रश्न का उत्तर होगा 'नहीं'। इतिहास के मत मंतातरों में न उलझकर यदि जनश्रुतियों की बात करें तो ये असंभव से प्रतीत होने वाले कार्य सहज संभव थे। ग्वालियर के गौरव और नाद-ब्रह्म के अद्वितीय साधक मियां तानसेन के लिए।

तानसेन के जन्मकाल, जन्म-स्थान, जाति और कुल के विषय में इतिहासकार प्रारंभिक रूप से कुछ कहने की स्थिति में नहीं हैं तथापि पं. हरिहर निवास द्विवेदी, महापंडित राहुल सांकृत्यायन और पं. जगन्नाथ प्रसाद मिश्र 'उपासक' ने ग्वालियर के निकटवर्ती गाँव बेहट को ही तानसेन की जन्म-स्थली माना है तथा उनके पिता का नाम

(स्रोत- गूगल फोटो)

मकरंद पाण्डेय बताया है। श्री राहुल सांस्कृत्यान ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक ''अकबर'' में श्री उपासक के संगीत सम्राट तानसेन' शीर्षक आलेख के इस अंश का कि 'तानसेन ग्वालियर के निकटस्थ बेहट ग्राम के निवासी थे। मकरंद पाण्डेय नामक ब्राह्मण के पुत्र तानसेन का जन्म काल 1532 ईसवीं है।' का अनुमोदन किया है। (अकबरः पृष्ठ 39)।

कहा जाता है कि संतान-सुख से वंचित मकरंद पाण्डेय को ग्वालियर के महान संत हजरत मुहम्मद गौस (जिनका पूर्व का नाम अमरदास जी था) के आशीर्वाद से ही पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई थी। तानसेन जन्मजात गायक थे, बाल्यावस्था में ही उनकी गायन-प्रतिभा प्रकट होने लगी थी। इससे प्रसन्न होकर गौस साहब ने तानसेन को अपने पास रखकर गायन की प्रारंभिक शिक्षा प्रदान की। संत का सान्निध्य अक्षय फल प्रदान होता है, अतः ग्वालियर में अपनी प्रारंभिक शिक्षण ग्रहण करने के पश्चात् तानसेन को स्वामी हरिदास के चरणों में बैठकर संगीत-साधना करने का सुअवसर मिला। स्वामी हरिदास के पास रहकर तानसेन ने कई वर्षों तक संगीत की अनवरत साधना तो की ही, साहित्य का भी अध्ययन किया, परिणामतः उनकी काव्य-प्रतिभा भी निखरती चली गई। स्वामी हरिदास जी से शिक्षा ग्रहण करने के उपरांत तानेसन रीवा चले गए। तत्कालीन रीवा नरेश राजा रामचन्द्र बघेल ने आदर पूर्वक तानसेन की प्रतिभा का प्रकाश समग्र भारतवर्ष में फैल चुका था। उनकी यशोगाथा सम्राट अकबर के कानों से भी टकराई। परिणाम यह हुआ कि अकबर के दुराग्रह से विवश होकर राजा रामचंद्र को, तानसेन को अकबर के दरबार में भेजना पड़ा।

पं. हरिहर निवास द्विवेदी के शब्दों में ''इस प्रकार सन् 1564 ई. में ग्वालियर का यह महान् कलावंत, उस समय के संसार की सबसे महान-राज सभा की नवरत्न - माला का मणि बना।'' महान संगीतज्ञ होने के साथ-साथ तानसेन एक सिद्धहस्त कवि भी थे। उन्होंने अनेक पदों की रचना की थी जिनमें से कुछ पद ''राग कल्पद्रुम'' नामक ग्रंथ में संग्रहीत हैं।

कहा जाता है कि तानसेन का विवाह अकबर के दरबार के एक निपुण वीणा-वादक मिश्री सिंह की पुत्री के साथ हुआ था तथा उनके दो पुत्र थे। तानसेन के विषय में किंवदंतियों तो बहुत हैं किन्तु उनमें कितना यथार्थ है और कितनी कल्पना यह कहना कठिन है।

अंततः 26 अप्रैल सन् 1589 ई. को वाणी के इस अन्यतम साधक ने अपनी लोकलीला सँवरण की। तानसेन के प्रथम गुरू संत गौस साहब के मकबरे के निकट ही ग्वालियर में उनकी समाधि है जहाँ प्रतिवर्ष देशभर के अनेक संगीतकार एकत्रित होकर अपनी स्वर श्रद्धांजति समर्पित करते हैं।

तानसेन के समकालीन एक कवि का निम्नलिखित दोहा, अतिशयोक्ति पूर्ण होते हुए भी उनकी अद्भुत गायकी का प्रमाण प्रस्तुत करता है-

विधिना अस जिय जानिकें? शेषहिं दिये न कान।
धरा, मेरू सब डोलते, तानसेन की तान।।

श्री राहुल भारद्वाज
सहायक अध्यापक (विज्ञान)

हमें बीमार कर रही है 'पबजी' की लत

आज अधिकांश बच्चे पबजी जैसे खतरनाक गेम की चपेट में आ चुके हैं। इस तरह के गेम्स के 'एडिक्ट' हो जाने के बाद बच्चे अपने भाई-बहन और दोस्तों से भी बात नहीं करते जो उनके व्यक्तित्व विकास के लिए बहुत ही नुकसानदायक है।

आजकल बच्चों में 'ऑनलाइन गेम्स' को लेकर दीवानगी बढ़ती ही जा रही है। कोई भी नया गेम इंटरनेट पर वायरल होता है तो 'स्मार्टफोन यूज़र' उसे डाउनलोड करने लग जाते हैं। इस समय बच्चों और युवाओं में 'पबजी गेम' काफी छाया हुआ है। मैंने भी यह गेम अपने फ़ोन में सेव कर रखा है।

दिन-रात इस गेम को खेल-खेलकर बच्चों और युवाओं को इसकी बुरी आदत लग चुकी है। एक सर्वे के अनुसार 'गूगल प्लेस्टोर' से अब तक इस गेम को 50 मिलियन से ज्यादा बार डाउनलोड किया जा चुका है। इस आंकड़े से ही अंदाजा लगाया जा सकता है कि आजकल लोगों के बीच इसकी कितनी लोकप्रियता है।

युवा बिना खाए-पिए इस गेम को लगातार खेल रहे हैं। कुछ तो खाना खाते हुए भी यह खेल खेल रहे हैं और यूट्यूब पर इससे संबंधित वीडियो देख रहे हैं। यहाँ तक कि कुछ यूज़र इस गेम के लिए अपनी नींद की कुर्बानी दे रहे हैं, जिसका असर उनके शरीर पर देखने को मिल रहा है।

'पबजी गेम' में कई तरह के 'हाईटेक फीचर' दिए गए हैं। इसमें 'पॉवरफुल साउंड' और 'मोशन सेंसरिंग टेक्नोलॉजी' का भी इस्तेमाल किया गया है। यह एक मिशन गेम है। बहुत ही कम समय में यह इतना ज्यादा लोकप्रिय हो गया है। यह एक प्रकार का एक्शन गेम है, इस वजह से भी

बच्चे इसे ज्यादा पसंद कर रहे हैं। गेम में यूजर्स इंटरनेट की मदद से जुड़ जाते हैं और इस गेम क आनंद लेते है।

पबजी गेम्स के ख़ास फीचर की बात यह है कि इसमें मिशन की शुरुआत करते ही गन, कपड़े और खाना एकत्रित करना पड़ता है। इसके बाद आपके सामने एक के बाद एक यूज़र जाता है, जिसे आपको मारना है। यदि आपको किसी यूज़र ने मार दिया तो आप इस गेम से बाहर हो जाओगे। वहीं यह गेम जीतने के लिए आपको सभी 99 यूजर को मारना पड़ता है यानी जो अंत तक टिकता है, जीत उसी की होती है। इस गेम के दौरान आपको तरह-तरह की गन, हेलमेट, एनर्जी ड्रिंक, कार जैसी कई जरूरी सामग्री मिलती है।

चिकित्सकों का मानना है कि इस तरह का गेम बच्चों को हिंसक बना रहा है। इनका 'कॉन्सेप्ट' ही सबको खत्म करना व अपने को विजयी साबित करने का है। जिसका असर बच्चों के व्यवहार में साफ़ नज़र आ रहा है। मेरा अपने सभी दोस्तों से यह अनुरोध है कि इस प्रकार के कोई भी गेम डाउनलोड ना करें क्योंकि यह हमारे भविष्य के साथ खिलवाड़ है। माता-पिता को भी इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि हमारा बच्चा दिन भर मोबाइल पर बैठकर क्या कर रहा है। माता-पिता दोनों का काम करना भी बच्चों में इस प्रकार के गेम की लत लगने का मुख्य कारण है।

अथर्व कर्वा
कक्षा-10 (दौलत सदन)

हम सांस्कृतिक विभाजन की ओर बढ़ रहे हैं?

भारतीय संस्कृति विश्व की सभी संस्कृतियों में शिरोमणि मानी जाती हैं। इसके अनेक कारण है किंतु आज इसी संस्कृति के कारण भारत धर्म, समुदाय, जाति, भाषा, धर्म के आधार पर बँट रहा है बाकी आग में घी डालने का काम राजनीतिक दलों ने कर दिया। हद तो तब हो जाती है जब राष्ट्रीय पर्वों को भी संस्कृति के चश्मे से देखा जाता है। दीपावली पर हम खूब प्रदूषण फैलाते हैं लेकिन वहीं बकरीद पर हम हाय तौबा मचा देते हैं।

कैसी विडंबना है कि भारत में जन्म लेकर, यहाँ का अन्न खाकर भी वंदे मातरम् और राष्ट्रगान से नफ़रत है। संसद में कुछ नेताओं को वंदे मातरम् कहने पर आपत्ति होते हुए पूरे देश ने देखा है। और इससे बड़ा दुर्भाग्य क्या होगा कि जिस भारत माँ की कोख से जन्म लिया है उसी के टुकडे-टुकड़े करने के बात सरेआम कही गई है।

जो भगवा वस्त्र किसी धर्म के लिए शांति श्रद्धा का प्रतीक है वहीं दूसरे को स्वीकार नहीं। सांस्कृतिक विभाजन का ही तो परिणाम है कि किसी भी व्यक्ति के नाम से आप जान जाते हैं कि वह किस धर्म जाति से संबंध रखता है। मस्तक पर त्रिपुंड, गले में दुपट्टा पंडित वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है। वहीं दूसरी ओर जालीदार टोपी मुसलमान होने का तथा गले में पड़ा क्रॉस का चिन्ह ईसाई होने का प्रतीक है।

अपने त्योहारों को हम तो बड़े उत्साह और जोश से मनाते हैं किन्तु दूसरे समुदाय के त्योहारों से हमें आपत्ति होने लगती है। गणेश विसर्जन के पर्व पर पूरे महाराष्ट्र में 'गणपति बप्पा मोरिया' का नारा लगता है, किन्तु वहीं ईद पर सड़क पर नमाज पढ़ने से दो समुदाय लड़ने-मरने पर उतर आते हैं।

यदि आज हम अपनी संस्कृति का पालन सही ढ़ंग से कर रहे होते तो आज हम शिक्षा के लिए विदेशों के दरवाजे नहीं खटखटा रहे होते। तक्षशिला और नालंदा जैसे विश्वविद्यालय जो हमारी संस्कृति का मूलाधार थे उन्हें आज के विद्यार्थी ने नकार दिया है।

एक समय था जब भारत विश्व गुरु की उपाधि से संबोधित किया जाता था। इसका एक मात्र कारण था हमारी संस्कृति। आज का भारतीय तब तक उच्च कोटि के विद्वानों की श्रेणी में नहीं आता जब तक उसके पास कोई विदेशी डिग्री ना हो।

कितनी बदल गई है हमारी संस्कृति, न त्याग है, न तपस्या, न दया है, न दान।

'अतिथि देवो भव:' अब अतिथि तुम कब जाओगे बन गया है। महोदय कोट, पैंट, टाई विदेशी अपनी आवश्यकता, वातावरण के अनुकूल पहनते हैं लेकिन हम उनकी वेशभूषा पर ऐसे टूट पड़े हैं जैसे महीनों भूखा व्यक्ति रोटी पर टूट पड़ता है।

अंत में मैं बस यही कहना चाहूँगी कि देश सांस्कृतिक विभाजन की ओर ही नहीं बल्कि जातिवाद, शिक्षित-अशिक्षित, अमीर-गरीब, धर्म, संप्रदाय के आधार पर भी बँट रहा है।

अदिति जोशी
कक्षा-11 अ (जयाजी सदन)

'कैसे करेंगे' नाटक का मंचन

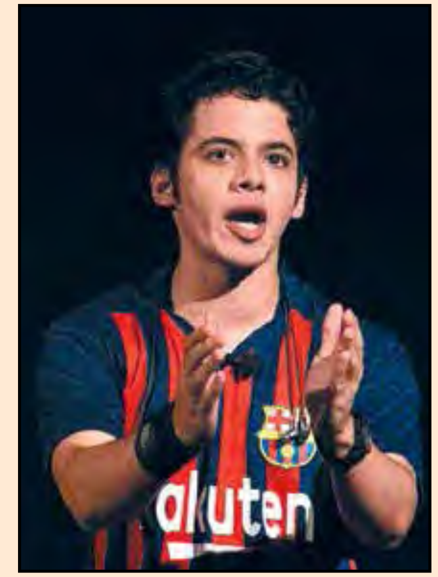

'कैसे करेंगे' नाटक का मंचन दिनांक 12 अगस्त 2019 को विद्यालय के प्रार्थना सभागार में किया गया। नाटक की शुरुआत कुछ इस प्रकार होती है। सौरव को अपने एम.आई.टी. साक्षात्कार के लिए जाने में कुछ दिन बाकी हैं और उसके आवेदन को स्वीकार कर लिया गया है। दुर्भाग्य से, माँ की असामयिक मृत्यु हो जाती है। इस खबर से सौरव तबाह हो जाता है, लेकिन कपिल जितना नहीं, जिसने खुद को अपने कमरे में बंद कर लिया है। कपिल अजीब चीजें करना शुरू कर देता है जो वह कभी पहले नहीं करता था। वह मांसाहारी भोजन करना शुरु कर देता है, शराब पीता है और यहाँ तक की अपनी अलमारी को पूरी तरह से जोर-जोर से बंद करता है। इससे सौरव को विश्वास हो गया कि उसके भाई के साथ कुछ गड़बड़ है और उसने परिवार के डॉक्टर को फोन किया।

डॉक्टर ने खुलासा किया कि कपिल एक बच्चे के रूप में अपने पिता द्वारा शारीरिक रूप से प्रताड़ित किया गया था और यही कारण था कि माँ उसे छोड़कर मुंबई आ गई थी। लेकिन दुर्व्यवहार के कारण, कपिल ने एक ऐसी स्थिति विकसित कर ली थी जिसे लेकिन 'डिसोसिएटिव आइडेंटिटी डिसऑर्डर' कहा जाता था जिसे आमतौर पर 'मल्टीपल पर्सनैलिटी डिसऑर्डर' के रूप में जाना जाता है। कपिल के दो अन्य सहयोगी हैं, सनी, एक मुखर और आत्मविश्वासी व्यक्तित्व, जबकि दूसरा कबीर के नाम से जाना जाता है, जो लखनऊ से 43 वर्षीय कवि हैं। वे उसे बाहरी दुनिया से बचाकर उसकी मदद करते हैं। जब भी कपिल को असहज महसूस होता है, ये सहयोगी कपिल को पकड़ लेते हैं और उनके रूप में चीजें करते हैं।

इस खबर को सुनकर, गौरव ने एम.आई.टी. जाने के अपने आजीवन सपने को त्याग दिया और अपने भाई के साथ वापस रहने का फैसला किया।

सौरव अब तीन व्यक्तियों के साथ रह रहा है। जिनके पास अलग-अलग प्राथमिकताएँ हैं और जीवन के लिए अलग दृष्टिकोण है। दीपक को चाय की ज़रूरत है, सनी केवल कॉफी पीता है, सनी रॉक संगीत सुनता है लेकिन दीपक केवल भजन और पुराने गाने सुनता है। पूरा समाज इस बात से आश्वस्त है कि माँ की मृत्यु के बाद दोनों भाई पागल हो गए हैं। कुछ महीनों के बाद सौरव के प्रतिभाशाली दिमाग का पता चल जाता है।

सौरव एक नई यात्रा शुरू करता है। क्या वह अपने जीवन की सबसे बड़ी इस यात्रा में सफल होगा?

यह प्रश्न इस नाटक ने दर्शकों के ऊपर छोड़ दिया।

गर्वित ठाकुर
कक्षा-10 (जयाजी सदन)

राष्ट्रीय खेल-दिवस: शिक्षकों और छात्रों के मध्य खेला गया मैत्री मैच

हर साल 29 अगस्त को भारत में राष्ट्रीय खेल-दिवस मनाया जाता है। यह दिवस खिलाड़ी मेजर ध्यानचंद की जयंती के दिन मनाया जाता है। राष्ट्रीय खेल-दिवस के अवसर पर शिक्षकों और छात्रों के मध्य एक हॉकी मैच का आयोजन किया गया जो हर साल 29 अगस्त को हॉकी के जादूगर कहे जाने वाले महान खिलाड़ी मेजर ध्यानचंद की जयंती के दिन मनाया जाता है। ध्यानचंद ने भारत को ओलंपिक खेलों में स्वर्ण पदक दिलवाया और अंतराष्ट्रीय स्तर पर भारतीय हॉकी को पहचान दिलाई। उनके प्रति सम्मान प्रकट करने के लिए उनके जन्मदिन 29 अगस्त को हर वर्ष भारत में राष्ट्रीय खेल-दिवस के रूप में मनाया जाता है।

मै आपको उनके बारे में कुछ दिलचस्प बातें भी बताना चाहता हूँ कि ध्यानचंद को फुटबॉल में पेले और क्रिकेट में ब्रैडमैन के बराबर माना जाता है। चूंकि ध्यानचंद रात में बहुत अभ्यास करते थे इसलिए उन्हें अपने साथ खिलाड़ियों द्वारा उपनाम 'चाँद' दिया गया। दरअसल, उनका यह अभ्यास चाँद के निकल आने पर शुरू होता था।

हॉलैंड में एक मैच के दौरान हॉकी में चुंबक होने की आशंका में उनकी स्टिक तोड़कर देखी गई। जापान में एक मैच के दौरान उनकी स्टिक में गोंद लगे होने की बात भी कही गई। ध्यानचंद ने हॉकी में जो कीर्तिमान बनाए, उन तक आज भी कोई खिलाड़ी नहीं पहुँच सका है। उन्हें 1956 में 'पद्मभूषण' से सम्मानित किया गया।

इस महान खिलाड़ी को सम्मान देने के लिए हमारे विद्यालय में एक मैत्री मैच का आयोजन किया गया। उप-प्राचार्य सुश्री स्मिता चतुर्वेदी, 'डीन ऑफ एक्टिविटीज' श्री धीरेन्द्र शर्मा, वरिष्ठ अध्यापक श्री रमेश शर्मा ने सभी खिलाड़ियों से परिचय प्राप्त किया तथा उन्हें खेल भावना से खेलने की सलाह दी। सभी अध्यापक और छात्र अपना सर्वश्रेष्ठ देने में लगे हुए थे। पहले मध्यांतर तक दोनों टीमें एक-एक गोल की बराबरी पर थीं। दूसरे हाफ में 'करो या मरो' के साथ दोनों टीमें मैदान में उतरीं। छात्रों ने दूसरे हाफ के 13वें मिनट में दूसरा गोल कर 2-1 की बढ़त ले ली। इसके बाद शिक्षकों के लिए यह प्रतिष्ठा का प्रश्न बन गया। 27वें मिनट में दूसरा गोल कर नमन सर ने टीम को बराबरी पर ला दिया। मैच समाप्ति पर दोनों टीमें 2-2 की बराबरी पर थी। इस प्रकार इस मैत्री मैच का कोई फैसला न हो सका। अंत में सभी खिलाड़ियों के लिए जलपान का आयोजन किया गया। छात्र और अध्यापक सभी बहुत खुश थे कि स्कूल में इस प्रकार के आयोजनों से छात्र और अध्यापकों के संबंधों में मिठास आती है और एक दूसरे को जानने का अवसर भी मिलता है। खेल के मैदान में आप किसी भी व्यक्ति के बारे में बहुत कुछ जान सकते हैं। विद्यालय के खेल निदेशक श्री नमन सारस्वत ने कहा कि इस प्रकार के मैत्री मैच विभिन्न अवसरों पर आयोजित होते रहेंगे ताकि शिष्य और गुरु का रिश्ता और मजबूत हो सके। इस अवसर पर उप-प्राचार्या सुश्री स्मिता चतुर्वेदी, डीन ऑफ एक्टिविटीज श्री धीरेन्द्र शर्मा सहित कई अध्यापक तथा स्कूल के विद्यार्थी मौजूद थे।

युवराज तोमर
कक्षा-12 (हॉकी कप्तान)

स्व. महाराजा माधवराव सिंधिया अंतर्विद्यालयीन वाद-विवाद प्रतियोगिता 2019-20

प्रत्येक वर्ष की भाँति इस वर्ष भी स्वर्गीय महाराजा माधवराव सिंधिया की पुण्य स्मृति में सिंधिया स्कूल में दिनांक 4-5 अक्टूबर 2019 को अंतर्विद्यालयीय हिंदी वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। निरंतर 18 वर्षो से आयोजित होने वाली इस प्रतियोगिता में देश के कई प्रतिष्ठित विद्यालयों को टीमों ने भाग लिया। इस वर्ष प्रतियोगिता बदले हुए स्वरूप में आयोजित की गई। पहले चरण में कैम्ब्रिज पद्धति, दूसरा टर्न कोर्ट पद्धति और अंतिम चक्र पुन: कैम्ब्रिज पद्धति पर आधारित था। इस प्रतियोगिता में 4 टीमें अंतिम चक्र में पहुँची। पहले चक्र में 'पाकिस्तान से बातचीत ही शांति का एक मात्र विकल्प है', 'नए मोटर व्हीकल कानून से यातायात व्यवस्था में सुधार हुआ है', 'समान नागरिक संहिता' देश हित में है जैसे ज्वलंत विषयों पर वाद-विवाद कर दर्शकों को सोचने पर मजबूर कर दिया।

दूसरे चक्र 'टर्न कोर्ट' पद्धति पर आधारित था, जिसमें वक्ता को विषय के पक्ष के साथ ही विपक्ष में भी अपना वक्तव्य प्रस्तुत करना था। सभी विद्यालयों को एक-एक विषया दिया गया था।

अंतिम चरण का विषय था - **'शिक्षा संसाधनों की मोहताज नहीं'** - सिंधिया कन्या विद्यालय की छात्राओं ने विषय के विपक्ष में बोलते हुए कहा कि आज अगर हमें दुनिया के साथ चलना है तो नई-नई तकनीक को अपनाना ही होगा अन्यथा हम विकास की दौड़ से बाहर हो जाएँगे, आदि उदाहरण देकर प्रतियोगिता का खिताब अपने नाम किया। दूसरा स्थान सायना इंटरनेशनल स्कूल, कटनी को मिला। द सिंधिया स्कूल ग्वालियर को तीसरे स्थान पर संतोष करना पड़ा। सभापति का दायित्व विद्यालय के पूर्व छात्र व जाने माने चिकित्सक डॉ. अंकित कसेरा ने निभाया। विशिष्ट अतिथि के रूप में पूर्व छात्र श्री अतुल टकले ने प्रतियोगिता की शोभा बढ़ाई। निर्णायकों की भूमिका दिल्ली विश्वविद्यालय के व्याख्याता प्रभांशु ओझा, कला मर्मज्ञा सलोनी खन्ना व व्याख्याता अनुराग सिंह शेखर ने निभाई। अंत में उप-प्राचार्या महोदया ने विजेताओं को पुरस्कृत कर सभी का आभार प्रकट किया ।

अंतर्सदनीय हिंदी वाक्-पटुता प्रतियोगिता (वरिष्ठ वर्ग) २०१९-२०

वरिष्ठ वर्ग की अंतर्सदनीय वाक्-पटुता प्रतियोगिता का आयोजन दिनांक 12 अगस्त 2019 को विद्यालय सभागार में किया गया। इस प्रतियोगिता में कक्षा 10वीं से 12वीं तक के प्रतिभावान विद्यार्थियों ने पूर्ण आत्मविश्वास और ओजस्वी स्वर में अपनी प्रस्तुति की छटा बिखेरी। इस प्रतियोगिता के लिए छात्रों को लेखकों और कवियों के नाम पहले ही दे दिए गए थे। छात्रों ने स्वयं ही रचनाओं का चयन किया था। प्रत्येक सदन से दो-दो प्रतिभागियों ने भाग लिया। सभी सदनों ने दृढ़ संकल्प के साथ इस प्रतियोगिता में भाग लेकर प्रतिद्वंदी सदन / प्रतिभागी को पराजित करने के लिए अपना सर्वश्रेष्ठ दिया। निम्नलिखित विद्यार्थियों को प्रतियोगिता का सर्वश्रेष्ठ वक्ता घोषित किया गया और प्रधानाचार्य महोदय द्वारा प्रमाण पत्र प्रदान कर बधाई दी गई।

गद्य-खण्ड -

मेमोय मिश्रा
कक्षा-10 (दौलत सदन)
प्रथम स्थान

ओजल अग्रवाल
कक्षा-11 (माधव सदन)
द्वितीय स्थान

पद्य-खण्ड -

उज्ज्वल मेहरोत्रा
कक्षा-10 (माधव सदन)
प्रथम स्थान

आर्यन रघुवंशी
कक्षा-11 (जयाजी सदन)
द्वितीय स्थान

विजेता सदनों का स्थान निम्नवत रहा -

1. माधव सदन - प्रथम स्थान 2. शिवाजी सदन - द्वितीय स्थान 3. दौलत सदन - तृतीय स्थान

अंतर्सदनीय हिन्दी वाद-विवाद प्रतियोगिता (वरिष्ठ वर्ग)-२०१९-२०

विद्यालय में अंतर्सदनीय हिन्दी वाद-प्रतियोगिता (वरिष्ठ वर्ग) दिनांक 7 सितम्बर 2019 को आयोजित की गयी। यह प्रतियोगिता दो चक्रों में आयोजित की गई। वाद-विवाद के पहले चक्र का विषय था। - 'हम सांकृतिक विभाजन की ओर बढ़ रहें हैं'। प्रत्येक सदन से तीन-तीन प्रतिभागियों ने विषय के पक्ष और विपक्ष में अपने विचार रखे। सभी सदनों ने दृढ़ संकल्प के साथ इस प्रतियोगिता में भाग लेकर प्रतिद्वंदी सदन/प्रतिभागी को पराजित करने के लिए अपना सर्वश्रेष्ठ दिया। जयाजी, माधव, दौलत और रानोजी सदन ने शानदार प्रदर्शन करते हुए अंतिम चरण में जगह बनाई। वाद-विवाद के अंतिम चक्र का विषय था - 'राजनीति सामाजिक सरोकार से दूर होती जा रही है।' चारों सदनों ने अपने तर्कों से निर्णायकों एवं श्रोताओं को सोचने पर मजबूर कर दिया। वक्ताओं के जोशीले एवं प्रभावपूर्ण विचारों को सुनकर ऐसा प्रतीत हो रहा था कि हमारे देश की भावी पीढ़ी अत्यंत सजग एवं जागरूक हो गयी है। माधव सदन ने प्रतियोगिता में अपना श्रेष्ठ प्रदर्शन कर प्रथम स्थान प्राप्त किया।

प्रथम चक्र के सर्वश्रेष्ठ वक्ता रहे-

अदिति जोशी (प्रथम)
कक्षा-11 (जयाजी हाउस)

अभिषेक माहौर (प्रथम)
कक्षा-12 (माधव हाउस)

अंतिम चक्र के सर्वश्रेष्ठ इस प्रकार हैं -

अभिषेक माहौर (प्रथम)
कक्षा-12 (माधव हाउस)

आदित्य पाराशर (द्वितीय)
कक्षा-12 (जयाजी हाउस)

अक्षत करवा (तृतीय)
कक्षा-11 (माधव हाउस)

विजेता सदनों का स्थान निम्नवत रहा-

1. माधव सदन - प्रथम 2. जयाजी सदन - द्वितीय 3. दौलत सदन - तृतीय

अंतर्सदनीय हिंदी वाक्-पटुता प्रतियोगिता (कनिष्ठ वर्ग) २०१८-१९

विद्यालय में अंतर्सदनीय हिंदी वाक्-पटुता प्रतियोगिता (कनिष्ठ वर्ग) दिनांक 27 फरवरी 2019 को आयोजित की गयी। प्रत्येक सदन से चार-चार प्रतियोगियों ने भाग लिया। सभी सदनों ने पूरी तैयारी के साथ इस प्रतियोगिता में भाग लिया। सभी सदनों ने दृढ़ संकल्प के साथ इस प्रतियोगिता में भाग लेकर प्रतिद्वंदी सदन/प्रतिभागी को पराजित करने के लिए अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन किया। निम्नलिखित विद्यार्थियों को प्रतियोगिता का सर्वश्रेष्ठ वक्ता घोषित किया गया और प्रधानाचार्य महोदय द्वारा प्रमाण-पत्र प्रदान किए गए।

गद्य-खण्ड

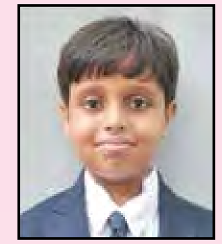

आयुष जैन
कक्षा - 7
प्रथम स्थान

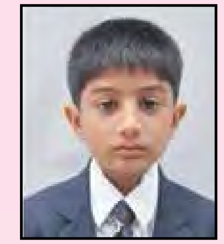

मेधांश त्रिवेदी
कक्षा - 6
द्वितीय स्थान

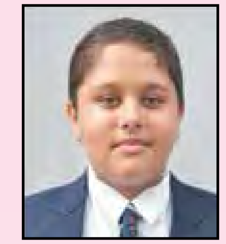

दक्ष बजाज
कक्षा - 7
द्वितीय स्थान

पद्य-खण्ड

अखिल शर्मा
कक्षा - 7
प्रथम स्थान

धर्मेन्द्र सिंह
कक्षा - 7
द्वितीय स्थान

वंश प्रताप
कक्षा - 7
तृतीय स्थान

विजेता सदनों का स्थान निम्नवत रहा -

1. नीमाजी सदन - प्रथम स्थान 2. दत्ताजी सदन - द्वितीय स्थान 3. कनेरखेड़ सदन - तृतीय स्थान

अंतर्सदनीय हिन्दी वाद-विवाद प्रतियोगिता (मध्य वर्ग) 2019-20

मध्य वर्ग की अंतर्सदनीय हिंदी वाद-विवाद प्रतियोगिता दिनांक 7-8 सितम्बर 2019 को आयोजित की गयी। पहली बार यह प्रतियोगिता दो चरणों में आयोजित की गई। वाद-विवाद के पहले चरण का विषय था - **''हमारा देश प्राकृतिक आपदाओं से लड़ने में सक्षम है।''** प्रत्येक सदन से चार-चार प्रतिभागियों ने भाग लिया। पहले चरण की यह प्रतियोगिता 'टर्न कोट' पद्धति पर आधारित थी जिसमें प्रत्येक सदन के दो-दो प्रतिभागियों को अपना मत रखने का अवसर दिया गया। दोनों ही प्रतिभागियों ने विषय के पक्ष और चेतावनी ध्वनि बजने के पश्चात् तुरन्त विपक्ष में अपने विचार रखे। अंतिम चक्र में प्रत्येक सदन से तीन-तीन वक्ताओं ने अपने मत प्रस्तुत किए तथा चौथे प्रतिभागी ने अपने विपक्षी सदन से एक प्रश्न किया जो कि विपक्षी के वक्तव्यों पर ही आधारित था। सभी सदनों ने दृढ़ संकल्प के साथ इस प्रतियोगिता में भाग लेकर प्रतिद्वंदी सदन को पराजित करने के लिए अपना सर्वश्रेष्ठ दिया। शिवाजी, माधव, जयप्पा और महादजी सदन ने शानदार प्रदर्शन करते हुए अंतिम चरण में जगह बनाई। वाद-विवाद के अंतिम चक्र का विषय था- **'आधुनिक प्रगति विनाश का सूचक है।'** युवा पीढ़ी के इन वक्ताओं ने अपने तर्कों से निर्णायकों एवं श्रोताओं को सोचने पर मजबूर कर दिया। महादजी सदन ने प्रतियोगिता में अपना श्रेष्ठ प्रदर्शन कर प्रथम स्थान प्राप्त किया।

प्रथम चक्र के सर्वश्रेष्ठ वक्ता रहे-

राघव प्रताप सिंह (प्रथम)
कक्षा-9 (शिवाजी सदन)

सत्यम राज (प्रथम)
कक्षा-9 (महादजी सदन हाउस)

अंतिम चक्र के सर्वश्रेष्ठ वक्ता इस प्रकार हैं-

सत्यम राज (प्रथम)
कक्षा-9 (महादजी सदन)

आरुष प्रभु (द्वितीय)
कक्षा-8 (माधव सदन)

विजेता सदनों का स्थान निम्नवत रहा-

1. महादजी सदन - प्रथम 2. माधव सदन - द्वितीय 3. शिवाजी सदन - तृतीय

अंतर्सदनीय हिंदी वाक्-पटुता प्रतियोगिता (कनिष्ठ वर्ग) 2019-20

भाषा के विकास को प्रोत्साहित करने का सशक्त माध्यम है- गद्य एवं पद्य खंड पाठ प्रतियोगिता क्योंकि इसमें प्रतिभागी द्वारा शब्दों और कल्पना को बहुत ही सुंदर ढंग से प्रस्तुत किया जाता है। हिंदी कविताएँ हिंदी भाषा की प्रासंगिकता को बनाए रखती हैं। हिंदी-विभाग द्वारा इसी उद्देश्य को ध्यान में रखकर इस प्रकार की प्रतियोगिताएँ प्रत्येक वर्ष हर वर्ग के लिए आयोजित की जाती हैं, जिसमें छात्र बढ़-चढ़ कर भाग लेते हैं।

विद्यालय में अंतर्सदनीय हिंदी वाक्-पटुता प्रतियोगिता (कनिष्ठ वर्ग) दिनांक 10 अगस्त 2019 को आयोजित की गयी। प्रत्येक सदन से चार-चार प्रतिभागियों ने भाग लिया। सभी सदनों ने दृढ़ संकल्प के साथ इस प्रतियोगिता में भाग लेकर प्रतिद्वंदी सदन/प्रतिभागी को पराजित करने के लिए अपना सर्वश्रेष्ठ दिया। निम्नलिखित विद्यार्थियों को प्रतियोगिता का सर्वश्रेष्ठ वक्ता घोषित किया गया और प्रधानाचार्य महोदय द्वारा प्रमाण-पत्र प्रदान किए गए।

गद्य-खण्ड

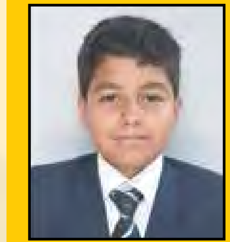

अर्णव जोशी
कक्षा-6 (दत्ताजी)
प्रथम स्थान

विधान खंडेलवाल
कक्षा-8 (जनकोजी)
द्वितीय स्थान

हिया चतुर्वेदी
कक्षा-7 (जनकोजी)
तृतीय स्थान

पद्य-खण्ड

यशवर्धन खत्री
कक्षा-7 (दत्ताजी)
प्रथम स्थान

अर्नव चांडक
कक्षा-7 (कनेरखेड़)
द्वितीय स्थान

अक्षय सुमन
कक्षा-7 (जनकोजी)
तृतीय स्थान

विजेता सदनों का स्थान निम्नवत रहा-

1. दत्ताजी सदन - प्रथम स्थान
2. जनकोजी सदन - द्वितीय सदन
3. कनेरखेड़ सदन - तृतीय स्थान

सुलेख प्रतियोगिता

शैक्षणिक वर्ष 2019-20 में हिंदी-विभाग द्वारा कई रचनात्मक गतिविधियों का आयोजन किया गया, जिसमें से सुलेख प्रतियोगिता भी एक थी। सभी बच्चों की लिखाई सुंदर हो इस पर हिंदी-विभाग द्वारा विशेष ध्यान दिया जा रहा है। छात्रों को सुलेख के प्रति प्रेरित करने के लिए इस प्रतियोगिता का आयोजन दिनाँक 10 अगस्त 2019 को किया गया। विभागाध्यक्ष श्री मनोज कुमार मिश्रा द्वारा छात्रों को सुंदर सुलेख के बारे में विस्तार से समझाया गया। इस अवसर पर प्राचार्य डॉ. सारस्वत ने विजेताओं को प्रमाण पत्र प्रदान किए और कहा कि सुलेख शिक्षा का अहम हिस्सा है और सभी बच्चों को सुलेख सुधारने के लिए सतत् प्रयास करने चाहिएँ।

विजेताओं का क्रम इस प्रकार रहा-

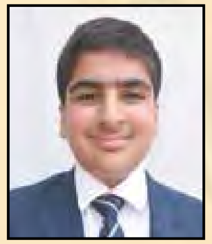

कृष्णव आहूजा
कक्षा-6
प्रथम स्थान

राधव गुप्ता
कक्षा-6
द्वितीय स्थान

अर्णव जोशी
कक्षा-6
तृतीय स्थान

नींव अग्रवाल
कक्षा-7
प्रथम स्थान

हार्दिक गुप्ता
कक्षा-7
द्वितीय स्थान

एकाग्र
कक्षा-7
तृतीय स्थान

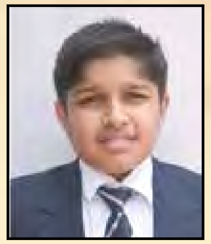

केशव भगत
कक्षा-8
प्रथम स्थान

वेदांश बलासारिया
कक्षा-8
द्वितीय स्थान

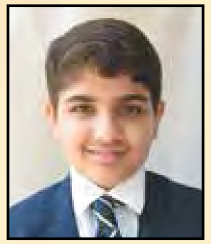

ऋषित मेहरोत्रा
कक्षा-8
तृतीय स्थान

आत्म चिंतन का स्थल है हमारा अस्ताचल......

आधुनिक जीवन की भाग-दौड़ के चलते आज के मनुष्य के लिए ध्यान बहुत ही ज़रुरी हो गया है। यदि आप तनाव और चिंता मुक्त जीवन के साथ ही शारीरिक रूप से स्वस्थ रहना चाहते हैं तो ध्यान को अपनाएँ। अस्ताचल में मात्र पाँच मिनट का ध्यान करने से हमारे जीवन में सकारात्मक ऊर्जा भर जाती है। विद्यालय में दिनभर की व्यस्त दिनचर्या के चलते हम तनाव और मानसिक थकान का अनुभव करते हैं। मुझे लगता है कि ध्यान से तनाव के दुष्प्रभाव से बचा जा सकता है। निरंतर ध्यान करते रहने से हमारे मस्तिष्क को नई ऊर्जा प्राप्त होती है और चिंताएँ कम हो जाती हैं। जब भी मैं भावनात्मक रूप से अस्थिर और परेशान हो जाता हूँ तो अस्ताचल में पाँच मिनट का ध्यान मेरे अन्दर हिम्मत और हौसला बढ़ाता है। प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन में शांति और सुकून चाहता है। इन दो चीज़ों से कोई भी व्यक्ति एक बेहतर इंसान बन सकता है और खुद को ईश्वर के करीब पा सकता है।

हमारे विद्यालय में अस्ताचल एक ऐसा स्थान है जिसे विद्यालय के छात्र, शिक्षक और पूर्व छात्र दिल से चाहते हैं। अस्ताचल हमारे स्कूल की एक बहुत ही महत्वपूर्ण गतिविधि है जिसमें हर छात्र शाम को जाकर आत्मंथन करता है। सूर्यास्त का सुन्दर नज़ारा देख मेरे मन को बहुत ही शांति मिलती है। पक्षियों की चहचाहट, और मोर की कूक सुनकर मन खुश तो होता ही है साथ ही सबके अन्दर एक नई स्फूर्ति का संचार भी भर देता है। मंत्रों का उच्चारण, प्रेरणादायक कहानियाँ, भजन की प्रस्तुति इस शाम को और भी मनोरंजक बना देती है। पूर्व छात्रों की सबसे पसंदीदा जगह है अस्ताचल। शायद यही कारण है कि विद्यालय अस्ताचल पर सबसे अधिक ध्यान देता है। स्कूल के प्रत्येक महत्वपूर्ण कार्यक्रम के बाद अस्ताचल पर गाँधी जी की प्रतिमा पर पुष्प अर्पित करना इस स्थल की गरिमा को और भी बढ़ा देता है।

शुभ गर्ग
कक्षा-10 (माधव सदन)

सांस्कृतिक संध्या....

पुराने समय में गाँव में सारे लोग खाली समय में इकट्ठा होते थे और ढोलक, हारमोनियम आदि कई वाद्य यंत्रों का उपयोग करके खुद का मन बहलाते थे और खुद को तरोताज़ा करते थे। गाँव में जो भी व्यक्ति किसी खास चीज में माहिर होता था, वह सारे गाँव के सामने उस चीज का प्रदर्शन करता था और बाकी लोगों का मनोरंजन होता था। ऐसा ही कुछ हमारे नन्हें कलाकारों ने किया। उनका मानना है कि मनोरंजन के बिना जीवन नीरस हो जाता है, काम के प्रति मन नहीं लगता। नया जोश, नई सोच बनाये रखने के लिए दिमाग को आराम देना जरूरी है, मन को प्रसन्न रखना ज़रुरी है, और ये सब मनोरंजन के द्वारा ही मुमकिन है। पढ़ाई से थोड़ा आराम लेकर अपने मन को मनोरंजित करते रहना चाहिए।

इस वर्ष प्रवेश लेने वाले छात्रों के लिए विद्यालय ने 27 जुलाई 2019 को एक सांस्कृतिक संध्या का आयोजन किया। इस अवसर पर बच्चों ने एक से बढ़कर एक कार्यक्रम प्रस्तुत किए। नये छात्रों ने अपनी प्रस्तुतियों से माहौल में समां बांध दिया। उभरते संगीतकारों, गायकों तथा कलाकारों ने अपनी कला की रंगारंग प्रस्तुति से दर्शकों को ताली बजाने पर मजबूर कर दिया। इस अवसर पर विद्यालय के प्राचार्य, शिक्षक तथा समस्त छात्र उपस्थित थे।

मेरे विद्यालय में शिक्षक-दिवस

सभी बच्चों एवं बड़ों के लिये शिक्षक-दिवस बहुत ही खास अवसर होता है, खासतौर से एक शिक्षक और विद्यार्थी के लिए। अपने शिक्षकों को सम्मान देने के लिये विद्यार्थियों द्वारा यह हर वर्ष 5 सितम्बर को मनाया जाता है। 5 सितम्बर भारत में शिक्षक-दिवस के रूप में घोषित किया गया है। हमारे पूर्व राष्ट्रपति डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन का जन्म 5 सितम्बर 1888 को हुआ था इसलिए अध्यापन पेशे के प्रति उनके प्यार और लगाव के कारण उनके जन्मदिन पर पूरे भारत में शिक्षक दिवस मनाया जाता है। उनका शिक्षा में बहुत भरोसा था साथ ही वह एक सफल शिक्षक और भारत के राष्ट्रपति के रूप में भी प्रसिद्ध थे।

अपने विद्यालय में हमने भी 5 सितम्बर को बड़ी धूम-धाम से मनाया। जैसे ही अध्यापक सभागार में प्रवेश करने लगे वैसे ही छात्रों द्वारा फूलों की वर्षा की गई और जोरदार तालियों से सभी का स्वागत किया गया।

उसके बाद वरिष्ठ कक्षा के विद्यार्थियों ने अपने अध्यापकों को उपहार भी दिए और कुछ विद्यार्थियों ने तो लिखित भाषण भी तैयार किये थे जो प्रार्थना सभागार में पढ़े गए। हमने एक दिन पहले अपनी कक्षा को रंग-बिरंगे पोस्टर से सजाया था। उन पर बहुत अच्छे-अच्छे चित्र अंकित किए गए थे। कुछ छात्रों के अपने-अपने मनपसंद अध्यापक होते हैं। मेरे मनपसंद अध्यापक हमारे गणित के अध्यापक हैं वे मुझे इसलिए ज्यादा पसंद हैं क्योंकि उनका पढ़ाने का तरीका बहुत ही सरल है। वे आम जीवन में बहुत ही सरल हैं इसलिए मैंने उनको कार्ड दिया और कहा कि आप मेरे मार्गदर्शक हैं। इसी तरह सभी बच्चों ने अपने मनपसंद अध्यापक को विशेष उपहार दिए। कुछ बच्चों ने कविता के माध्यम से कक्षा में शिक्षकों का मन लुभाया और कुछ ने अभिनय के रूप में दिखाया कि अध्यापक कक्षा में कैसे पढ़ाते हैं। एक छात्र के जीवन में शिक्षक ही है जो विद्यार्थी को हमेशा सही दिशा दिखाता है। मुझे लगता है कि माता-पिता के बाद यदि हमारी सफलता पर सबसे ज्यादा खुशी होती है तो वह हमारे गुरु को ही होती है।

अब मेरी समझ में आया कि शिक्षक को माँ-बाप से बढ़कर स्थान क्यों दिया गया होगा? क्योंकि एक छात्र का भविष्य शिक्षक की शिक्षा पर बहुत निर्भर करता है। हमें अपने असल जीवन में बहुत सारे ऐसे उदाहरण मिल जाएँगे जिसमें एक शिक्षक का बहुत बड़ा योगदान होगा। मैंने ये सारी बातें अपनी माँ को भी फ़ोन पर बताई जिसके बाद उन्होंने भी अपने पुराने दिनों के बारे में बताया कि वो अपने स्कूल के समय में कैसे ये दिन मनातीं थीं। मेरे पिताजी ने मुझे यह भी समझाया कि अपने शिक्षकों का और अपने से बड़ों का हमेशा सम्मान करना। आखिर में मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि हमने अपने जीवन में

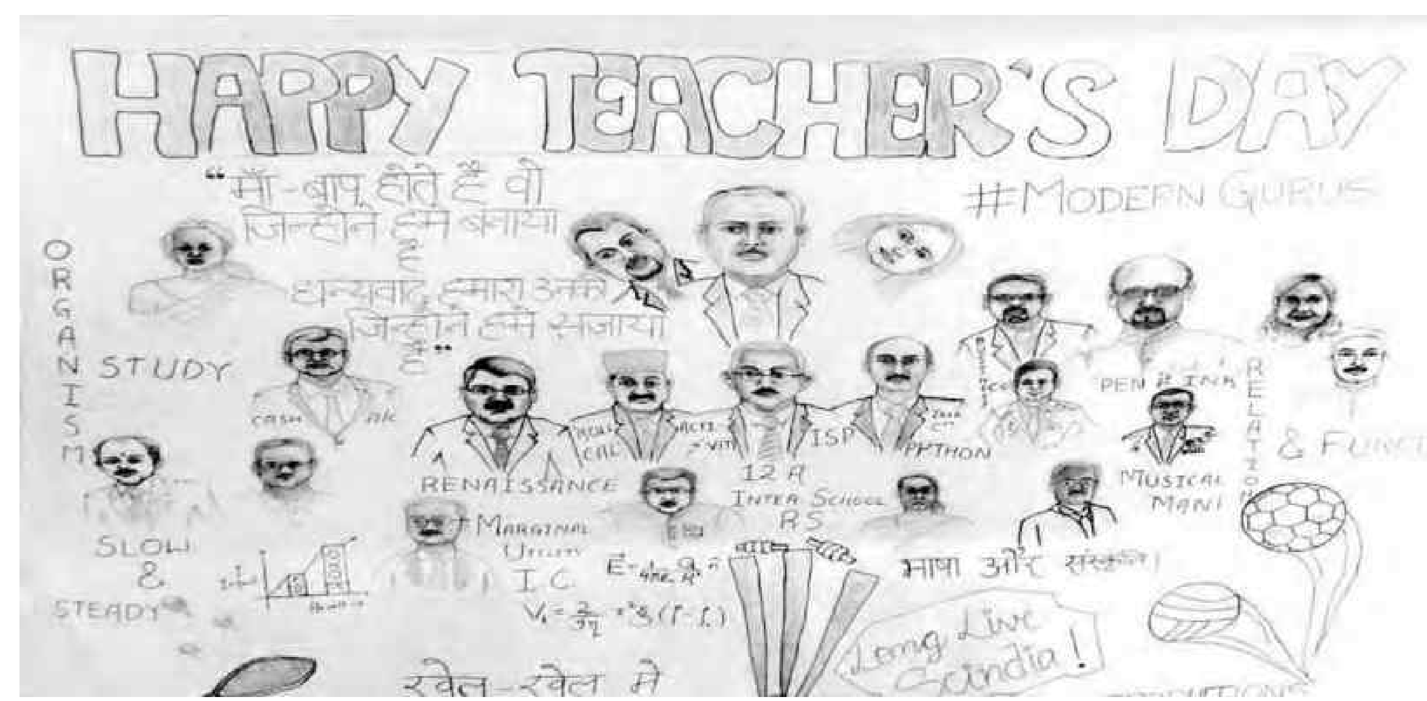

अपने शिक्षकों की अहमियत और ज़रुरत को महसूस करना चाहिए और उनके कार्यों को सम्मान देने के लिये हर वर्ष शिक्षक दिवस धूमधाम से मनाना चाहिये। अब छात्रावास में रहकर मुझे यह भी समझ में आ गया कि हमारे जीवन में माता-पिता से ज्यादा शिक्षकों की भूमिका होती है क्योंकि वो हमें सफलता का मार्ग दिखाते हैं। शिक्षक अपने जीवन में खुशी और सफल तभी होते हैं जब उनका विद्यार्थी अपने कार्यों से पूरी दुनिया में नाम कमाता है। हमें अपने जीवन में शिक्षक के द्वारा पढ़ाए गये सभी पाठों का अनुसरण करना चाहिए।

यह था मेरा अपने आवासीय विद्यालय में पहला शिक्षक दिवस मनाने का अनुभव।

हर्ष उपाध्याय
कक्षा-7 ब (कनेरखेड़ सदन)

बच्चों का डाँटना कितना जरूरी.........

आजकल समय की कमी के कारण अक्सर माता-पिता अपने बच्चों की छोटी-सी ज़िद पर उन्हें डाँट या पीट देते हैं। मैंने अपने पिछले स्कूल की एक पत्रिका में बहुत ही अच्छा लेख पढ़ा था जिसे मैं यहाँ साझा कर रहा हूँ-

एक बार पी.टी.एम. के समय एक शिक्षक ने एक सवाल पूछा था, 'जिन लोगों के बच्चे ज्यादा जिद्दी हैं वह अभिभावक (माता/पिता) अपना हाथ ऊपर करें। 'सभी अभिभावकों ने अपना हाथ ऊपर किया। फिर शिक्षक ने उनसे पूछा कि किन लोगों के बच्चे ठीक से खाना नहीं खाते हैं?' फिर से सभी अभिभावकों ने अपने हाथ ऊपर किए।

फिर शिक्षक ने एक और सवाल किया, 'क्या यहाँ पर ऐसे कोई माता-पिता हैं जिन्होंने अभी तक कभी अपने बच्चों

पर हाथ नहीं उठाया ?' इस प्रश्न पर एक भी हाथ ऊपर नहीं उठता है क्योंकि कभी न कभी ज्यादा परेशानी करने पर माता-पिता अपने बच्चों की पिटाई अवश्य करते हैं। फिर शिक्षक ने एक और सवाल किया, 'अच्छा ठीक हैं! अब मुझे यह बताएँ कि यहाँ पर बैठे अभिभावकों में से ऐसे कौन हैं जिन्हें अपने बच्चों की पिटाई करने से खुशी होती हैं या अच्छा महसूस होता हैं?' फिर से इस प्रश्न पर किसी ने अपना हाथ ऊपर नहीं किया। कुछ अभिभावकों ने साहस कर जवाब दिया कि असल में बच्चों की पिटाई करने पर उन्हें बेहद दुःख होता है, रोना आ जाता है और अपने बच्चों को खुश करने के लिए वह बाद में पसंद की मिठाई या खिलौने लाकर दे देते हैं।

बच्चों को पीटने के सवाल पर सिर्फ एक बार एक पिता ने हाथ ऊपर किया था और जवाब दिया था कि, 'मैंने अभी तक अपने बच्चों को कभी मारा नही हैं। 'शिक्षक भी उनका जवाब सुनकर आश्चर्यचकित रह गए। उन्हें सामने बुलाकर पूछा कि वह ऐसा नियंत्रण कैसे कर लेते हैं। उस पिता ने आगे आकर माइक अपने हाथ में लेकर जवाब दिया कि 'यह पिटाई का ज़िम्मा मैंने अपनी बीबी के हाथों में सौंप रखा है।' उनका जवाब सुन सब लोग अपनी हँसी नहीं रोक पाए। एक और पिता सामने आकर बोले कि मैं अपने काम के सिलसिले में हमेशा बाहर रहता हूँ और इसीलिए मुझे बच्चों की पिटाई का मौका नहीं मिलता हैं। इनका जवाब सुन फिर से सभी लोग हँस पड़े।

बहुत कम अभिभावक ऐसे मिलते हैं जो कहते हैं कि 'हमें हमारे माता-पिता ने कभी नहीं पीटा और इसलिए हम भी कभी अपने बच्चों को नहीं पीटते हैं।' कुछ कहते है कि 'हमने बचपन मैं बहुत मार खाई है और इसलिए यह तय किया कि अपने बच्चों के साथ कभी ऐसा व्यवहार नहीं करेंगे।' और कुछ का जवाब यह रहता है कि, 'आखिर बच्चों को पीटने की ज़रुरत ही क्या है? हम उन्हें समझा भी सकते हैं।'

मुझे आपसे यही पूछना है कि, 'जब आपको अपने बच्चों को पीटने के बाद बुरा लगता है, रोना आता है तो फिर क्यों उठाते हैं ऐसे कदम? कुछ अभिभावक जवाब देते हैं कि 'हमें बच्चों पर गुस्सा आता है और अपना गुस्सा काबू न रख पाने के कारण हम उन पर हाथ उठाते हैं।' ऐसा जवाब देकर अभिभावक भी बच्चों की तरह गलती ही करते हैं। क्या गलती होती है उनको पता हैं? जो

गलती करने पर गुस्सा आने से हम बच्चों को पीटते हैं अगर वही गलती घर के किसी बड़े दादा, दादी या मामा जैसों से हो जाए तो? हम अपना गुस्सा काबू में रखते हैं।

एक बार शिक्षक ने अपने छात्र को स्टेज पर बुलाया और पूछा कि, 'समझो कि स्कूल छूटने के बाद तुम भागते हुए घर पर जाते हो और कमरे में रखी हुई सब्जी की कटोरी तुम्हारे पैर से टकरा जाती है। तुम्हारी माँ ने अभी थोड़ी देर पहले घर साफ़ किया हुआ है और सब्जी की कटोरी गिरने से घर फिर से गंदा हो जाये तो ऐसे में तुम्हारी माँ क्या करेंगी?' छात्र ने थोड़ी देर सोचा और जवाब दिया, 'सबसे पहले तो माँ मेरी थोड़ी पिटाई करेंगी और फिर कहेंगी कि अँधा है, दिखाई नहीं देता तुझे? अभी घर साफ़ किया था मैंने!' छात्र का जवाब सुन सभी अभिभावक हँस पड़े। मैंने उससे कहा, अच्छा जवाब दिया। अब बताओ अगर तुम्हारी जगह अगर तुम्हारे पापा काम से आ रहे हो और उनसे वह सब्जी की कटोरी गिर जाए फिर तुम्हारी माँ क्या करेंगी?' छात्र ने तुरंत जवाब दिया, कुछ नहीं! न तो माँ गुस्सा करेंगी न ही पिटाई करेंगी!! उल्टा माँ ही पिताजी से कहेंगी कि गलती हो गयी मुझसे, मुझे यह कटोरी पहले ही रास्ते से उठा लेनी चाहिए। आप जाइए और अपना पैर साफ़ कर लीजिए।'

छात्र का सच्चा जवाब सुन अभिभावक फिर से हँस देते हैं।

आरूष प्रभू
कक्षा-8 (माधव सदन)

भारत के प्रगति की ओर बढ़ते कदम

भारत को आजाद हुए 72 वर्ष पूरे हो चुके हैं। अगर आज के भारत की तुलना हम 1947 के भारत से करें तो हम इन्हीं बढ़ते कदमों का एहसास होता है। आज यदि हम देश में उपलब्ध सुविधाओं का आनंद उठा पा रहे हैं यह सब इसी प्रगति का परिणाम है। प्रगति का अर्थ मात्र आधुनिकता नहीं होता, इसका अर्थ हर क्षेत्र में विकास होना होता है। भारत में विकास की ओर सफर 1948 में शुरू कर दिया था। हर देश की प्रगति में देशवासियों का महत्वपूर्ण योगदान होता है। हमने अभी भी पूरी तरह प्रगति नहीं की है परंतु विश्व-शक्ति बनने से कोई हमें रोक नहीं सकता।

हर देश में चुनौतियां होती हैं लेकिन हम जिस तरह उनका हल निकालते हैं वह हमारे देश को और मजबूत और एकजुट बनाता है। भारत में भी ऐसी कई समस्याएँ हैं जिनके कारण प्रगति की ओर हमारा सफ़र काफ़ी मुश्किल होता जा रहा है। हमने पश्चिमी संस्कृति को अपना लिया परंतु उनकी सोच नहीं अपना पाए, जिसके कारण न हमारी भारतीय सभ्यता सुरक्षित है न हमारी सोच। प्रगति में लोगों की सोच बहुत महत्वपूर्ण होती है।

हमारे देश के युवा शिक्षित तो हैं लेकिन कहीं न कहीं उनके अंदर आज भी सांप्रदायिकता का भाव है। एक प्रगतिशील देश में इस भावना का होना हानिकारक है। उदाहरण के लिए मैं स्वयं ही यदि किसी मुस्लिम महिला के सामने से गुजरती हूँ तो अजीब सी घृणा मेरे मन में जागृत होती है। यह एक समस्या है हमारे देश के रास्ते में। यदि हमारे अंदर इस भाव की उत्पत्ति होती है तो दो संप्रदायों के बीच दंगों की समस्या अधिक बढ़ सकती है। इस सब के कारण देश की प्रगति पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा।

हमारे देश की परिवहन व्यवस्था जैसी सड़के, रेलगाड़ियाँ, हवाई यात्रा आदि का भी विकास हा रहा है इसके कारण देश-विदेश से आयात तथा निर्यात का समय कम हो चुका है। देश का लगभग हर शहर राष्ट्रीय राममार्ग से जुड़ चुका है। मगर आज भी कई जगहों पर सड़कों की देखरेख में लापरवाही देखी जा सकती है। सरकार ने अपनी ग्रामीण सड़कों की योजना द्वारा कई जगहों को शहरों से जोड़ा है।

सरकार का भी इस प्रगति में मुख्य योगदान है। हम भली-भाँति जानते हैं कि हमारे देश में पिछड़े वर्गों की स्थिति सोचनीय थी। उन्हें आजादी के काफी वर्षों तक अपना हक नहीं मिल पाया। सरकार ने देश के ऐसे वर्गों को बढ़ावा देने हेतु आरक्षण योजना बनाई। इसके अंतर्गत उन्हें कॉलज, स्कूल और अन्य क्षेत्रों में सामान्य लोगों की अपेक्षा ज्यादा लाभ दिया गया। इस कदम के द्वारा लोगों ने न सिर्फ अपने वर्गों का विकास किया है बल्कि देश की प्रगति को भी बढ़ावा दिया है। आजकल महिलाएँ भी अपनी सीमित सीमा लाँघकर कर देश का नाम रोशन कर रही हैं।

आज भारत सेना और हथियारों में किसी देश से कम नहीं है। भारतीय सेना के हथियार अन्य देशों से बनकर आते हैं। इन्हीं के कारण हम दूसरों के साथ अच्छे संबंध

बनाने में सक्षम हैं। इन देशों के द्वारा हम अपनी तकनीकी व्यवस्था को अधिक सुधार पाते हैं।

ऐसे कई उदाहरण हैं जो यह सिद्ध करते हैं कि भारत प्रगति की ओर बढ़ रहा है और आने वाले वर्षों में हम अपने इस लक्ष्य को पूरा अवश्य करेंगे। देश की एकता में ही उसका भविष्य है जो प्रगति के रास्ते में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। हम शीघ्र ही विकासशील देशों की पंक्ति में खड़े होने वाले हैं।

कौन कहता है कि यह सफ़र नहीं आसान, लेकिन हमारे लिए यह है,

क्योंकि हम एकजुट हैं और हमारा भारत महान है।

अदिति जोशी

कक्षा-11 (जयाजी सदन)

वो स्कूल के दिन आज भी याद हैं मुझे

झूठ बोलते थे, फिर भी कितने सच्चे थे हम,
ये उन दिनों की बात है, जब बच्चे थे हम....

हर माता-पिता की यह इच्छा होती है कि अपने बच्चों को चाहे सामाजिक कारणों की वजह ही सही, 'शिक्षित' कराने में कोई कसर नहीं छोड़ते।

मेरे पिता जी रावलपिंडी के गोर्डन कॉलेज के स्नातक थे, मेरी माता जी एक सामंत परिवार की सेवानिवृत 'आर्मी डॉक्टर' की बेटी हैं। मेरे पापा नजीबाबाद जिला बिजनौर में रहते थे और पाकिस्तान से आकर अपना पारिवारिक पेट्रोल पम्प का व्यवसाय करते थे। नजीबाबाद में कोई अच्छा स्कूल न होने के कारण मुझे मेरे पिता जी ने हिंदुस्तान के सर्वश्रेष्ठ विद्यालय सिंधिया स्कूल में भेज दिया।

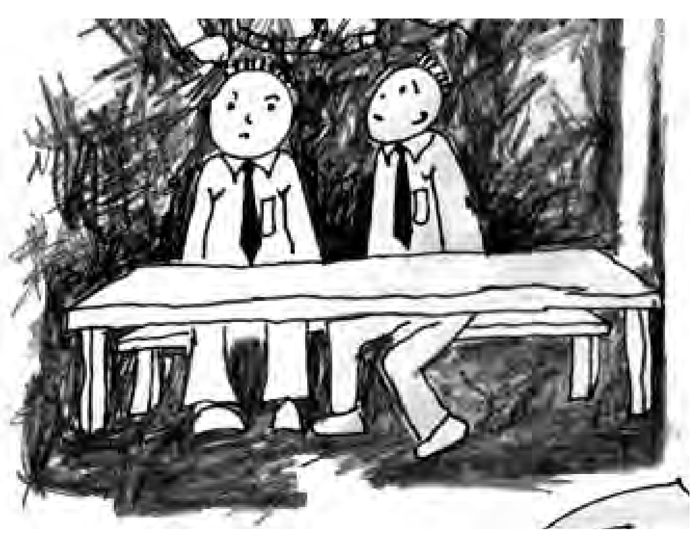

मैं पढ़ाई में जितना अच्छा था उतना ही शरारती भी था। तत्कालीन जूनियर स्कूल की 'हाउस मिस्ट्रेस' सुश्री लकड़ावाला ने पहले ही वर्ष में मुझे जूनियर वर्ग के नाटक में मुख्य किरदार की महत्वपूर्ण भूमिका निभाने को दी। इस नाटक का मंचन विद्यालय के स्थापना दिवस पर किया गया। अब समय आ गया था सीनियर सदन में जाने का....माधव सदन हमारे कुछ मित्रों की पहली पसंद थी, इसलिए हमने माधव सदन ही आवंटित करने का अनुरोध किया। हमारा अनुरोध स्वीकार कर लिया गया और श्री आर.परशुराम (सेवानिवृत मुख्य सचिव, मध्य प्रदेश सरकार) विजय पमनानी, शमशेर बेरी, राज सिंह, अशोक लोहिया और मैं एक साथ माधव हाउस में आये। हमारे 'हाउस मास्टर' श्री पी.एम. खार का हमारे जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ा जो कि संस्कारों के रूप में आज भी मौजूद हैं। जब हमारा विद्यालय अपने स्थापना के शानदार 100 वर्ष मना रहा था तो तब हमने स्कूल जाकर संकल्प लिया कि वर्ष 2018 में अपने बैच की स्वर्ण जयंती में सभी मित्र एक साथ स्कूल में एकत्रित होंगे। मैंने सभी को खोजने का प्रयास शुरू कर दिया। स्कूल से हमें अपने सहपाठियों को ढूँढने में ज्यादा सहायता नहीं मिल पाई। माधव सदन तथा मेरे सेक्शन के मित्रों ने वर्ष 68-69 के स्वर्ण जयंती समारोह के 'चीफ़ कोऑर्डिनेटर' के लिए मेरे नाम का प्रस्ताव स्कूल को भेज दिया। इस महत्वपूर्ण जिम्मेदारी को निभाने के लिए मैंने अपने सभी मित्रों से संपर्क करने का प्रयास शुरू कर दिया। दोस्त मिलते गए और कारवाँ बनता गया। अपनी पहली 'इस्ट जोन' की मीटिंग हमने कलकत्ता में श्री राज सिंह के 'गंगा वाउजर' जहाज पर की। आभारी हूँ श्री अशोक लोहिया जी का जिन्होंने हृदय से सहायता का आश्वासन दिया। डॉ. नन्द किशोर तापिडिया, 'ईस्ट जोन कोऑर्डिनेटर' नरेश मंत्री का सहयोग मैं कैसे भूल सकता हूँ।

इसी क्रम में पंजाबी बाग क्लब, दिल्ली में आयोजित सभा में पद्मश्री राजेन्द्र पंवार जी की उपस्थिति में 'नॉर्थ जोन' की कमान हमने शौर्य चक्र विजेता कर्नल वीरेन्द्र गुलेरिया के हाथ सौंपी।

इसके बाद 'कंट्री हेड कोऑर्डिनेटर' श्री राजसिंह द्वारा भोपाल में आयोजित सभा में अपने सभी 'सेंट्रल जोन' के साथियों को कार्यक्रम की विस्तृत जानकारी दी। श्री अजय सिंह राजगढ़ से अपनी पत्नी के साथ इस कार्यक्रम में

शामिल होने के लिए खास तौर से आए। 'सैंट्रल जोन' की कमान का दायित्व श्री भास्कर नारायण श्रीवास्तव निभा रहे थे।

'बेस्ट जोन' की एक सभा जनार्दन सक्सेरिया ने मुंबई में रेसकोर्स क्लब में रात्रि भोज पर आयोजित की, जिसमें मेरे अलावा राज सिंह, 'वेस्ट जोन कोऑर्डिनेटर' दीपक देशमुख, डॉ. सुभाष पंवार, विजय पमनानी, शंकर आदि मित्रों ने भाग लिया तथा अपने अमूल्य सुझाव दिए। सभाओं के क्रम में 'सैंट्रल जोन' की इंदौर में आयोजित सभा में श्री आर. परशुराम जी, डॉ. अवधेश शर्मा, श्री राम कृष्ण मित्तल, शौर्य चक्र विजेता कर्नल हर्ष कौल, विजय वागमारे, श्री भास्कर आदि दोस्तों ने अपना सहयोग दिया। 23 जनवरी को सभी मित्र तयशुदा कार्यक्रम के तहत ग्वालियर पहुँच गए थे।

24 जनवरी को कर्नल हर्ष ने सभी मित्रों के लिए जयविलास पैलेस देखने की खास व्यवस्था की थी। इस शाम के अविस्मरणीय बनाने के लिए होटल उषा किरण में श्री राजसिंह, उपेन्द्र गुप्ता तथा अशोक लोहिया ने स्वर्ण जयंती समारोह के लिए विशेष रूप से 'गोल्डन जुबली केक' के साथ-साथ सांस्कृतिक कार्यक्रम एवं भोजन का आयोजन किया था। सबसे पहले अपने 18 दिवंगत साथियों और अपने सम्मानित गुरुजनों को श्रद्धांजलि देते हुए सभी की आँखें नम हो गई। दिवंगत साथियों में से 10 मित्रों के परिवारों के सदस्यगणों को बैच ने स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। इस कार्यक्रम में श्री आर.परशुराम द्वारा विद्यालय के प्राचार्य डॉ. माधव देव सारस्वत का स्वागत किया। इस अवसर पर उप-प्रचार्या सुश्री स्मिता चतुर्वेदी, डायरेक्टर एलुमनी श्री जी.एस. बक्शी भी मौजूद थे। कार्यक्रम का संचालन श्री हरीश भोजवानी कर रहे थे।

अगले दिन 25 जनवरी को नाश्ता करने के बाद होटल 'सेंट्रल पार्क' में सभी साथियों ने अपनी स्कूल की यादों को अपनी पत्नियों के साथ ताज़ा किया। अब वह घड़ी भी निकट आ गई थी जिसका हम सभी को इंतजार था। भोजन के पश्चात् हमने अपने पूर्वनिर्धारित योजना के तहत विद्यालय के लिए प्रस्थान किया जहाँ हमारा भव्य स्वागत किया गया। इस विद्या के मंदिर में प्रवेश करते ही वर्षों पुरानी यादें ताज़ा हो गई और सभी साथी भावुक हो गए। प्रार्थना सभागार में प्राचार्य डॉ. सारस्वत ने बैच का स्वागत कर संक्षेप में परिचय करवाया। श्री उपेन्द्र गुप्ता, श्री राज सिंह, श्री अशोक लोहिया, श्री संजीव कठपालिया, श्री शमशेर बेरी एवं माधव पुरस्कार से समानित श्री आर. परशुराम ने अपने विचार रखे। मैंने सभी का धन्यवाद अदा किया और बच्चों को आशीर्वाद दिया। इस शुभ अवसर पर हमने अपनी बैच की ओर से चार ट्रॉफी स्कूल को समर्पित की । हमने आधुनिक शिक्षा प्रणाली पर एक कार्यशाला का आयोजन करने का प्रस्ताव भी दिया जिससे स्कूल को लाभ पहुँचेगा। इस मौके पर हमारी एक मात्र महिला सहपाठी श्रीमती सुनीता सिंह शिकोहाबाद से, श्री शमशेर बेरी, प्रदोष चक्रवर्ती तथा नीरज मोहन लाल जो खास तौर पर अमेरिका से आए थे, भी मौजूद थे। शाम को आत्ममंथन के लिए अस्ताचल गए और उसके बाद ग्वालियर के प्रसिद्ध किले का भ्रमण किया। रात्रि भोज की व्यवस्था होटल सेंट्रल पार्क में सांस्कृतिक कार्यक्रम के साथ की गई थी जहाँ सभी साथियों ने स्कूल की पुरानी यादें ताज़ा की।

26 जनवरी की मार्चपास्ट की कमान हमारे दो शौर्य चक्र विजेता कर्नल हर्ष कौल तथ कर्नल वीरेन्द्र सिंह गुलेरिया के साथ कर्नल वीरेन्द्र सिंह चौधरी के हाथों में थी। श्री अशोक लोहिया पगड़ी पहन कर मार्चपास्ट की शोभा

बढ़ा रहे थे। प्राचार्य डॉ. सारस्वत द्वारा हमारे मार्च पास्ट की सराहना करना हमारे लिए गौरव की बात थी। इसके पश्चात अस्ताचल पर आयोजित कार्यक्रम में हमने 'बैटन' अगले वर्ष के बैच को सौंप प्राचार्य महोदय के निवास पर जलपान के लिए प्रस्थान किया। जहाँ सभी ने एक बोर्ड पर अपने हस्ताक्षर कर इस समारोह को यादगार बनाया। शाम को होटल सेन्ट्रल पार्क में गज़ल का एक विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया था। रात्रि-भोजन करने के पश्चात सभी ने एक-दूसरे से विदाई ली। स्वर्ण जयंती समारोह की इस सफलता का श्रेय श्री आर. परशुराम, श्री राज सिंह, श्री अशोक लोहिया, श्री उपेन्द्र गुप्ता तथा सभी 'जोनल कोऑर्डिनेटर' खास तौर पर दीपक देशमुख को जाता है। इस समारोह को सफल बनाने में हमारे सहपाठियों की पत्नियों का विशेष योगदान रहा जिनका मैं सदैव आभारी रहूँगा।

अनिल घई (पूर्व छात्र) मो. 9911257201

अध्यक्ष, गोल्डन जुबली बैच 1968-69

क्या हम अपने कर्म अनुसार फल भोगते हैं?

इस संसार में मानव ने बहुत प्रगति की है। हम अपने बच्चों को नैतिक शिक्षा, सामाजिक ज्ञान आदि प्रदान करते हैं। सच्चाई और अच्छाई का रास्ता सबसे अच्छा पथ है, ऐसा बहुत लोग कहते हैं, लेकिन मैंने अनेक किस्से देखे हैं, जिनमें इसका उल्टा होता है। इस बात को मैं महाभारत के कर्ण से सिद्ध करना चाहूँगा-

कर्ण एक क्षत्रिय थे जो एक रथ-चालक के पुत्र थे। और इसी कारण वह सभी निशानेबाजी नहीं सीख पाए। फिर कर्ण ने परशुराम की शरण ली और उनसे झूठ बोला कि मैं ब्राह्मण-पुत्र हूँ, यह सत्य समझकर परशुराम ने ब्रह्मास्त्र के प्रयोग की शिक्षा दे दी। परशुराम का प्रण था कि मैं सिर्फ ब्राह्मणों को ही अस्त्र-शस्त्र की शिक्षा दूँगा। परशुराम ने कर्ण को अन्य कई अस्त्र-शस्त्रों की शिक्षा दी और कर्ण पूर्ण रूप से अस्त्र-शस्त्र में पारंगत हो गए।

फिर एक दिन जंगल में कहीं जाते हुए परशुराम जी को थकान महसूस हुई, उन्होंने कर्ण से कहा कि वे थोड़ी देर सोना चाहते हैं। कर्ण ने उनका सिर अपनी गोद में रख लिया। परशुराम गहरी नींद में सो गए। तभी कहीं से एक कीड़ा आया और कर्ण की जांघ पर डंक मारने लगा। कर्ण की जांघ पर घाव हो गया । लेकिन परशुराम की नींद खुल जाने के भय से वह चुपचाप बैठे रहे, घाव से खून बहने लगा। बहते खून ने जब परशुराम को छुआ तो उनकी नींद खुल गई। उन्होंने कर्ण से पूछा कि तुमने उस कीड़े को हटाया क्यों नहीं ? कर्ण ने कहा कि आपकी नींद टूटने का डर था इसलिए। परशुराम ने कहा किसी ब्राह्मण में इतनी सहनशीलता नहीं हो सकती है। तुम जरूर कोई क्षत्रिय हो। सच-सच बताओ। तब कर्ण ने सच बता दिया।

क्रोधित परशुराम ने कर्ण को उसी समय शाप दिया कि तुमने मुझसे जो भी विद्या सीखी है वह झूठ बोलकर सीखी है इसलिए जब भी तुम्हें इस विद्या की सबसे ज्यादा आवश्यकता होगी, तभी तुम इसे भूल जाओगे। कोई भी दिव्यास्त्र का उपयोग नहीं कर पाओगे। महाभारत के युद्ध में हुआ भी यही। इसी श्राप के कारण कर्ण की कुरुक्षेत्र में मौत हुई थी।

कर्ण की आदत थी कि वे हमेशा बिना कुछ सोचे दूसरों की सेवा करते थे। कहते हैं कि एक बार किसी ब्राह्मण ने कर्ण से अपनी पत्नी की आखिरी इच्छा के अनुरूप चंदन की लकड़ियों की माँग की। कर्ण के समक्ष स्थिति यह थी न तो महल में और न ही बाजार में कहीं चंदन की लकड़ियाँ मौजूद थी। परंतु कर्ण तुरंत अपने कोषाध्यक्ष को महल में लगे चंदन के खम्बे निकाल कर ब्राह्मण को देने की आज्ञा दे दी। चंदन की लकड़ियाँ लेकर ब्राह्मण चला गया और अपनी पत्नी का दाह संस्कार संपन्न किया।

यह भी कहा जाता है कि जब कर्ण मृत्यु शैया पर थे तब कृष्ण ने उनके पास उनके दानवीर होने की परीक्षा लेने के लिए आए। कर्ण ने कृष्ण को कहा कि उसके पास देने के लिए कुछ भी नहीं है। ऐसे में कृष्ण ने उनसे उनका सोने का दाँत माँग लिया। कर्ण ने अपने समीप पड़े पत्थर को उठाया और उससे अपना दाँत तोड़कर कृष्ण को दे दिया। कर्ण ने एक बार फिर अपने दानवीर होने का प्रमाण दिया। जिससे कृष्ण काफी प्रभावित हुए। कृष्ण ने कर्ण से कहा कि वह उनसे कोई भी वरदान माँग सकते हैं। दूसरा उदाहरण कुछ ही साल पहले सिंधिया स्कूल में एक नाट्य प्रस्तुति हुई थी। उसका नाम 'चरणदास चोर' था। इस नाटक में चरणदास नामक चोर एक प्रतिज्ञा लेता है जैसे कि कभी झूठ न बोलना और हमेशा सच बोलना।

परंतु नाटक में आगे बढ़ने पर हमें यह पता चला कि उसकी मौत अपनी प्रतिज्ञा के कारण ही हो जाती है। अब जिस सवाल के बारे में सोचता हूँ वह है, इन दोनों हिस्सों में अच्छाई में किसी ने उनका साथ नहीं दिया और उन्हें आखिरी में मौत का सामना करना पड़ा। जिस कर्म के बारे में हम पढ़ते हैं। 'जैसी करनी, वैसी भरनी' क्या यह मंत्र ही गलत है।

कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जो कहते हैं कि नियम तोड़ने के लिए बनाए जाते हैं। बहुत लोग यह सोच सकते हैं कि यह बचपन है पर मुझे यह लगता है कि इन कहावतों का भी वजूद है। लोगों के जीवन में अनेक पल ऐसे ही आते हैं जब वह अपने नैतिक विचारों का मान नहीं रख पाते हैं। यह सब कहकर मैं लोगों को बुरे कार्य करने के लिए नहीं उकसाना चाहता, परंतु मेरा एक साधारण सवाल है- 'क्या हम अच्छे और बुरे का फर्क जानते हैं' क्या हम इंसानियत और जीवन के नियमों को अच्छे से समझते हैं ?

मेमोय मिश्रा

कक्षा-10 (दौलत सदन)

एक मुलाकात दर्शील सफारी के साथ...

'तारे जमीन पर' फिल्म में ईशान का किरदार निभाने वाले बच्चे को हम सभी जानते हैं। हमेशा परेशान दिखने वाला, कुछ अलग सोचने वाला, अजीब से दांत और भोली-सी मुस्कान वाला ईशान नंद किशोर अवस्थी यानि दर्शील सफारी। 2007 में रिलीज हुई आमिर खान की फिल्म 'तारे जमीन पर' में ईशान अध्यापक की नज़र में एक मंदबुद्धि बच्चा है, जिसे कितना भी समझाओ उसे कुछ समझ नहीं आता और सभी साथी बच्चे उसका खूब मजाक उड़ाते हैं। जिसकी वजह से वो एक जिद्दी बच्चे के जैसा व्यवहार करता है। उसके व्यवहार से तंग आकर उसके माता-पिता उसे आवासीय विद्यालय में छोड़ आते हैं। जहाँ वो आमिर खान से मिलता है। आमिर खान उस बच्चे की प्रतिभा को पहचानता है और यहीं से ईशान अपने पढ़ाई की परेशानी से उभरने में कामयाब होता है। इस फिल्म में दर्शील का अभिनय देख सब दंग रह गये। उन्हें देख ऐसा लगा ही नहीं कि ये उनकी पहली फिल्म है। उनकी इस फिल्म ने खूब वाहवाही भी बटोरी।

तो हम अपने पाठकों को बता दें कि ईशान का किरदार निभाने वाले दर्शील सफारी अब बड़े हो चुके हैं और

उनकी आकृति अब काफी बदल गई है। 'उपलब्धि' संपादक मंडल के सदस्यों को अपने विद्यालय में आउट ऑफ़ बॉक्स की प्रस्तुति 'ऐसा क्यों होता' के दौरान उनसे बातचीत करने का अवसर मिला - प्रस्तुत हैं इसी साक्षात्कार के कुछ अंश:-

अभिषेक माहौर- आपने अभिनय की दुनिया में कैसे कदम रखा ?

दर्शील- अभिनय की दुनिया में जाने की मेरी पहले से कोई योजना नहीं थी। 'तारे ज़मीन पर' के लिए ऑडिशन चल रहा था और मैं भी चला गया। यह मेरा सौभाग्य था कि मुझे यह रोल मिल गया। मैं नाटकों में काम करने का अधिक इच्छुक था। मेरे मित्र अभिषेक पटनायक ने एक बार मुझसे पूछा कि क्या फिल्म में अभिनय करना पसंद करोगे ? मैंने 'हाँ' कह दिया और इस प्रकार मैंने फ़िल्मी दुनिया में कदम रखा।

अदिति जोशी- अभिनय के क्षेत्र में आप स्वयं आना चाहते थे या फिर आपके माता-पिता की इच्छा थी ?

दर्शील- मेरे माता-पिता का आशीर्वाद हमेशा ही मेरे साथ रहा। उनकी यह तो इच्छा नहीं थी कि मैं अभिनय के क्षेत्र में काम करूँ लेकिन उनका मुझ पर पूर्ण विश्वास था और उन्होंने मुझे अभिनय के क्षेत्र में जाने के लिए मना भी नहीं किया।

अभिषेक माहौर- छोटी सी उम्र में आपने ईशान की भूमिका में अपना लोहा मनवा लिया। इसके लिए आपको घंटों मेहनत करनी पड़ी होगी। क्या इससे आपका बचपन प्रभावित नहीं हुआ ?

दर्शील- परिश्रम का कोई 'शॉर्टकट' नहीं है। कुछ अलग करने के लिए मेहनत तो आपको करनी ही पड़ेगी। व्यस्त रहने के कारण मैं कक्षा 4 में फेल भी हो गया था।

मेरे लिए शूटिंग सेट पर ही ट्यूटर की व्यवस्था की गई थी। विद्यालय में पास होने के लिए कृपांक का कोई प्रावधान नहीं था, हालाँकि मेरी उपलब्धि को देखते हुए मुझे फेल होने के बावजूद भी कक्षा पाँच में प्रवेश दे दिया गया था।

अदिति जोशी- छोटी-सी उम्र में आपने कई प्रतिष्ठित पुरस्कार जीते हैं ? सर! क्या अपने इस अनुभव को हमारे साथ साझा करेंगे ?

दर्शील- मेरे और मेरे परिवार के लिए यह बहुत ही गर्व की बात थी कि मुझे इस छोटी-सी उम्र में ही राष्ट्रीय स्तर के पुरस्कार से नवाज़ा गया। इस पुरस्कार से मुझे जीवन में आगे बढ़ने की प्रेरणा मिली और यह आभास भी हो गया कि मुझे अपना भविष्य अभिनय के ही क्षेत्र में बनाना है। मेरी अभिनय कला की कई लोगों द्वारा सराहना की गई।

अभिषेक माहौर- फिल्म जगत में अपना आदर्श किसे मानते हैं ?

दर्शील- ऋतिक रोशन को, क्योंकि ऋतिक रोशन भी एक अच्छे डांसर हैं और मुझे भी बचपन से डांस का शौक था। जब भी मैं फिल्में देखता था तो श्रेष्ठ अभिनय करने वाले कलाकार को अपना आदर्श मान लेता था। हर मेहनती कलाकार मेरे लिए प्रेरणास्रोत है।

अदिति जोशी- यदि आप अभिनेता न होते हो क्या होते है ?

दर्शील- यदि मैं अभिनेता न होता तो मैं डांस के क्षेत्र में अपना भाग्य आजमाता क्योंकि डांस मेरा बचपन से ही पहली पसंद था। मुझे अपने ऊपर पूरा विश्वास था कि मैं जिस भी क्षेत्र में जाऊँगा वहाँ अपनी मेहनत के बल पर सफलता हासिल कर लूँगा।

अभिषेक माहौर- सर! आप हमारे विद्यालय के विद्यार्थियों को क्या संदेश देना चाहेगें ?

दर्शील- माता-पिता का मार्गदर्शन और उनका सहयोग किसी भी व्यक्ति के जीवन में अहम् रोल अदा करता है। सम्प्रेषण कला का हमारी सफलता में बहुत बड़ा योगदान है इसलिए अपने विचारों को प्रकट करने की कला हर छात्र को आनी चाहिए। लोगों की सलाह अवश्य लें लेकिन करें वही जो आपको पसंद है।

मेरा पहला नुक्कड़ नाटक

मैं हमेशा की तरह अपनी जर्मन कक्षा में पढ़ रहा था, तभी मेरे जर्मन अध्यापक ने बताया कि पर्यावरण पर एक नुक्कड़ नाटक तैयार करना है। पूरे सिंधिया विद्यालय से मात्र 10 बच्चों का चयन होना था। मैंने जैसे ही सुना मैं बहुत खुश हो गया,

क्या पता उसमें मुझे भी मौका मिल जाए?

बच्चों के चयन का दिन आया और मैं पूरा घबरा रहा था कि न जाने क्या होगा ?

हमारे जर्मन अध्यापक की जगह भाविन सर बच्चों का चयन कर रहे थे। मेरा नंबर आया और उन्होंने मुझे कुछ अभिनय करने को कहा, मैंने अपने मन को संभाला और एक अभिनय कर दिया। दो दिन बाद परिणाम आए और मैं घबरा गया जब 7 बच्चों के नाम घोषित हुए और उनमें से मेरा नाम नहीं था। जब मेरा नाम सबसे आखिर में पुकारा गया तब दिल को ठंडक मिली और मैं चैन से बैठ गया। यह मेरी जिंदगी का पहला नाटक होने वाला था।

अगले दिन से हमने उस नुक्कड़ नाटक पर काम शुरू कर दिया था। मुझे बहुत दिक्कत हुई क्योंकि हमें नुक्कड़ नाटक जर्मन में करना था और यह बहुत मुसीबत वाला काम था क्योंकि मेरी आदत जर्मन बोलने की थी ही नहीं। मैंने अपने ऊपर काम किया और अपने अध्यापक के साथ दिन में 6 घंटे मेहनत कर अपनी कमियों को ठीक करता रहा। हमें नुक्कड़ नाटक करने दिल्ली जाना था क्योंकि प्रतियोगिता 'गोइदा इंस्टीट्यूट' ने कराई थी और इसी कारण निर्णायक भी जर्मनी के थे। हमें हर चीज का विशेष ध्यान रखने को कहा गया था। हम सुबह 7.00 बजे अपने विद्यालय से दिल्ली के लिए रवाना हुए। रास्ते में हमने गाने सुने, मेरे कुछ दोस्तों ने चुटकुले सुनाए और हमें पता ही नहीं चला कि हम दिल्ली कब पहुँच गए?

जब हम इंस्टीट्यूट के अंदर आए तो मैंने देखा कि हमारे जैसे कुल 25 स्कूल और थे। हमने वहाँ कुछ देर नाश्ता किया, कपड़े बदले और फिर नाटक की तैयारी करनी आरंभ कर दी। हमें अन्य विद्यालयों के साथ बड़े हॉल में बैठा दिया गया जो बहुत बड़ा और सजा हुआ था।

हॉल में कुछ वैज्ञानिकों की तस्वीरें, कागज के पेड़, कुछ किताबें और बीच में खाली जगह जिसके चारों और हम बैठे थे। यही नुक्कड़ नाटक करने की जगह थी। पूरी जगह तंबू के अंदर थी और अंदर ए.सी. लगा रखे थे, जिसमें गर्मी में सर्दी जैसा मजा आ रहा था। निर्णायक आए और प्रतियोगिता आरंभ हो गई...एक से बढ़कर एक प्रस्तुतियाँ थीं।

मुझे अंदर से आश्चर्य महसूस हो रहा था और बाहर से घबराहट क्योंकि सभी बहुत ही अच्छी प्रस्तुति दे रहे थे। हमारी बारी आई सभी ने अपने जगह ली और अपना नाटक दिखाना शुरु कर दिया। मैं बहुत संभल कर नाटक कर रहा था क्योंकि मुझे पता था कि मेरी एक भूल मेरे विद्यालय को महंगी पड़ सकती है। तालियों के साथ हमारी प्रस्तुति समाप्त हुई।

बारी आई निर्णय की, मन में यही चल रहा था कि हम क्या कुछ कर पाएँगे? सिंधिया स्कूल ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया, यह सुनकर हम सब बहुत खुश हुए।

मुझे गर्व हो रहा है कि मैं विद्यालय के लिए कुछ कर पाया और इसी के साथ पूरा हुआ मेरा पहला नुक्कड़ नाटक....

हर्ष वर्धन बंसल
कक्षा-10 (जयप्पा सदन)

बालगोविन भगत का नाट्य रूपांतरण

पात्र परिचय	:	पृथ्वीराज (गाँववासी)
सूत्रधार	:	बालगोबिन भगत
पुत्र	:	रामू, श्याम, सरला, सुनीता
		भोला, नरेश
पतोहू	:	शिव शंकर

(भगत अपने परिवार के साथ उनके साफ-सुथरे मकान में काम कर रहे हैं। सूत्रधार वर्णन करते हैं)

सूत्रधार:- नमस्कार! यह है बालगोबिन भगत का साफ-सुथरा मकान, जहाँ पर उनके साथ उनका बेटा एवं उनकी पुत्रवधु रहते हैं। पास ही में उनका एक खेत भी है।

भगत:- पुत्र समय हो गया है। कबीर साहब के दरबार में खेत का उत्पन्न सामान ले जाना है। बिना वक्त ज़ाया किए सामान को कबीर पंथी मठ में डाल दो।

(काम जारी रखते हुए, सूत्रधार का प्रवेश)

सूत्रधार:- कुछ ऐसे हैं हमारे भगत मँझोले कद के गोरे चिट्टे आदमी, साठ से ऊपर के ही होंगे। बाल पक गए थे एवं लंबी दाढ़ी या जटाजूट तो नहीं रखते थे किन्तु चेहरा सफेद बालों से जगमग किए रहता था। कम कपड़े पहनते कमर में बस एक लंगोटी मात्र और सिर में कबीरपंथियों

की-सी कनफटी टोपी। मस्तक पर हमेशा चमकता हुआ रामानंदी चंदन अथवा गले में तुलसी की एक बेडौल माला बाँधे रहते।

(वर्णन के वक्त सभी चीज़े पीछे जारी रखते हुए। बेटा दरबार से लौटता है।)

पुत्र:- पिताश्री, सामान दरबार में पहुँचा दिया है। भेंट के रूप में जो सामान मिला है, वह रसोई घर में रख दिया है। अब मैं खेत में जाने की तैयारी कर लेता हूँ।

(पुत्र जाते हुए, भगत सामान इकट्ठा करते हुए)

भगत:- अवश्य! तुम चलो मैं शीघ्र ही आता हूँ। आषाढ़ की रिमझिम है, समूचा गाँव खेतों में उतर पड़ा है, केवल हम रह गए हैं।

(खेत की ओर जाते हुए।)

सूत्रधार:- कहीं रोपनी हो रही है तो कहीं धान के पानी भरे खेतों में बच्चे उछल रहे हैं। औरतें कलेवा लेकर मेड़ पर बैठी हैं। इंतजार हो रहा है तो बस भगत का। मैं तो मुग्ध था उनके मधुर गान पर जो कबीर के सीधे-साधे पदों को सजीव कर देते हैं।

(खेत में सभी का प्रवेश। सब अपना-अपना कार्य कर रहे हैं।)

रामू:- देखो श्याम, आसमान बादलों से घिरा है, धूप का कहीं नाम ही नहीं है। ठंडी पुरवाई चल रही है और भगत का गान कानों में एक स्वर-तरंग झंकार-सी कर रही हैं।

(भगत की ओर इशारा करते हुए)

श्याम:– हाँ रामू देखो! भगत समूचा शरीर कीचड़ में लिथड़े, अपने खेत में पुत्र के साथ रोपनी कर रहे हैं। उनकी अँगुली एक-एक धान के पौधे को, पंक्तिबद्ध खेत में बिठा रही है।

रामू:– जरा संगीत की ओर भी तो ध्यान दो। ऐसा लग रहा है कि कुछ को ऊपर स्वर्ग की ओर भेज रहा है तो कुछ को इस पृथ्वी की मिट्टी पर खड़े लोगों के कानों की ओर!

सूत्रधार:– सभी बच्चे मुग्ध होकर झूम उठते हैं, मेड़ पर खड़ी औरतों के होंठ काँप उठते हैं, हलवाहों और रोपनी करने वालों के हाथ - पैर एक अजीब क्रम से चलने लगते हैं।

(संध्या होते-होते सभी लौट जाते हैं एवं मूसलाधार वर्षा खत्म हो जाती है। सभी भगत के मकान के बाहर साथ आ जाते हैं।)

सरला:– बहन सुनीता, आज अपनी खँजड़ी नहीं लाई?

सुनीता:– क्यों लाती भला? आज भगत कैसे अपना स्वर संगीत गाएँगे? यह झिल्ली की झंकार एवं दादुरों की टर्र-टर्र अपने कोलाहल में भगत को भला कैसे गाने देगी?

सरला:– भगत का गान इतना मधुर एवं उत्तेजित करने वाला है कि इस कोलाहल में भी सब का हृदय छू ले! (सभी बैठ जाते हैं, भगत गाना शुरू करते हैं।)

भगत: गोदी में पियवा, चमक उठे सखिया, चिहुँक उठे ना! (थोड़ा रुककर) हाँ, पिया तो गोद में ही है, किन्तु वह समझती है, वह अकेली है, चमक उठती है, चिहुँक उठती है।

सूत्रधार: अब सारा संसार निस्तब्धता में सोया है, बालगोबिन भगत का संगीत जाग रहा है, जगा रहा है।

(सभी अपने-अपने घर की ओर चल पड़ते हैं। दो आदमी प्रवेश करते हैं।)

भोला: मित्र नरेश कैसे हो ?

नरेश: मैं कुशलपूर्वक हूँ, और तुम ?

भोला: मित्र नरेश, कार्तिक का माह शुरु हो गया है और भगत की प्रभातियाँ आरंभ हो गई हैं तो फागुन तक चलेंगी।

नरेश: इन दिनों मुझे तो सवेरे जल्दी उठना पड़ेगा। भगत के संग नदी-स्नान को जाना है जो गाँव से दो मील दूर है। फिर लौटते समय, बाकी सभी के साथ गाँव के बाहर ही, पोखरे के ऊँचे भिंडे पर बैठकर गाने टेरने हैं।

(सूत्रधार आते हैं और वर्णन करते हैं।)

सूत्रधार: मैं कभी इन सब में शामिल नहीं हुआ, देर तक सोनेवाला जो था। आज भी मुझे याद है माघ की उस दाँत किटकिटाने वाली भोर में भगत का संगीत मुझे पोखरे पर ले गया था। मैं जाड़े से कँपकँपा रहा था, परंतु भगत का संगीत जैसे मुझे छोड़ने को तैयार ही नहीं था। गर्मियों का तो पता भी न चलता। सभी इकट्ठा होकर भगत का इंतजार करते थे।

(सूत्रधार एवं गाँव के अन्य प्रेमी भगत के आँगन में बैठे हुए हैं।)

प्रेमी मंडली: हे भगत! जल्दी आइए और इस उमस भरी शाम को शीतल कीजिए। खँजड़ियाँ एवं करतालों की भरमार हो गई है।

सूत्रधार: एक पद बालगोबिन भगत कह जाते, उनकी प्रेमी-मंडली उसे दुहराती-तिरहाती। धीरे-धीरे स्वर ऊँचा होने लगता-एक निश्चित ताल, एक निश्चित गति से। सभी मुग्ध हैं, बच्चे भी आनंद उठा रहे हैं।

रामू: अरे अरे श्याम! यह देखो ताल-स्वर के चढ़ाव के साथ श्रोताओं के मन भी ऊपर उठने लगे हैं।

श्याम: हाँ ऽऽऽ ज्ञात होता है, धीरे-धीरे मन तन पर हावी होने लगा है। (एक क्षण ऐसा आता कि बीच में खँजड़ी लिए बालगोबिन भगत नाच रहे हैं।)

रामू: यह ही नहीं और तो और उनके साथ ही सभी का तन और मन नृत्यशील हो उठा है। सारा आँगन संगीत और नृत्य से ओतप्रोत है।

(बात करते-करते पास ही बैठी अम्मा रामू एवं श्याम को पुकारती हैं और कुछ समझाती हैं।)

अम्मा: मेरे बच्चों, यह दृश्य जो तुम देख रहे हो यह तो कुछ भी नहीं है। भगत की संगीत-साधना का चरम उत्कर्ष उस दिन देखा गया जिस दिन उनके बेटे की मृत्यु हो गई।

श्याम: अम्मा परंतु उनका तो इकलौता बेटा था ना ? इस वक्त पर उन्होंने ऐसा क्या किया ?

रामू: कानों में खबर पड़ी थी कि उनका पुत्र कुछ सुस्त और बोदा-सा है, किंतु इसी कारण बालगोबिन भगत उसे और भी ज्यादा नज़र में रखते एवं प्यार करते हैं।

श्याम: बड़ी साध से उसकी शादी भी कराई थी, पतोहू बड़ी ही सुभग और सुशील मिली थी।

अम्मा: जो सुना, सत्य सुना। घर की पूरी प्रबंधिका बनकर भगत को बहुत कुछ दुनियादारी से निवृत्त कर दिया था। बहुत ध्यान रखती थी वह सबका।

(अम्मा एवं दोनों बच्चे चले जाते है। सूत्रधार का प्रवेश होता है और पीछे भगत के मृत बेटे का दृश्य दिखाया जा रहा है।)

सूत्रधार: उनका बेटा बीमार था, इसकी खबर रखने की लोगों को कहाँ फुरसत। मौत तो अपनी ओर सबका ध्यान खींचकर ही रहती है। हमने सुना भगत का बेटा मर गया। कुतूहलवश उनके घर गया और वहाँ की स्थिति देखकर दंग रह गया।

(सूत्रधार सफ़ेद कपड़ों में शामिल होकर।)

गाँववासी: बेटे को आँगन में एक चटाई पर लिटाकर एक सफ़ेद कपड़े से ढँक रखा है। वह कुछ फूल तो हमेशा ही रोपते रहते, उन फूलों में से कुछ तोड़कर उस पर बिखेर दिए हैं। सिरहाने एक चिराग जला रखा है। परंतु सबसे ज्यादा चौंका देनेवाला दृश्य तो यह था कि वह सामने ज़मीन पर ही आसन जमाए गीत गाए चले जा रहे हैं।

(सूत्रधार खड़े होकर, दृश्य को विस्तार में समझाते हैं।)

सूत्रधार: भगत को कोई असर नहीं पड़ा, वही पुराना स्वर, वही पुरानी तल्लीनता। मुझे तो विश्वास ही नहीं हो रहा था।

(सूत्रधार गहरी सोच में, स्थान ग्रहण कर लेते हैं। सरला और सुनीता बैठी हुई हैं और बातें कर रही हैं।)

सरला: घर में पतोहू रो रही है, किंतु भगत गाए जा रहे हैं।

सुनीता: हाँ, गाते-गाते कभी-कभी पतोहू के नजदीक जाकर उसे रोने के बदले उत्सव मनाने को कह रहे हैं।

सरला: भगत मानते हैं कि आत्मा परमात्मा के पास चली गई, विरहिनी अपने प्रेमी से जा मिली, इससे बढ़कर आनंद की कौन बात ?

सूत्रधार: मैं कभी-कभी सोचता, यह पागल तो नहीं हो गए ? किंतु नहीं, वह जो कुछ कह रहे थे उसमें उनका विश्वास बोल रहा था। वह चरमविश्वास जो हमेशा ही मृत्यु पर विजयी होता आया है।

(सूत्रधार गाँव वालों के साथ मिल जाते हैं। नरेश और भोला आते हैं।)

नरेश: बेटे के क्रिया-कर्म में तूल नहीं किया, पतोहू से ही आग दिलाई उसकी।

भोला: मालूम तो हुआ, परंतु इससे भी ज्यादा उन्होंने तो कहा कि श्राद्ध की अवधि पूरी हो गई है, पुत्रवधु अपने भाई को बुलाओ। पतोहू के भाई को बुलाकर उसे साथ जाने को कह दिया, यह आदेश देते हुए कि उसकी दूसरी शादी कर देना।

नरेश: इधर पतोहू रो-रोकर कहती रही कि वह नहीं जाएगी और भगत के साथ ही रहेगी।

(पतोहू का प्रवेश एक ओर से। रोते हुए स्वर में।)

पतोहू: मैं चली जाऊँगी तो बुढ़ापे में कौन आपके लिए भोजन बनाएगा, बीमार पड़े तो कौन एक चुल्लू पानी भी देगा? मैं पैर पड़ती हूँ, मुझे अपने चरणों से अलग नहीं कीजिए।

(पतोहू रोती रही, सूत्रधार ने हालातों का और वर्णन किया।)

सूत्रधार: भगत ये किसी की न सुनने वाले, अपना निर्णय अटल रखा। ऊँचे स्वर में बात मनाने के लिए चिल्ला उठे।

भगत: तू जा, नहीं तो मैं ही इस घर को छोड़कर चल दूँगा।

सूत्रधार: यह थी उनकी आखिरी दलील और इस दलील के आगे बेचारी की क्या चलती ? मजबूरी में उसे अपने भाई के साथ जाना ही पड़ा।

(पतोहू अपने भाई के साथ निराश होकर चली गई। बालगोबिन भगत चैन की साँस लेकर चल दिए। भगत मकान में भीतर जाकर स्नान की तैयारी करते हैं।)

भगत: हर बार की तरह इस वर्ष भी गंगा-स्नान करने जाना है। घर से भोजन करके ही निकलना पड़ेगा, किंतु इस लंबे उपवास में भी वहीं मस्ती रहेगी।

(भगत गंगा की ओर यात्रा करते हुए। सूत्रधार आते हैं।)

सूत्रधार: भगत स्नान पर आस्था नहीं रखते, जितना संत-समागम और लोक-दर्शन पर। तीस कोस की दूरी पर थी गंगा और पैदल यात्रा करने में ही विश्वास रखते। साधु को संबल लेने का क्या हक? और गृहस्थ किसी से भिक्षा क्यों माँगे? अत: रास्ते भर खँजड़ी बजाते, गाते जहाँ प्यास लगती, पानी पी लेते। बीच में कुछ भोजन भी न ग्रहण करते। चार-पाँच दिन आने-जाने में लगते। इस यात्रा पर वह बहुत विश्वास रखते।

(भगत के साथ रास्ते में उनके मित्र जुट जाते और यात्रा करते। थोड़ा पीछे चलते हुए दोनों मित्र बातें करते।)

शिवशंकर: अब बुढ़ापा आ गया है, किंतु टेक वही जवानी वाली देख रहे हैं, कितने मुग्ध होकर अपनी यात्रा सफल कर जाते हैं।

पृथ्वीराज: सो तो है, किंतु इस बार मालूम हुआ कि यात्रा से लौटे तो तबीयत कुछ सुस्त थी। खाने-पीने के बाद भी तबीयत नहीं सुधरी, थोड़ा बुखार आने लगा था।

शिवशंकर: किंतु नेम-व्रत तो छोड़ने वाले नहीं थे। वही दोनों जून गीत, स्नान-ध्यान, खेतीबारी देखना। दिन-दिन छीजने लगे।

पृथ्वीराज: गाँव के लोगों ने नहाने-धोने से बहुत मना किया, आराम करने को कहा। मैं समझाने गया तो हँसकर सारी बातें टाल दी।

शिवशंकर: पता है क्या, उस दिन भी संध्या में गीत गाए, परंतु मालूम होता जैसे तागा टूट गया हो। माला का एक-एक दाना बिखरा हुआ था। पता नहीं उस दिन क्या हुआ।

(शिवशंकर एवं पृथ्वीराज दोनों बात करते हुए अपनी राह बदलकर चल देते हैं। सूत्रधार कुछ धीमी एवं दबी आवाज में बोलते हुए प्रवेश करते हैं।)

सूत्रधार: भगत की मौत उन्हीं के अनुरूप हुई। इतना साधारण जीवन जीने के बाद भी न जाने उनके साथ क्या हुआ? भोर में लोगों ने गीत नहीं सुना, जाकर जब सभी ने देखा तो बालगोबिन भगत नहीं रहे, था तो सिर्फ उनका पंजर और उनकी खँजड़ी।

(सूत्रधार की आँखे नम हो जाती है।)

ध्रुव झिरीवाल
कक्षा-10 (जीवाजी सदन)

स्क्वाश मेरा जूनून...

आजकल का युवा खेलों के प्रति बहुत जागरूक हुआ है और मुझे लगता है यही उभरते हुए युवा भारत की शानदार तस्वीर हैं।

मनुष्य के चरित्र एवं उसके व्यवहार में उसके माता-पिता का बहुत बड़ा योगदान होता है। मेरे माता-पिता जी ने यह संस्कार मुझे खेल के रूप में सिखाए थे। जो मुझे ज़िंदगी में इस उम्र तक अपने कर्तव्यों को निभाते हुए ले आए हैं। बचपन में मैं जब अपने पिताजी को 'स्क्वाश' खेलते हुए देखता था, तब मेरे मन में यह विचार उत्पन्न होता था कि क्या लोग दीवार पर गेंद को ठोकते रहते हैं। लेकिन जब मेरे पिताजी ने मुझे खेल से अवगत कराया तो मानो मेरे जीवन को एक नई दिशा-सी मिल गई। मुझे आज भी वो दिन याद है जब एक बार मैच हारने के बाद मैंने गुस्से से अपने रैकेट को पटक दिया था। मेरे पिताजी ने मुझे समझाया कि एक महान व्यक्ति को जीत के साथ हार का भी स्वाद चखना ज़रूरी है और उसे सहनशीलता के साथ अपनाना भी। इस बात का मैं खेल में ही नहीं बल्कि अपने जीवन में भी आदर करता हूँ। खेल के प्रति इज्ज़त और प्यार दोनों ही मेरे अंदर मेरे पिता के कारण ही हैं।

ज़िन्दगी में अक्सर खेल के महत्व को हम बच्चे ध्यान नहीं देते हैं और मैं भी सिंधिया स्कूल में प्रवेश लेने से पहले उन्हीं बच्चों में से एक था। खेल में भाग लेने से सबसे पहले तो हमारे स्वास्थ्य पर बहुत अच्छा प्रभाव पड़ता है और दूसरा खेलने से हमारी साँस लेने की क्षमता दो से तीन गुना बढ़ जाती है। इसके अलावा हमारे शरीर से रक्त का परिसंचरण भी सुधर जाता है। खेलों में भाग लेने से हमारा दिमाग भी ठंडा रहता है अगर हम कभी पढ़ाई से बहुत थक जाएँ या गृह-कार्य के बोझ से छूट न पाये तो स्क्वाश की गेंद को दीवार पर मारकर हम अपने दिमाग के हर भाग पर फिर से काबू पा सकते हैं।

खेल (स्क्वाश) खेलने के बाद स्वस्थ रहने के अलावा हम दोस्ती और विश्वास को भी बढ़ा सकते हैं। मैंने सुना था कि खेल से ही खिलाड़ी (व्यक्ति) का असली रूप दिख जाता है और मैं इस बात से पूरी तरह सहमत हूँ क्योंकि मैंने अपनी आँखों से अपने ही दोस्तों का स्क्वाश कोर्ट के अन्दर बदलते हुए देखा है यह शायद इसलिए होता है क्योंकि कोर्ट पर हर खिलाड़ी का दिमाग इतना व्यस्त रहता है कि वह बिना सोचे अपने को पराया बना देता है परन्तु मैं मानता हूँ कि दिन के अंत में, अतिरिक्त समय एक साथ खेलने के पश्चात लोगों के बीच प्यार की भावना बढ़ती है।

सिंधिया स्कूल में जब मैंने 2016 में प्रवेश लिया तब मेरा वजन 82 किलोग्राम था और आज दो साल में मैंने स्क्वाश में कड़ी मेहनत कर अपना वजन 22 किलोग्राम कम कर लिया है जो मेरे लिए किसी मैडल से कम नहीं है।

अपनी इसी निष्ठा, मेहनत और ईमानदारी के कारण मुझे स्क्वाश टीम का कप्तान नियुक्त किया गया जो कक्षा 10 के विद्यार्थी के लिए किसी बड़ी उपलब्धि से कम नहीं है। इस उपलब्धि में मेरे कोच ने हमेशा मेरा साथ दिया है और आत्मविश्वास के साथ खेलने के लिए प्रेरित किया है। कोर्ट पर जाने से पहले उन्होंने हमेशा कहा है कि अगर बड़े स्तर पर स्क्वाश खेलना है, तो एक खिलाड़ी के तौर पर अपने खेल में सुधार लाना होगा। कोर्ट पर जो भी फैसले लेते है, चाहें वे सही हो या गलत, उनकी जिम्मेदारी लेनी चाहिए। मैं उनकी इन्हीं बातों पर चलता रहा।

इस दौरान मैं अनुशासन में रहा "मैंने कभी भी अपने आप को किसी से कम नहीं बल्कि खुद को सबके बराबर ही समझा है। इसी सोच के साथ मैं हर एक मैच खेलता हूँ।" मेरा प्यार सिर्फ और सिर्फ स्क्वाश ही है। अपने इसी प्यार को मैं आगे बढ़ाना चाहता हूँ और अपने स्कूल की उम्मीदों पर खरा उतरना चाहता हूँ। अपने स्क्वाश और इसमें लगातार खुद को निखारने की राह में कोई भटकाव कभी नहीं आने दूँगा। स्क्वाश खेलना मेरा जुनून है और जाहिर सी बात है, जब भी मैं कोई टूर्नामेंट जीतता हूँ, मुझे बहुत संतुष्टि मिलती है। आने वाले समय में अच्छा प्रदर्शन करने का हौंसला भी हर जीत के साथ बढ़ता जाता है। मुझे दोस्तों की उम्मीदों का अंदाजा है और मैं यह भी जानता हूँ कि अब स्क्वाश को लेकर मेरे दोस्तों की उम्मीदें मुझसे और बढ़ गई हैं। मैं यह भी जानता हूँ कि आज का युवा हर क्षेत्र में अपनी उपस्थिति दर्ज करा रहा है और हर क्षेत्र में बड़ी उपलब्धियाँ भी हासिल कर रहा है जो उभरते युवा भारत के लिए बहुत ही शुभ संकेत है। देश में खेलों का भविष्य बहुत उज्ज्वल दिखाई पड़ता है।

हमारे विद्यालय के भी बहुत से युवा इस खेल को अपना रहे हैं। कई प्रतियोगिताएँ हो रही हैं और कई प्रतिभाओं को आगे आने का मौका मिल रहा है। मुझे पूरी उम्मीद है कि आने वाले समय में हमारे विद्यालय से कई ऐसे बेहतरीन खिलाड़ी निकलेंगे जो राज्य/राष्ट्रीय स्तर पर भी कड़ी चुनौती पेश करेंगे। मैं सिंधिया स्कूल के छात्रों के जबरदस्त उत्साह और जुनून को देखकर युवा भारत की एक चमकदार तस्वीर अपने सामने देखता हूँ। मेरा मानना है कि आज का युवा एकदम सही दिशा में आगे बढ़ रहा है। आज का भारतीय युवा इस बात को जानता है कि उसके लिए कौन से अवसर सामने हैं। इन अवसरों को हासिल करने के लिए हमारा युवा कड़ी मेहनत कर रहा है, जो एक मजबूत राष्ट्र का निर्माण करने के लिए ज़रुरी है। प्रतियोगिता ज्यादा है तो अवसर भी हैं और इस प्रतियोगिता की वजह से हमें ज्यादा मजबूत और बेहतर युवा हर क्षेत्र में मिल रहे हैं।

अंत में यही कहना चाहता हूँ कि यदि कुछ करने का जुनून है तो कुछ भी असंभव नहीं है। इस उपलब्धि में मेरे विद्यालय का मुझे हर कदम पर सहयोग मिला है। मैं आभारी हूँ अपने प्राचार्य महोदय का, खेल विभाग का जिन्होंने हाल ही स्क्वाश कोर्ट का जीर्णोधार कर अंतर्राष्ट्रीय स्तर के कोर्ट का रूप दिया है। मुझे पूर्ण आशा है कि अब मेरे साथ-साथ दोस्तों के खेल में भी निखार आएगा।

उज्ज्वल मेहरोत्रा
कक्षा-10 (माधव सदन)

सिंहासन का खेल: ज़िंदगी का सबक

कथाकार के साथ निर्देशक भी अपनी गल्पकथा गढ़ने में स्वतंत्र है किन्तु उनकी यही स्वतंत्रता उन्हें कर्त्तव्यबंधन में बाँध देती है। कथा चाहे सातों आसमानों में विचरण करे, किन्तु उसकी डोर तो धरती से बँधी होनी चाहिए। बहुतों के हिसाब से कथाकार तथा निर्देशक ने बख़ूबी अपने कर्त्तव्य का पालन किया और कहानी को अपने यथायोग्य चरम पर पहुँचाया।

प्रख्यात नाटककार, कवि, निर्देशक, पद्मविभूषण श्री हबीब तनवीर के कहे अनुसार कथाकार पात्रों को रचता है और फिर पात्र स्वयं कथा को वहनकर उसे चरम तक पहुँचाते हैं। कहने का अर्थ है भले ही दर्शकों के मनोरंजन लिए मायाजाल रचाया जाता है, तब भी कथा दर्शकों की गुलाम नहीं होती। उसका अपना स्वतंत्र अस्तित्व होता है, तभी वह मौलिक बन पाती है।

जैसी कि आम अपेक्षा होती है, सिंहासन के खेल में जीत के कई दावेदार थे। दर्शक भी बँटे हुए थे। कई लोग जॉन स्नो को प्रबल दावेदार मानते थे तो कई उसकी बहन सान्सा के बारे में क़यास लगाते रहे। बहुतों को लगा था कि सान्सा के महत्वाकांक्षा के पंछी को हज़ार तलवारों से सज्ज लौह सिंहासन का ठौर मिलेगा।

अधिकांश दर्शकों ने यह कल्पना की थी कि रौब स्टार्क अपनी कोशिशों में कामयाब होगा और अपने पिता के साथ हुए अन्याय का प्रतिशोध लेगा। मगर किंग्स लैंडिंग में जो प्रपंच रचे जा रहे थे वे सज्जन लोगों की कल्पना से परे थे। वेबकथा में जिस निर्ममता से संवेदनाओं का गला काटा गया; उससे साफ़ हो गया था कि कथा को बुनने और गढ़ने का मक़सद सिर्फ़ दर्शकों का मनोरंजन करना और कमाई करना नहीं था बल्कि उसे एक मुक़ाम पर पहुँचाना था।

यद्यपि कई बार दृश्यों में सभ्यता के वसन तार-तार कर दिए गए और इससे मन बेचैन होता था; तथापि समाज में गहरे पैठी हुई गंदगी पर पड़ा पर्दा कोई उघाड़ दे तो उसे साफ करने का उत्तरदायित्व भी यहीं जन्म लेता है।

इस खेल में सबका निशाना सिंहासन है, मगर उन सबने व्हाइट वॉकर को ख़तरा समझा ही नहीं जो कभी न ख़त्म होने वाली बुराई थी। सही मायने में राजा वह है जो अपनी दूरंदेशी से वास्तविक शत्रु को पहचाने और मानवता की रक्षा के लिए अपने मंतव्यों को उस समय स्थगित कर दे। सच में मसीहा वही है जो आने वाली पीढ़ियों के लिए सोच सके। सो, जॉन स्नों जैसे वास्तविक नायक को कथा में बड़ी खूबसूरती से उभारा जाता है। जैसा कि दर्शकों को कथा का अंत रास न आया; वैसे ही जॉन स्नो को बदलती स्थितियाँ रास नहीं आ रही थीं।

बदले की आग इतनी भी नहीं भड़कनी चाहिए कि बेक़सूर लोग उसमें होम हो जाएँ। डैनरीज़ टार्गेरियन को सर्सी का अहमकपन इतना बुरा लगा कि वह आपे से बाहर हो गई। उसने जो किंग्स लैंडिंग का बुरा हाल किया वह भी कहानी की माँग थी और फिर संशयग्रस्त जॉन स्नो के भीतर जो स्वाभाविक राजा था; उसका डैनरीज़ को मृत्युदण्ड देना भी कहानी का कर्तव्य था। ड्रैगन का लौह सिंहासन को जलाकर, पिघलाकर अपनी स्वामिनी को लेकर उड़ जाना, मानवता को एक सारगर्भित संदेश था। चमत्कार अंत में चमत्कार में विलीन हो जाता है।

प्रकृति और विधाता के आगे सब शून्य है। आप सिंहासन पाने की हर संभव कोशिश करें; तिकड़म करें; जालसाज़ी करें लेकिन ध्यान रहे आप जो कर रहे हैं, वह आपको हर हाल में चुकाना ही होगा। आज आप शक्तिशाली हैं; मगर कब आप मजबूर हो जाएँगे; किसी को नहीं पता। सो, खेल खेलिये खेल भावना से!

गणपत स्वरूप पाठक

(हिंदी अध्यापक)

देश की नई प्रमुख समस्या.....
फेक न्यूज (भ्रामक समाचार)

भ्रष्टाचार, गरीबी, भूखमरी, अपराध, जनसंख्या विस्फोट आदि जैसी समस्या भारत में न जाने कितने दशकों से है और इसमें कोई दो राय नहीं कि ये सचमुच में बहुत ही गंभीर समस्याएँ हैं परंतु मेरे अनुसार अभी वर्तमान समय में जो सबसे बड़ी समस्या पनपकर आयी है वो है नकली समाचार या 'फेक न्यूज'।

मैं इसे बहुत बड़ी समस्या इसलिए मानता हूँ क्योंकि 'फेक न्यूज' हमारे समाज में एक ज़हर घोलने का काम कर रही है। 'सोशल मीडिया' तो जैसे समाज में फैले कुछ असामाजिक तत्वों के लिए वरदान साबित हो रहा है।

हम भारतीयों की सबसे बड़ी कमी ये है कि हमें अगर कोई समाचार 'फेसबुक' या 'व्हाट्सएप' के माध्यम से मिलता है तो हम उस समाचार की जाँच पड़ताल नहीं करते और उसे सच मानकर हू-ब-हू आगे अपने मित्र या संबंधियों को भेज देते हैं। ये बहुत ही खतरनाक आदत है और इसके बहुत से दुष्परिणाम भी सामने आते हैं।

हमारी इन्हीं आदतों के फलस्वरूप असामाजिक तत्व अपना उल्लू सीधा करवाने में लगे हुए हैं। जैसे इतिहास की घटनाएँ या इतिहास से जुड़े लोगों के बारे में मनगढ़ंत बात लिखकर उन्हें सोशल मीडिया में फैलाना। किसी के भी बारे में विशेषकर राजनीति से जुड़े लोगों के बारे में झूठ फैलाना। किसी घटना को सांप्रदायिक रंग देना या किसी घटना के कारण को ही बदल देना। इस तरीके के काम आज कल सोशल मीडिया के माध्यम से बहुत किया जा रहा है।

ऐसा नहीं है कि केवल आम आदमी ही इसका शिकार हो रहा है परंतु खुद समाचार केन्द्र और उनके संवाददाता भी इससे नहीं बच पा रहे हैं। जब संवाददाता स्वयं किसी भी समाचार की पुष्टि किये बिना 'टी.वी.' पर समाचार दिखाएँगे तो सोचिए आम जनता का क्या हाल होगा और उसका समाज पर किस तरह से नकारात्मक प्रभाव पड़ेगा। मेरा अपने सभी मित्रों से अनुरोध है कि बिना जाँच पड़ताल किए किसी भी खबर पर विश्वास न करें। सोशल मीडिया गलत खबरें फैलाकर आग में घी डालने का काम कर रहा है। साम्प्रदायिक दंगा भड़काने में भी सोशल मीडिया कोई कमी नहीं छोड़ता। लोग अपनी दुश्मनी भी इसी पर निकालते हैं। कहने की आज़ादी का मतलब यह नहीं कि आप दूसरों की भावनाओं को आहत पहुँचाएँ। बीते दिनों में यह दिखा है कि लोग सोशल मीडिया के जरिए अभिव्यक्ति की आज़ादी को अपमानित कर रहें हैं इसलिए सोशल मीडिया से लाभ कम और हानि ज्यादा हो रही है। अब यह हमारे ऊपर निर्भर करता है कि हम इस पर कितना भरोसा करें।

आदित्य कुमार

कक्षा-9 (जायप्पा सदन)

कृत्रिम बुद्धिमता : कितना लाभ कितनी हानि

आईना जब भी उठाया करो,
पहले देखो, फिर दिखाया करो...

आजकल लोग हर किसी चीज में कमी निकालना शुरु कर देते हैं और सबसे पहले उसे इस्तेमाल करते हैं। इसीलिए मैंने उपरोक्त पंक्तियाँ लिखी हैं।

कृत्रिम बुद्धिमता है क्या? यदि सरल शब्दों में कहूँ तो मशीनों को बुद्धिमान बनाने का काम। और मेरे मित्रों यह मानव के लिए वरदान सिद्ध होगा। कई ऐसे काम हैं जो मनुष्य के लिए जोखिम भरे हो सकते हैं वहाँ कृत्रिम बुद्धिमता वरदान सिद्ध हो रही है। आप जानते हैं कि आई.बी.एम. कंपनी के कृत्रिम बुद्धिमता से लैस 'डीप ब्लू कंप्यूटर' ने कास्पोरोव को शतरंज में हरा दिया था।

मैं पूछना चाहता हूँ कि आपमें से कितने लोग जी.पी.एस. का इस्तेमाल करते हैं- उत्तर होगा 100% हाँ। गाड़ी चलाते समय जी.पी.एस. की मदद से आप अपने गंतव्य तक आसानी से पहुँच जाते हैं और रास्ते में अंकल जी या

आंटी जी से रास्ता पूछने की अब आवश्यकता नहीं होती। मेरे छोटे-बड़े भाई-बहन एक अंग्रेजी की वर्तनी लिखने में चार गलती करते हैं लेकिन फोन पर बड़ी-बड़ी 'स्पेलिंग' भी सही लिखते हैं, जी हाँ! कारण आप सब समझ ही गए होंगे और वह है कृत्रिम बुद्धिमता।

समुद्र की गहराई में ईंधन खोज का काम, गहरी खानों में खुदाई का काम ये अभियंता कृत्रिम बुद्धिमता बड़ी आसानी से कर लेते हैं और सबसे बड़ी बात यह है कि न दिवाली की छुट्टी चाहिए और न होली की, न थकावट न रुकावट.... 'चलना ही ज़िंदगी है चलता ही जा रहा हूँ' वही दूसरी ओर नुकसान भी हैं। इसके नुकसान पर भी नज़र डालते हैं-

ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के सर्वे में बताया गया कि केवल अमेरिका में अगले दो दशक में 1.5 लाख रोजगार समाप्त हो जायेंगे। भगवान न करे यदि किसी तकनीकी खराबी के कारण रोबोट मनुष्य को अपना दुश्मन समझने लगे, तो मानवता के लिए खतरा पैदा हो सकता है।

मानव निर्मित कृत्रिम बुद्धिमता कभी-कभी मनुष्य के लिए भस्मासुर बन जाएगा - स्वयं बिल गेट्स ने कहा कि मनुष्य अपने से बेहतर सोचने-समझने वाली मशीन बना लेगा तो उसके अस्तित्व को खतरा पैदा हो जाएगा। जब हम ही नहीं रहेंगे तो कृत्रिम बुद्धिमता का हम क्या करेंगे।

जिस देश में करोड़ों लोग बेरोजगार हैं। लाखों लोगों को दो वक्त की रोटी नसीब नहीं होती वहाँ इतनी महंगी मशीनों का औचित्य ही क्या है ? और आप कृत्रिम बुद्धिमता की बात कर रहे हैं।

लव असरानी

कक्षा-12 (दौलत सदन)

मेरे विचार में गाँधी

''चल पड़े जिधर दो डग मग में,
चल पड़े कोटि पग उसी ओर ।''

करोड़ों पैरो को अपने पीछे चलने की प्रेरणा देने वाले और कोई नहीं मोहनदास करमचंद गाँधी थे जिन्हें भारतवर्ष में बापू के नाम से और संसार में महात्मा गाँधी के नाम से जाना गया है। उन्नीसवीं शताब्दी में जब भारत अंग्रजों द्वारा अत्याचार एवं शोषण सहता जा रहा था तब भारत माता को उसका अस्तित्व वापस दिलवाने के लिए गाँधी जी के रूप में एक रत्न पैदा हुआ। मैने हमेशा से गाँधी जी एवं उनके सिद्धांतों का सम्मान कर उन्हें याद किया है, आप बताइए कि एक पढ़ा-लिखा व्यक्ति जो अपनी ज़िंदगी में आगे जाकर कितनी सफलता प्राप्त करने की क्षमता रखता था, उसने कभी भी एक क्षण भी अपने आप के बारे में नहीं सोचा। यहाँ तक कि उन्होंने अपने जीवन में राष्ट्रीय स्तर पर कभी कोई पद स्वीकारा नहीं था। दुश्मनों से भी प्यार करना एवं अहिंसा की राह पर चलना हमारे बापू को सबसे अलग बनाता है। गाँधी जी ने हमारे देश को आजाद कराने के लिए अपना सब कुछ न्योछावर कर दिया था। गाँधी जी का साधारण जीवन भी उनके व्यक्तित्व की एक विशेषता है। उनके मन में हमेशा से ही भारतीयों को एकजुट देखने की इच्छा रही है और शायद यह बात है जो मुझे उनके सिद्धांतों की ओर आकर्षित करती है। गाँधी जी एवं अन्य स्वतंत्रता सैनानियों के बलिदानों को भूलना मेरे लिए संभव नहीं है। गाँधी जी नेक विचारों को मैंने हमेशा से समझने की कोशिश की है, जैसे वह कैसे शिक्षा का प्रचार कर एक सभ्य समाज की स्थापना करना चाहते थे? मैं कभी-कभी सोचती हूँ कि कैसे कोई व्यक्ति अपने आदर्शो पर इतना खरा उतरता है और कई लोगों को उसी राह पर साथ लेकर चलता है? मरते दम तक गाँधी जी अपने सिद्धांतों और धर्म पर टिके और शायद ही उनके समान कोई दूसरा अनमोल रत्न भारतमाता को कभी मिल सकता है। उनके दर्शन करना मेरे लिए सौभाग्य की बात होती।

अदिति जोशी

कक्षा-11 (जयाजी सदन)

विद्यालय के छात्रों का गाँव भ्रमण

ग्रामीण जीवन उनका माना जाता है जो शहरों से दूर रहते हैं और शहरों की तरह उन्हें सभी प्रकार की सुविधाएँ नहीं मिल पाती हैं। शहरी लोगों के तुलना में गाँव के लोगों का जीवन बहुत अलग होता है।

कक्षा 9 के छात्रों का एक दल ग्रामीण परिवेश से परिचित होने के लिए पास के ही दो गाँवों 'नाथों का पुरा' और 'सोंसा' गाँव पहुँचा। वहाँ की समस्या देखकर हम सभी सोचने पर मजबूर हो गए। कहने को तो सरकार बड़े-बड़े दावे कर रही है लेकिन जब हमने वहाँ के लोगों से पूछा तो हकीकत कुछ और ही निकली।

एक ग्रामीण ने कहा कि 'हमारे पास एक बीघे भी खेती नहीं है, इसके बावजूद हमें किसी भी योजना का लाभ नहीं मिल पाता है। हमारे पास राशन कार्ड तक नहीं है। गाँव के सड़क की हालत खस्ता है। शौचालय की भी समस्या है।' हमारे गाँवों में अच्छे स्कूलों की कमी है। यह बात नहीं है कि स्कूल उपलब्ध नहीं है लेकिन उनके मौजूद होने से क्या फायदा यदि छात्रों के बैठने व

शिक्षा प्राप्त करने के लिए उचित प्रबंध नहीं है। इसके अलावा, सभी ग्रामीण क्षेत्रों में पीने के पानी की आधुनिक सुविधाएँ उपलब्ध नहीं हैं।

पानी निकासी की सुविधा तो दूर बरसात के दिनों में ग्रामीणों का मुख्य रोड तक पहुँचने तक का रास्ता बंद हो जाता है। ग्रामीण गाँव में रहते हुए भी बदहाली का जीवन व्यतीत कर रहे हैं। एक ग्रामीण ने कहा- हमारे बच्चे लकड़ी काटकर उसे बेचते हैं। एक दिन जंगल से लकड़ी लाने में लगता है और दूसरे दिन उसे बाजार में ले जाकर बेचते हैं। वन-विभाग द्वारा पकड़े जाने का हमेशा डर बना रहता है। कई बार लकड़ी बेचते समय पुलिस और वन विभाग की टीम पकड़कर जेल में बंद कर देती है। गाँव में शासन व प्रशासन द्वारा मूलभूत सुविधाएँ उपलब्ध नहीं कराई गई हैं। सुविधाएँ नहीं मिलने के कारण ग्रामीण प्रशासनिक अधिकारियों के खिलाफ आक्रोश प्रकट कर रहे थे।

इस भ्रमण के बाद मुझे समझ में आया कि गाँव के लोग आज भी बुनियादी समस्याओं से जूझ रहे हैं। गाँव के लिए न हीं पक्की रोड बनाई गई है और न ही पीने के पानी की सुविधा है। ग्रामीण प्रशासन की सेवाओं से वंचित रहकर दलदल में रहने को मजबूर हैं। बदहाली में जीवन व्यतीत कर रहे 'सौंसा' गाँववासी कई बार शासन व प्रशासन के अधिकारियों के पास समस्या को लेकर पहुँचते हैं, लेकिन विकास के नाम पर गाँव शासन के नक्शे में कोसों दूर है। ग्रामीणों का कहना है कि चुनाव के वक्त राजनैतिक लोग वादा करके चले जाते हैं और फिर नदारद हो जाते है।

जज़्बी युनुस

कक्षा- 10 (जीवाजी सदन)

किमर्थं संस्कृतम्....

सिंधिया विद्यालयस्य ध्येयवाक्यम् 'सा विद्या या विमुक्तये'' इति उपनिषद्वाक्यम्। विद्या केवलम् उदरपोषणार्थं न खलु, परं संसारबन्धं विमुक्तिरूपः अज्ञानात् विमुक्तिः मोक्षप्राप्तिः एव। तादृशी विद्या आध्यात्मिकी विद्या एव, इति विद्यायाः परमार्थतत्वं ज्ञापयति एतद् ध्येयवाक्यम्।

भाषा केवलं विचाराणाम् अभिव्यक्तेः नास्ति, यदि भाषायाः उद्देश्यम् विचारणं आदानं-प्रदानं एवं केवलम् अस्ति तर्हि तु सर्वया भाषया भवति संस्कृतेन एवं किमर्थम्? संस्कृतमाध्यमेन परं वैभवं नेतुमेतत् स्वाराष्ट्रम्, सर्वाभिः भाषाभिः मानवानाम् विकासः भवति, एतत् सत्यं, परंच संस्कृतभाषया वैशिष्ट्म् साधनीयम् यतो ही एषा भाषा प्राचीनतमा भाषा वर्तते, आदिकलात् इदानीम् पर्यन्तम् एषा भाषा अस्तित्वे अस्ति, मंत्राणाम् मानवनाम् च भाषा संस्कृतम्, भारतस्य उत्थानास्य पतनस्य साक्षी अपि अस्ति एषा। सर्वाषाम् भाषाणाम् पोषिका, अत्रत्या शिक्षा अनया भाषया आसीत्, अर्थव्यवस्था राजव्यवस्था, असीत् अनया भाषया, समाज व्यवस्था आसीत् अनया भाषया। तदा अनया भाषा एषा एवं आसीत्। अस्यामेव भाषायां ज्ञानविज्ञानयोः निधिः सुरक्षितोस्ति आदितः इदानीम् पर्यन्तं कापि भाषा विद्यते सा एषा अविछिन्ना अमरा भाषा संस्कृतम्। अस्यां भाषायां सर्वाधिकारस्य वाङ्मयस्य संरचना जाता, एषा भाषा अतीव वैज्ञानिकी च विद्यते। अस्याः पाणिनीयं व्याकरणम् अतीव वैज्ञानिकम् अस्ति। संस्कारयुक्ता परिष्कृता चेयं भाषा ''संस्कृत'' इति कथ्यते।

संस्कृतभाषा न केवलं भारतवर्षस्य अपितु विश्वस्य अनेकानां भाषाणां जननी अस्ति। भारतवर्षः अनेकतायाः उदाहरणस्वरूपः देशो विद्यते, यदि वयं अनेकतायाः एकतायाः परिदर्शनं कर्तुम् वाञ्छामः यदि वयं भाषागत-वैमनस्यं दूरीकुर्तम् इच्छामः, तर्हि अस्माभिः भाषा एषा वर्तमानसमये राष्ट्रभाषारूपेण प्रतिष्ठिता कर्तव्या। भारतमातुः स्वातन्त्रयं, गौरवम्, अखण्डत्व्, सांस्कृतिकम् एकत्वं च संस्कृतेनैव सुरक्षितुं शक्यन्ते। भारतीय धर्म इव संस्कृत भाषा एवं भारतीयानां अमूल्यनिधिः 'उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्' सकलं भारतम् स्वयमेव एकसूत्रे अखंडतायाः सूत्रे च निबध्येत्। संस्कृतं विना एकताया, अखंडतायाः पाठः निरर्थकः एव प्रतीयते।

काश्मीरतः कन्याकुमारी पर्यन्तं अस्यां भाषायाम् एकरूपता अस्ति। अस्याः भाषायाः परिवर्तनं कदापि न भवति। एषा भाषाशुद्धिं करोति संस्कारं च जनयति।

राष्ट्रस्या परमोन्नतस्थानास्य प्राप्यर्थम् साधनं भवति संस्कृतम्। यदा यदा राष्ट्रस्य पुनरुद्धरणप्रक्रिया आसीत्। तदा तदा यस्य कस्यापि संस्कृतज्ञस्य दायः तत्र लीनः स्यात् यथा चन्द्रगुप्तकाले चाणाक्य। राष्ट्रं स्वसंस्कृतिद्वारा, संस्कृतिः स्वभाषाद्वारा एवं जीवति। इत्यतः राष्ट्रोज्जीवनाय संस्कृतोज्जीवनं प्रथमं प्रधानं सोपानम्। पूर्वं भारतं जगद्गुरुः आसीत्। तथा समग्र-पृथ्वीतः जनाः अत्र आगत्य शिक्षणं प्राप्त स्वचरित्रं निर्मितवन्तः आसन्। तद्यथा मनोः वचने 'एतद्देशप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवः'' इति। नलन्दा-तक्षशिलादयाः विश्वविद्यालयाः तेषाम् अध्ययनकेन्द्राणि आसन् यत्र संस्कृतेन एवं सर्वविषयान् पाठ्यन्ति स्म। तदेव जगद्गुरूभारतम् अद्य जगद्भिक्षुकः जातः।

संस्कृतभाषाया: शब्दा: मूलरुपेण सर्वासु भारतीयभाषासु लभ्यन्ते। सर्वत्र भारते भाषाणामेकताया: रक्षणमपि केवलं संस्कृतेनैव क्रियमाणाम् अस्ति। अस्यां भाषायां न केवलं भारतस्य अपि तु निखिल स्यापि जगत: मानवानां कृते हितसाधका: जीवनोपयोगिन: सिद्धान्ता: प्रतिष्ठापिता: सन्ति। इयमेव सा भाषा यत्र ध्वने: लिपेश्च सर्वत्रैकरूपता वर्तते। मलयालम्, तेलुगु, कन्नड़ इति इमा: दाक्षिणात्यभाषा: संस्कृतेन भृशं प्रभाविता:।

सेण्ट् जेयिंस् विद्यालये प्राथमिककक्षात: निर्बन्धविषयत्वेन संस्कृतं पठनीयम् इति श्रुत्वा एकदा कश्चित् कार्यकर्ता विद्यालयाधिकारिणं पृष्टवान् ''किमर्थम् अत्र संस्कृतं पाठयति ?'' इति। तदा स: उक्तवान् - ''मनुष्यमस्तिष्कस्य विकासाय संस्कृतभाषा बहूपयोगिनी इति शास्त्रज्ञानां निर्देशानुसारम् एष: प्रयोग:'' इति। तस्य परिणतफलं किम् इति जिज्ञासायां सत्यां स: पुन: उक्तवान् - ''भव्यद्भुत मय: अस्ति अस्य परिणाम:। अधुना छात्राणां स्मरणशक्तिरपि बहुवर्धिता दृश्यते'' इत्यादि। ''अभयं वै ब्रह्म'', तत्त्वमसि'', ''अमृतस्य पुत्रा:'' इत्यादय: उपनिषद्प्रयोगा: मन: शक्तिवर्धनाय कियता प्रमाणेन उपकुर्वन्तीति वक्तव्यं नास्ति खलु। संस्कृतगद्य-पद्यादीनाम् उच्चारण्द्वारा प्राणायामत: प्राप्तमानं फलमेव प्राप्तुं शम्नुम:। तेन अरोगयता लभ्यते खलु?

एषा भाषा कठिना इति। सर्वस्या: अपि भाषाया: मुखद्वयम् अस्ति। सरलं-प्रौढं चेति। किन्तु अद्य लोके प्रौढा इत्येतस्य शब्दस्य स्थाने कठिना इत्येतस्य पदस्य प्रयोगं कुर्वन्ति। तत् न समीचीनम्। लोके कापि भाषा कठिना न। एकमीटर क्षीरं एकलीटर शटिका इत्यादि व्यवहार: इव आयोग्य: अस्ति कठिना भाषा इति प्रयोगश्च। अत: सरलभाषा प्रौढभाषा इत्यादय: प्रयोगा: व्यावहारिकदृष्ट्या साधव:। सर्वस्या: अपि भाषया: भाषितमुखं सरलं साहित्यमुखं प्रौढं च भवत:। भाषितभाषाया: सारल्यं नित्य-प्रयोगात् एवं लभ्येत। अभ्यासाभावात् अपरं प्रौढं च शोभते। अत एव संस्कृतविषये विद्यमान: कठिनम् इत्याक्षेप: निरर्थक: दुरुदेशपरश्चेति अवगतं किल? तथापित जनमानसत: एतां कठिनमितिभावनां दूरीकर्तुं सरलसंस्कृतप्रयोग: अनिवार्य: साहित्ये व्यवहारे च। तदर्थमति संस्कृताध्ययनं प्रसक्तं भवति।

प्राय: जना: चिन्तयन्ति संस्कृतम् वर्गविशेषस्य कर्मकाण्डस्य च एव भाषा अस्ति किन्तु एषा धारणा समीचिनास्ति। यत् प्राचीनकाले भारतवर्षे संस्कृतभाषा साधारणजनानां भाषा आसीदिति।

विना वेदं, विना गीताम् विना रामायणी कथा।
कालिदासं विना लोके कीदृशी भारतीयता।।

संस्कृतेव हि भारतम्। यदि वयं प्राचीन भारतमर्वाचीनं वापि भारतं ज्ञातुमिच्छाम: तह नास्ति संस्कृतसमोऽन्य उपाय:। भारतीयजनस्य अद्यापि यत् चिन्तनं तस्य मूलं प्राचीनसंस्कृतवाड्मये दृश्यते। यदि च तत् चिन्तनं वयं नूतनविज्ञानाभिमुखं कर्तुमिच्छाम: तर्हि तस्य मूलं पृष्ठभूमि च अविज्ञाय विच्छिन्नरूपेण कुर्तम् न शवनुम:। यदि वयमिच्छामो यत् भारतीयजन: परिवर्तनम् आत्मसात् कुर्यात् तदा तेन परिवर्तनेन आत्मरूपेण संस्कृतिमयेन संस्कृतमयेन च भाव्यम्।

संस्कृतं सर्वा:-भारतीयभाषा: सर्वं जनमानसं च एकसूत्रेण संयोजयति। प्राचीनभारतीयेतिहासस्य भूगोलस्य च समीचीनं चित्रं संस्कृताध्ययनं विना असंभवम्। अत: ज्ञानिन: वदन्ति ''भाषासु मधुरा मुख्या दिव्या गीर्वाणभारती'' इति।

भारतराष्ट्रस्य अस्मिता रक्षणीया चेत् संस्कृताध्ययनम् अवश्यमावश्यकम्।

सत्यकाम सिंह तोमर
(संस्कृत शिक्षक)

जीना इसी का नाम है

कठिन है यह ज़िंदगी,
जीना भी एक कला है,
ज़िंदगी की इस कशमकश में,
हर बार कोई न कोई जला है।

बचपन की दोस्ती दूरियों में बदल जाती है,
अँधेरा क्या छाता है,
अपनी परछाईयाँ दगा दे जाती हैं।

मतलबियों से भरी है ये दुनिया,
इस मतलब को समझ लेना,
करोड़ों की भीड़ में....
तू तो बस एक छोटा-सा खिलौना है।

टूटने पर टूटना नहीं,
छूटने पर छूटना नहीं,
मिल जाएँगे अपने लाखों यहाँ,
बस मन में विश्वास खोना नहीं।

मेरे मित्र....आँखे खुली रखना,
बाहें फैलाए रखना,
छलकनी चाहिए खुशी चेहरे से,
यही तो ज़िंदगी का काम है।

आखिर जीना इसी का नाम है।

प्रशांत अग्रवाल
कक्षा-10 (शिवाजी सदन)

सीढ़ियाँ.....

किसी कारण वश अपनी उदासी के आँसू छिपाने के लिए मैं सीढ़ियों से ऊपर भागा। किन्तु जब मैं खुश था तब उन्हीं सीढ़ियों से अपने खुशी बताने के लिए नीचे भागा। आते-जाते मुझे यह ज्ञात हुआ कि जीवन भी एक साँप-सीढ़ी की तरह है। सीढ़ियाँ जहाँ एक ओर ऊपर ले जाती हैं वही साँप के कारण जीवन में नीचे भी आना पड़ता है।

ऊपर-नीचे, नीचे-ऊपर बढ़ती हैं सीढ़ियाँ,
छोटी हैं तो ठीक हैं ये,
लंबी हों तो दर्द दे जाती हैं सीढ़ियाँ।

कुछ तो इतनी लंबी कि, खत्म हो जाती हैं पीढ़ियाँ,
साँपों से बचाकर, ऊपर उठाती हैं ये सीढ़ियाँ,
साँपों के कारण नीचे आये, जैसे पड़ गई हैं बेड़ियाँ।

आज तो खत्म होती जा रही हैं सीढ़ियाँ,
पता नहीं आगे क्या करेंगी आने वाली पीढ़ियाँ,
लिफ्ट में खड़े-खड़े कमजोर पड़ गई हैं एड़ियाँ।

वक्त ने चाहा तो फिर आएँगी सीढ़ियाँ,
एक बार फिर से टूट जाएँगी ये सब बेड़ियाँ।

शौर्य मंध्यान
कक्षा-10 (जीवाजी)

चुनाव

काम न पूछें नेता का, कमी दूसरों की गिनवाएंगे।
ईमान न पूछो नेता का, सपने सबको दिखलाएँगे।
धर्म न पूछो नेता का, मंदिर और गुरूद्वारे में जाएँगे,
कुर्सी पर ईमान टिका है, ये सब नेता हर्षाए।
देख बेबसी जनता की, मन ही में मुस्काए,
किसको वोटर वोट दे, किस पर करें विश्वास।
एक नागनाथ है तो, दूजे में साँपनाथ का वास,
विष भरा है दोनों में, दोनों ही विषधारी हैं।
राजतिलक पर आँख लगी है, किसकी होगी अब तैयारी,
मैं मूक खड़ा अब देख रहा हूँ, उनकी फिर से आ गई बारी।
सोचा राम राज्य स्थापित होगा, यहाँ फिर से है मारा-मारी।।

गोपाल चतुर्वेदी
(जर्मन अध्यापक)

मुझे मेरे बचपन में रहने दो...

याद है मुझे वह किलकारियाँ,
आँखों से निकलती थी पानी की पिचकारियाँ,
यही मजा फिर से करने दो,
मुझे मेरे बचपन में रहने दो।

माँ को तंग कर बचपन गुजारा,
माँ जैसा दूसरा न मिलेगा कोई,
माँ की गोद में फिर से सोने दो,
मुझे मेरे बचपन में रहने दो।

पिता की गोद में खेला-कूदा,
पिता की पीठ पर झूला-झूला,
वही मनमानी फिर से करने दो,
मुझे मेरे बचपन में रहने दो।

याद तो बहुत आएगा वह बचपन,
कहाँ चला गया मेरा वह बचपन,
पढ़ाई का बोझ थोड़ा कम कर दो,
वही मस्ती मुझे फिर से करने दो।

यही मजा फिर से करने दो,
मुझे मेरे बचपन में रहने दो।

कुशल अग्रवाल
कक्षा-8

हमारा सिंधिया विद्यालय है।

हमारा सिंधिया विद्यालय है,
पढ़ाई का अच्छा आलय है।
पढ़ते यहां हम सब बच्चे,
मन के हैं हम सब सच्चे।
अंग्रेजी यहाँ सिखाई जाती है,
हिंदी भी पढ़ाई जाती है।
भूगोल, गणित, समझाई जाती है,
कला, यहाँ सिखलाई जाती है।
खेल खिलाते यहाँ अनेक,
बच्चे चुन सकते हैं कोई एक।
हॉकी मेरा प्रिय खेल,
भाग-भाग बन जाती है रेल।
खेलकर जब थक जाता हूँ,
'प्रैप' से तब घबराता हूँ।
पढ़ते-पढ़ते सो जाता हूँ।
फिर मैम से डाँट खाता हूँ।
जब सोने का समय आता है,
मस्ती करने लग जाता हूँ।
जब फिर से डाँट खाता हूँ,
फिर चुपचाप सो जाता हूँ।
शिक्षक सभी अच्छे हैं,
बच्चे मन के सच्चे हैं।
मेरा स्कूल शिक्षा का आलय है,
यह हमारा विद्यालय है।

हार्दिक गुप्ता
कक्षा-7

हाथी राजा

छोटे हाथी को लगतीं, छोटी-छोटी वर्षा की बूँदें,
पानी में भीगता पर खड़ा रहता, अपनी दोनों आँखें मूंदे।

धीरे-धीरे गिरता जब,
हाथी राजा के सिर पर वर्षा का पानी।
इस पर गजराज को होती,
कभी-कभी बहुत ही ज्यादा परेशानी।

वर्षा के पानी में खूब भींगना,
उसको लगता कभी अच्छा।
और वह भीगते-भीगते गाने लगता,
कोई गाना अच्छा।

जब भी हाथी गाने लगता कोई गीत पुराना,
हम सब बच्चे चिल्लाते उस पर,
फिर तुम गा रहे वही बेकार-सा गाना।

बिलकुल बेकार-सी है, किसी काम की नहीं है,
बेचारे हाथी की आवाज़।
गाने और बजाने का तो उसको,
जरा भी नहीं है अंदाज़।

हम सब बच्चे जाते दौड़कर उसकी ओर,
सब जोर-जोर से कहते।
इतना बेकार गाते हो तुम तो,
हमारे घर के सामने से दूर गाओ कहीं और।

नाराज होकर छोटा-सा हाथी,
आया मेरी मम्मी के पास।
मम्मी व्यस्त थी खाना बनाने में,
इसलिए वह नहीं आया उनके पास।

फिर हम सब बच्चों ने कहा,
हाथी राजा नाराज मत होना।
जैसा भी तुम्हारा दिल चाहे,
वैसा ही गाओ चाहे किसी को पसंद आये या न आये।

तनिश
कक्षा-7

राजनीति के अंगूर

चुनाव का समय था। मैंने एक बात पर गौर किया कि यूँ तो नेता हम लोगों में से ही होते हैं, लेकिन चुनाव के समय वे अपना रंग बदल लेते हैं। दो-तीन लच्छेदार भाषण देकर फिर पाँच साल तक हम पर ही राज करते हैं। यही सोचते-सोचते मेरे मन में कुछ पंक्तियाँ आ गई और मैंने लिख डाला उन्हें कागज पर-

ये खेल है केवल बेईमानों का,
दम निकल जाता है बड़े-बड़े इंसानों का,
वादे करते ये हमसे बड़े-बड़े,
साफ होगा शहर, होगा साफ हर नाला,
पद पर पहुँचते ही कर लेते हैं अपना मुहँ काला।

पूरी जान ये झोंक देते है शब्दों के वार में,
नहीं मिलेगा ऐसा खेल पूरे संसार में,
पद पर पहुँचने के लिए लगाते हैं
इंकलाब-जिंदाबाद के नारे।

सत्ता मिलते ही ये बदल जातें हैं सारे....
भाषण के समय इनका जोश निकल जाता है,
पता नहीं शब्दों का कोष कहाँ से निकल आता है,
नेता बनते ही न जाने, कहाँ से आता इतना पैसा है।

सत्ता की कुर्सी पाते ही, ये सब क्रूर हो जाते हैं,
भोली-भाली जनता से ये सब दूर हो जाते हैं।

शौर्य मंध्यान
कक्षा-10 (जीवाजी सदन)

सेंट जोन्स अखिल भारतीय अंतर्विद्यालयीय द्विभाषीय वाद-विवाद प्रतियोगिता २०१९

सेंट जोन्स स्कूल चंडीगढ़, में दिनाँक 27 एवं 28 सितम्बर 2019 को द्विभाषीय वाद-विवाद प्रतियोगिता आयोजित की गई। इस प्रतियोगिता में देश भर के 16 प्रतिष्ठित विद्यालयों ने हिस्सा लिया। सिंधिया विद्यालय की ओर से लव असरानी तथा स्वास्तिक अरोड़ा ने भाग लिया। प्रथम द्वितीय चक्र में विजय हासिल करने के पश्चात् हमारे विद्यालय के छात्र लव असरानी ने 10 हजार रुपए नकद पुरस्कार प्राप्त कर हिंदी वर्ग के सर्वश्रेष्ठ वक्ता का खिताब हासिल किया। लव ने इसके अतिरिक्त निर्णायकों के प्रश्नों का बेहतरीन उत्तर देकर 1 हजार रुपये का अतिरिक्त नगद पुरस्कार प्राप्त कर दर्शकों की खूब तालियाँ बटोरी।

श्री ताराचंद निबंध प्रतियोगिता २०१९

आओ सब अपनी लेखन क्षमता को दें नए आयाम ।
विचार दें कुछ इस तरह, कि स्वदेश का भी हो उत्थान ।।

जीवन के सभी क्षेत्रों में सफल विचार-विमर्श के लिए हमें श्रेष्ठ निबंध लेखन की आवश्यकता होती है। निबंध किसी भी विषय पर लिखा जा सकता है। आज सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और वैज्ञानिक विषयों पर निबंध लिखे जा रहे हैं। संसार का हर विषय, हर वस्तु, व्यक्ति एवं निबंध का केन्द्र हो सकता है। प्रतियोगिता तीन वर्गो में दिनाँक 21 जुलाई को आयोजित की गई जिसके परिणाम इस प्रकार रहे:-

वरिष्ठ वर्ग -
1. अभिषेक माहौर, कक्षा-12 - प्रथम स्थान
2. आदित्य पाराशर, कक्षा-12 - द्वितीय स्थान

मध्य वर्ग -
1. सार्थक नरवरिया, कक्षा-9 - प्रथम स्थान
2. अक्षय सुमन, कक्षा-9 - द्वितीय स्थान

कनिष्ठ वर्ग -
1. श्रेष्ठ अग्रवाल, कक्षा-6 - प्रथम स्थान
2. उत्कर्ष चौधरी, कक्षा-6 - द्वितीय स्थान

मोहिंदर मेमोरियल टर्न कोट द्विभाषीय वाद-विवाद प्रतियोगिता पाइनग्रोव स्कूल हिमाचल प्रदेश

अंतर्विद्यालय वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन 29-31 अगस्त तक किया गया। इसमें देश भर के 16 प्रतिष्ठित विद्यालयों ने भाग लिया। अंतिम चक्र में 8 विद्यालयों ने अपना स्थान बनाया। सिंधिया विद्यालय दूसरे स्थान पर रहा। इस प्रतियोगिता में आदित्य पाराशर, केशव दूधानी व उत्कर्ष गुप्ता ने भाग लेकर विद्यालय का नाम रोशन किया।

बोलते चित्र

यश सराफ, कक्षा-8 डी

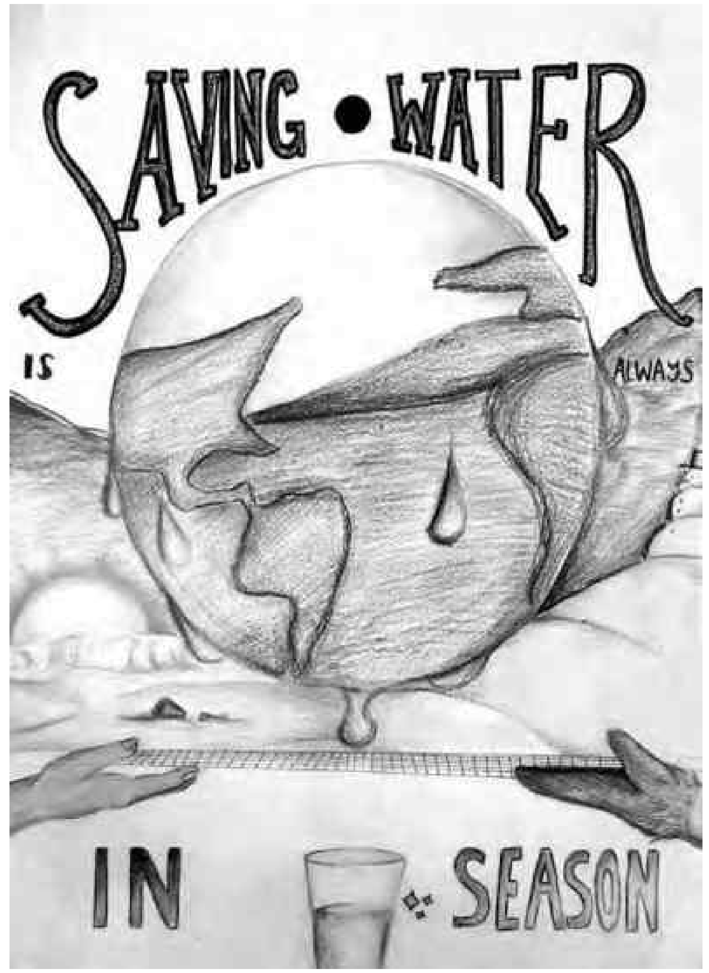

गौरव मेहरा, कक्षा-9

अर्णव जोशी, कक्षा-6

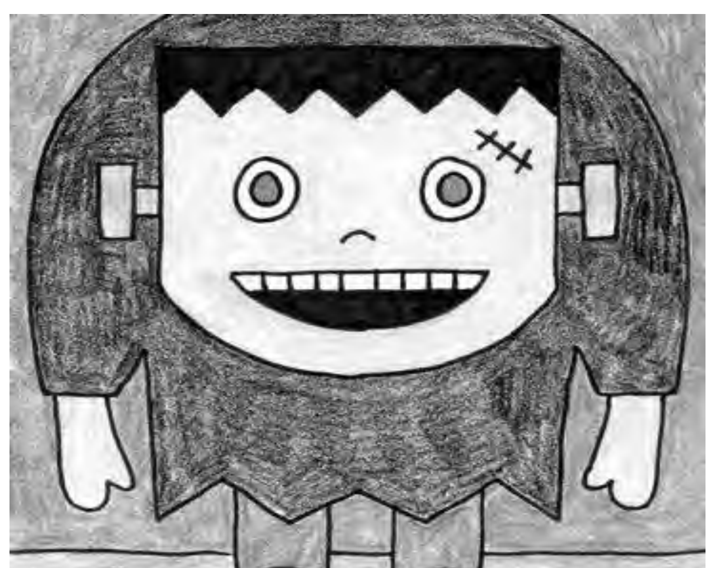

हार्दिक गुप्ता, कक्षा-7

वसुधैव कुटुंबकम

हमारे जीवन का उद्देश्य तभी पूरा होगा जब हम समाज को ही परिवार माने। 'वसुधैव कुटुंबकम' की भावना को हम जितना अधिक से अधिक महत्व देंगे उतनी ही समाज में सुख-शांति और समृद्धि फैलेगी। मानव होने के नाते एक दूसरे के काम आना ही हमारा प्रथम कर्तव्य है। हमें अपने सुख के साथ-साथ दूसरे के सुख का भी ध्यान रखना चाहिए। किसी भी समाज में यदि चंद लोग सुविधा सम्पन्न हों और शेष कष्टमय जीवन व्यतीत कर रहे हों, तो ऐसा समाज उन्नति नहीं कर सकता।

उपरोक्त धारणा को मद्देनजर रखते हुए सिंधिया स्कूल के 33 छात्रों और 3 अध्यापकों का एक दल 23 अक्टूबर को उत्तराखंड की सुदूर वादी 'रौतू की बेली' के लिए प्रस्थान किया। 24 तारीख की शाम को वहाँ पहुँचने पर क्षेत्र प्रमुख, ग्राम प्रधान सहित गाँव के कई गणमान्य लोगों ने दल का गर्मजोशी से स्वागत कर 'अतिथि देवो भव:' की धारणा को साकार कर दिया। ग्राम प्रधान श्री सरदार सिंह चौहान ने हमारे विद्यालय द्वारा किए जाने वाले पावन कार्य की भूरि-भूरि प्रशंसा की। अपने संक्षिप्त उद्बोधन में उन्होंने अपनी और अपने ग्रामवासियों की ओर से विद्यालय-प्रबंधन का हार्दिक आभार प्रकट कर भविष्य में भी इसी प्रकार के सहयोग की अपेक्षा की। अगले दिन प्रात: 9 बजे दल अपने अभियान, जिसके अंतर्गत राजकीय इन्टर कॉलेज, रौतू की बेली में एक 10 फीट ऊँची तथा 30 मीटर लंबी दीवार का निर्माण करना था, के लिए चल पड़ा। वहाँ पहुँचकर विद्यालय के प्रधानाचार्य द्वारा हमें विद्यालय की मूलभूत समस्याओं से अवगत करवाया गया। हम सब यह सुनकर हतप्रभ रह गए कि कक्ष न होने के कारण दो-दो कक्षाओं को एक ही कमरे में पढ़ाना पड़ रहा है। अभियान के अंतर्गत पहले दो दिनों में सभी छात्रों ने श्रमदान कर दो फीट गहरी और तीस मीटर लंबी नींव खोदकर एक शानदार टीम भावना का उदाहरण प्रस्तुत किया। तत्पश्चात सड़क पर पड़ी हुई निर्माण-सामग्री को कार्य-स्थल तक पहुँचाने का साहसिक कार्य किया। अभियान के बचे हुए शेष 2 दिनों में बुनियाद को भरकर जमीनी सतह तक पहुँचा दिया गया। इस प्रकार की भौगोलिक परिस्थितियों में काम कर सिंधिया स्कूल के छात्र गर्व का अनुभव कर रहें हैं। अभियान के अंतिम दिन राजकीय इन्टर कॉलेज, रौतू की बेली के छात्र-छात्राओं ने शानदार सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए। 28 अक्टूबर की शाम को हम सभी ने 'पहाड़ों की रानी' से इस उम्मीद के साथ विदा ली कि भविष्य में हम जल्दी ही इस अभियान को पूर्ण कर अपने विद्यालय के प्राचार्य डॉ. माधव देव सारस्वत के सपनों को अवश्य ही साकार करेंगे। हमें यह भी सदैव स्मरणीय रहेगा कि मनुष्य के सेवा कार्य ही उसे युगों-युगों तक जीवित बनाए रखते हैं।

जगदीश जोशी
हिन्दी अध्यापक

वार्षिक हिंदी नाटक - 'तुगलक' का मंचन

तुगलक आधुनिक भारतीय नाटक और रंगमंच के शीर्षस्थ रंगकर्मी गिरीश कार्नाड की मुस्लिम शासक मुहम्मद बिन तुगलक के जीवन पर आधारित नाट्य रचना को सम्मोहक रूप में प्रस्तुत किया है। तुगलक ने अपने सपनों को हकीकत में बदलने के लिए कई योजनाएँ बनाई और उनको सख्ती से अमल में लाने का प्रयास किया। वह एक भारतव्यापी साम्राज्य की स्थापना करना चाहता था इसलिए उसने कई साहसिक प्रयोग किए। हिंदी विभाग के बैनर तले दिनांक 20 अप्रैल 2019 को नाटक तुगलक का मंचन किया गया।

नाटक शुरू होते ही बादशाह तुगलक की छवि सामने आती है। इसके बाद हम नाटक में तुगलक को फ़ैसले लेते, अपने फैसले पर अमल के लिए जूझते, षड्यंत्रों में घिरते, उनसे लड़ते और उन फैसलों को असफल होते हुए देखते हैं। वह पाता है कि उसकी बात जनता समझ नहीं रही, उसके सारे फ़ैसलों को कोई समझने वाला नहीं है या तो उसको उखाड़ फेंकने की साजिश चल रही है या उसको अपने इशारों पर नचाने की तैयारी। इन सबके बीच वह चांदी के साथ तांबे के सिक्के चलाने, हिंदू-मुस्लिम आवाम को करीब लाने, राजधानी को अपने राज्य के केन्द्र में ले जाने इत्यादि फ़ैसले करता है। लेकिन किसी फैसले को कारगार होते हुए नहीं देख पाता। उसकी त्रासदी यह है कि उसकी ज़बान कोई नहीं समझता। दौलताबाद के किले के प्राचीर पर टहलता हुआ अपने आप को निराशा में डूबता हुआ पाता है। साजिश और अपनी सत्ता का अमल उसे क्रूर और शातिर भी बनाती है। वह अपने विरोधी इमामुद्दीन को अपने ही हक में इस्तेमाल कर उससे उसकी आवाम छीन लेता है, शहाबुद्दीन के षड्यंत्र को विफ़ल कर उसकी क्रूरतापूर्वक हत्या कर उसे शहीद भी बना देता है। सियासत में घिरा हुआ वह राज्य में चोर उचक्कों को फैलते, अपने फैसलों के दुष्परिणाम झेलते हुए इस स्तर पर पहुँचता है कि इबादत पर भी पाबंदी लगा देता है। उसकी विडम्बना है कि उसे कोई समझ नहीं पाता और वह सबको समझाना चाहता है। जनता उसे सनकी बादशाह कहती है। वह अकेला पड़ता जाता है और उसके सभी अपने उसे बारी-बारी से छोड़ कर चले जाते हैं। वह इतना न्यायपसंद है कि अपनी सौतेली माँ को भी मौत की सजा सुना देता है।

नाटक में एक से बढ़कर एक दृश्य है। सभी कलाकारों के अभिनय की जितनी भी तारीफ की जाए वह कम है। लम्बे-लम्बे संवादों के कंठस्थ याद करना आसान काम नहीं था। इसकी प्रस्तुति में बेहतरीन दृश्य वे हैं जब तुगलक शहाबुद्दीन की हत्या करता है, उस समय के संवाद और दृश्य योजना अभिभूत कर देने वाले हैं। दौलताबाद के किले की प्राचीर पर टहलते हुए तुग़लक जब सैनिक से बात करते हुए उसे समझा पाने में विफल रहता है तब अजीज यह कहता है कि खुलेआम लूटो और कहो कि हुकूमत है। धीरे-धीरे अकेला पड़ता हुआ तुग़लक नींद के आगोश में समाने लगता है और दिल्ली लौटने का फैसला करता है। तुग़लक नाटक की प्रस्तुति के लिए सभी कलाकारों ने रात-दिन कड़ी मेहनत की। श्री गणपत स्वरूप पाठक द्वारा निर्देशित इस नाटक की सभी दर्शकों ने भूरि-भूरि प्रशंसा की और नाटक का भरपूर आनंद उठाया।

नाटक के सभी कलाकारों ने दर्शकों की खूब तालियाँ बटोरी। तुग़लक की भूमिका में आर्यन रघुवंशी ने अपने बेहतरीन अभिनय के द्वारा सभी को सोचने पर मजबूर कर दिया। इस नाटक की सफलता के लिए नाट्य निर्देशक श्री गणपत स्वरूप पाठक ने सभी कलाकारों को कड़ा प्रशिक्षण दिया। नाटक के संरक्षक श्री मनोज मिश्रा ने ध्वनि व्यवस्था, वस्त्र सज्जा, मंच सामग्री तथा मंच की बारीकियों के बारे में भी प्रतिभागियों को प्रशिक्षित किया। उन्होंने समझाया कि नाटक की विषय वस्तु के आधार पर ही मंच का विभाजन किया जाता है। मंच पर नाटक प्रस्तुत करते समय विशेष तौर पर मंच के अग्रभाग, मध्य भाग को समान रूप से बाँटना चाहिए, ताकि मंच व्यवस्था बेहतर दिख सके। अंत में विद्यालय के प्राचार्य डॉ. माधव देव सारस्वत ने नाटक की खूब प्रशंसा की और सभी कलाकारों को बधाई दी। उन्होंने अपने संक्षिप्त उद्बोधन में कहा कि हर बच्चे में खूबियाँ होती हैं जरूरत होती है उन्हें पहचानने की, उन्हें निखारने की। अगर विद्यालय में शिक्षा के साथ-साथ बच्चे की प्रतिभा की पहचान कर उसमें निखार लाया जाए तो वे बड़े होकर देश के निर्माण का हिस्सा बन सकते हैं। इस प्रकार के नाटकों के आयोजन से प्रतिभागियों की नाट्य कला में अवश्य निखार आएगा।

उज्ज्वल वर्मा
कक्षा-10 (जयाजी सदन)

मैत्री मैच में से फिर छात्र रहे विजयी....

जैसा कि हम सभी जानते हैं कि खेलकूद मनुष्य के जीवन का एक अभिन्न अंग है। खेल-कूद से हमारे मन का तनाव दूर होता है और इससे मन और शरीर को शांति मिलती है।

कभी-कभी यही खेल-कूद जीवन के मुश्किल समय में शरीर को शक्ति देता है। खेल-कूद शरीर में रक्त संरचण को सही रखता है। इसके साथ-साथ खेलों में भी भविष्य बनाया जा सकता है, ऐसे अनेक उदाहरण हैं कि जो पढ़ने से जी चुराते थे आज सफलता की बुलंदियों पर हैं। सचिन तेंदुलकर को किसी परिचय की आवश्यकता नहीं है। आवासीय विद्यालयों में तो खेल-कूद का महत्व और भी बढ़ जाता है क्योंकि यहाँ पर बच्चों का चौमुखी विकास होता हैं। सिंधिया स्कूल में खेल-कूद की बहुत-सी सुविधाएँ हैं, बस आवश्यकता है तो उनका उपयोग करने की।

प्रत्येक वर्ष की भाँति इस वर्ष भी छात्रों और अध्यापकों के मध्य फुटबॉल का दोस्ताना मैच 15 जुलाई को आयोजित किया गया। इस मैच को देखने के लिए जूनियर स्कूल के छात्र बहुत ही उत्सुक थे। वे अपने पसंदीदा शिक्षक को गोल मारते हुए देखना चाहते हैं लेकिन यह भी नहीं चाहते हैं कि छात्रों की टीम पराजित हो। प्रधानाचार्य महोदय ने मैच से पहले सभी खिलाड़ियों से परिचय प्राप्त किया तथा उनसे खेल भावना से खेलने की अपील की। मैच आरंभ हुआ, गर्मियों की छुट्टियों के बाद घर से गोल-मटोल होकर आए अपने साथियों से कोई विशेष संघर्ष की अपेक्षा नहीं की जा सकती और लगभग यही हाल विपक्षी टीम का भी होता है। मैदान पर अनेक बार छात्रों की टीम जब-जब हावी होती तो अचानक एक स्वर सुनाई देता ''बेटा गोल किया तो नम्बर काट लूँगा।'' इससे छात्रों का जोश और दूना हो जाता और सारा खेल का मैदान तालियों और नारों से गूंज उठता। अध्यापकों के साथ खेलना मेरे लिए सौभाग्य की बात थी हालाँकि पिछले कई वर्षों से 'गुरु गुड़ और चेला शक्कर' वाली कहावत चरितार्थ हो रही है और सम्मानित गुरुजनों को इस बार भी 3-0 से पराजय स्वीकार करनी पड़ी। अध्यापकों की टीम से चन्दन सर तथा पारस सर ने गोल करने के काफी मौके बनाये पर गोल करने में सफल नहीं हो सके। छात्रों की ओर से अनन्य ने दो गोल किये। अध्यापकों द्वारा यह कहकर अपने छात्रों का मान बढ़ाना कि ''हमारे तो दोनों हाथों में लड्डू हैं हम जीत गए तो हम जीत गए और यदि हम हार गए तो हमारे बच्चे जीत गए 'हमारे लिए किसी प्रेरक प्रसंग से कम नहीं था। सभी छात्रों ने मैच का भरपूर आनंद उठाया और अपने प्रिय गुरुजनों के खेल की खूब तारीफ की। अध्यापकों की टीम का नेतृत्व श्री मुश्ताक खान चौधरी तथा छात्रों के दल की कमान जय शर्मा के हाथों में थी। अंत में, प्राचार्य महोदय ने विजेता टीम को बधाई दी और दोनों टीमों के खिलाड़ियों द्वारा खेले गए खेल की भूरि-भूरि प्रशंसा की। इसके बाद विद्यालय के सभी छात्रों एवं अध्यापकों के लिए जलपान का आयोजन किया गया था।

जय शर्मा (फुटबॉल कप्तान)
कक्षा-12 (महादजी सदन)

विद्यालय में स्वतंत्रता दिवस का आयोजन

भारत के इतिहास में 15 अगस्त बड़ा महत्वपूर्ण दिन है। कई शताब्दियों की गुलामी के बाद इसी पुनीत दिन हमारा देश आजाद हुआ था। इस दिन भारत-भूमि से अंग्रेजों ने डेरा-तम्बू लेकर कूच कर लिया था।

प्रत्येक वर्ष यह दिन हम अपने स्कूल में बड़े उत्साह से मनाते हैं। सदा की भांति इस वर्ष भी स्वतंत्रता दिवस समारोह की भव्य तैयारियाँ की गई। हम सभी इस समारोह में उत्साहपूर्वक भाग लेने को उत्सुक थे लेकिन वर्षा होने के डर से बार-बार यह सोच रहे थे कि कैसे करेंगे, क्या करेंगे ? सभी सदन पूरे जोश व उत्साह के साथ माधव पवेलियन में मार्च-पास्त करने के लिए तैयार थे। देश-प्रेम की भावना सभी के चेहरों झलक रही थी। ठीक 8 बजे जैसे ही मुख्य अतिथि महोदय का आगमन हुआ वैसे ही इंद्र देव का भी आगमन हुआ और उन्होंने बरसना आरंभ कर दिया। हम टस से मस नहीं हुए। मुख्य अतिथि महोदय ने भी बारिश में ही ध्वज फहराया। राष्ट्रगान की धुन मूसलाधार बारिश के साथ-साथ बजती रही। तिरंगा ऐसे लहरा रहा था मानो इंद्र देव स्वयं इस ध्वज को फहराने के लिए विशेष रूप से आए हों। देश-भक्ति का ऐसा जज्बा मैंने पहले कभी नहीं देखा था। परेड का निरीक्षण करने के बाद मुख्य अतिथि महोदय ने संक्षिप्त में अपने विचार प्रकट कर स्वतंत्रता दिवस के महत्व और देश के प्रति हमारे कर्तव्य पर प्रकाश डाला तथा छात्रों की भूरि-भूरि प्रशंसा की। प्राचार्य डॉ. सारस्वत भी विद्यार्थियों के अनुशासन और जज्बे को देखकर गद्गद् हो गए और उन्होंने मंच से छात्रों की तारीफ करने में कोई कसर नहीं छोड़ी। समारोह समाप्त होते ही इंद्र देव इन्द्रलोक के लिए चले गए और हम सब अस्ताचल के लिए कूच कर गए। बारिश अब एकदम थम चुकी थी। स्वाधीनता-दिवस के अवसर पर आज विशेष अस्ताचल का आयोजन किया गया था। मंत्रोच्चारण और भजनों ने माहौल में शमाँ बाँध दिया। अंत में, प्राधानाचार्य महोदय ने मुख्य अतिथि को स्मृति-चिन्ह भेंट किया। इसी के साथ हमारा स्वतंत्रता-दिवस का यह यादगार समारोह संपन्न हो गया। इसके साथ ही हम सभी ने अपने-अपने छात्रावास के लिए प्रस्थान किया। इस प्रकार हमने अपने स्कूल में बड़े उत्साह से स्वतंत्रता-दिवस मनाया। यह दिन हमें सदैव उन शहीदों और आजादी के दीवानों की याद दिला देता है, जिनके बलिदानों से हमने स्वतंत्रता पाई। हमें उन सभी देशभक्तों की पूजा करनी चाहिए, जिन्होंने देश की आजादी के लिए अपना जीवन बलिदान कर दिया। यह पर्व मुझे जीवन भर याद रहेगा।

लव असरानी
कक्षा-12 (दौलत सदन)

मुख्य अतिथि की पुस्तक का विमोचन करते प्राचार्य

सा विद्या या विमुक्तये
Estd. 1897

nfl f/k;kLdy

द दुर्ग, ग्वालियर–474008, म.प्र., इंडिया
दूरभाष : 91-751-2480750
फैक्स : 91-751-2480650
ई–मेल : office@scindia.edu
वेवसाइट : www.scindia.edu